भारत के लोक गाथा गीत

भाग 2

उर्मिला वार्ष्णेय



फाल्गुन 1913 (फरवरी 1992)

मूल्य : 30.00 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पीयर, बम्बई-400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- एल एल.ए. आडीटोरियम, 736, अन्नासलै, मद्रास-600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
- 10-बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226019
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004

के० एस० प्रिंटर्स, एस-31, ब्रह्मपुरी, दिल्ली-110053 द्वारा मुद्रित।

प्रकाशकीय

मानव समाज में आदिकाल से ही लोक गीत प्रचलित हैं और अपनी व्यापकता और सार्थकता के आधार पर ये लोक जोवन में इतनो गहरी पैठ गई हैं कि ये जन-मानस का संस्कार बन चुकी हैं। ऐसे नैसर्गिक साहित्य में न किसी को शिल्प की चिंता रहती है और न ही किसी विशेष आचार्यत्व की। इसमें समाज और संस्कृति की आत्मा निहित रहती है।

लोक गीत अब से कुछ समय तक श्रुति-परम्परा में आती थीं और बच्चे अक्सर दादी-नानी के माध्यम से इन्हें सुनने के लिए मचलते रहे हैं। किंतु सामाजिक जोवन की बढ़ती व्यस्तताओं के कारण ये सम्पर्क और संवाद निरंतर शिथिल पड़ते जा रहे हैं। परिणाम यह हुआ है कि लोक गोतों का प्रवाह भी अवरुद्ध हो चला है। इन परिस्थितियों में इन गीतों को संग्रहीत और प्रकाशित करने की आवश्यकता और प्रासंगिकता अनुभव की गई।

लोक गीत चाहे अंचल की रचना हो अथवा किसी आदिवासी बाला की अंगड़ाई में उभरता स्वर, सभी का अपना व्यक्तित्व है और अपना-अपना रूप।

श्रीमती उर्मिला वार्ष्णेय ने विभिन्न अंचलों में गाए जाने वाले इन गीतों का संकलन किया है जिसे हम दो खंडों में प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित इस कृति का यह दूसरा भाग हिन्दी पाठकों को लोक गाथा गीतों का और अधिक परिचय देगी।

डा. श्याम सिंह शशि
निदेशक

अनुक्रम

रक्त से डूबे भाले ऐसे लगते हैं मानो नाग फुफकार रहे हों। पगड़ियां रक्त के नाल में कमल के फूल की भांति तैर रही हैं। ढालें कछुए की तरह डूब-उतरा रही हैं। और कटारें मछली-जैसी लग रही हैं। सारी धरती मुंडों मे पट गई है। मिट्टी भी रंग कर लाल हो गई है।

शिव डमरू बजाते हुए अपना तांडव नृत्य कर रहे हैं। देवता शिव-शिव का जाप कर रहे हैं। शेषनाग पंखे की भांति थर-थर कांप रहा है। इन्द्र अपने विमान पर सवार आकाश में चक्कर लगा रहे हैं। यदि कोई शूर समर में खेत रहता है तो वह उसे विमान पर चढ़ा कर सीधे अपने लोक ले जाते हैं। कायर गिरता है तो उसे यम के दूत पकड़ कर ले जाते हैं।)

इस घमासान युद्ध में आल्हा, ऊदल, इंदल और ब्रह्मा को छोड़ महोबा के पक्ष के सभी प्रमुख वीर मारे गए—लाखन, सैयद ताला, देवा, जागन आदि। पृथ्वीराज के भी अनेक शूर पुत्र और सरदार खेत रहे। बेला के गौने की समस्या फिर भी वैसी-की-वैसी थी। अंतिम हार-जीत का निर्णय हुए बिना कोई पक्ष अपने हठ को छोड़ने के लिए तैयार न था। बेला का डोला महोबा वालों के शिविर में तैयार खड़ा था।

इसी समय माहिल पृथ्वीराज के पास जा पहुंचा। यह सारी आग उसी की भड़काई हुई थी। उसने पृथ्वीराज को नई पट्टी पढ़ाई। उसके अनुसार ताहिर को नारी वेश धारण करा कर और डोले में बैठाकर ब्रह्मा के डेरे पर भेजा गया। ब्रह्मा इस चाल को समझ न पाया। अपनी साली से भेंट करने के लिए जैसे ही उसने डोले के अंदर गर्दन घुसाई, ताहिर ने तलवार से एक वार से ही उसकी गर्दन उड़ा दी। ब्रह्मा के डेरे में तत्काल हाहाकार मच गया। इधर ऊदल, इंदल आदि ने ताहिर को घेर लिया और वह भी जीवित बचकर न लौट सका।

इंदल ब्रह्मा का शीश लेकर बेला के पास पहुंचा। उसे देखकर वह स्तब्ध रह गई। उसके मुंह से शाप निकल गया कि महोबा का केवल नाम ही रह जाए और बनाफरों की जाति का नाश हो जाए।

बेला ने इंदल से पति का शव ला देने का अनुनय किया जिससे वह उसके साथ सती हो सके। इंदल ने ऐसा ही किया। शव बेला के डोले में रख दिया गया और डोले को महोबा की ओर रवाना कर दिया गया। इंदल उसके साथ-साथ था।

कुछ गाथाओं के अनुसार बेला महोबा पहुंच कर सती हुई। किन्तु मुरादाबाद जिले के सम्भल नामक कस्बे में आज भी एक छतरी बनी हुई है, जहां बेला के सती होने की बात

कही जाती है। सम्भल के बाजार में एक ऊंची दीवार पर चक्की का एक पाट भी टंगा हुआ है जिसके बारे में लोक-विश्वास है कि मलखान ने अपने हाथ से फेंक कर वहां टांगा था। सम्भव है, महोबा के मित्र राज्यों की सीमा सम्भल तक रही हो और बेला ने वही स्थान सती होने के लिए उपयुक्त समझा हो।

पृथ्वीराज ने ताहिर के वध का समाचार पाकर बनाफरों पर एक बार फिर आक्रमण किया। उससे लड़ता हुआ ऊदल भी मारा गया। आल्हा ने पृथ्वीराज का सामना किया किन्तु दोनों योद्धाओं में से कोई भी एक-दूसरे को निर्णायक रूप से पराजित न कर सका। अंत में आल्हा मैदान से पीछे हट गया।

परमार ने जब अपने वीरों के संहार का समाचार सुना तो उसके हृदय को भारी आघात लगा और वह भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। आल्हा और इंदल विरक्त होकर कजली वन को चल दिए। महोबावासियों का विश्वास है कि वे अमर हैं और उनके कष्टों को दूर करने के लिए किसी दिन अवश्य लौटेंगे।

आल्हा अम्मर है दुनिया में
इनको कोई मरइया नांह।

चन्द्रावली

[एक समय था जब ब्रजभाषा हमारे देश की प्रमुख सम्पर्क भाषा थी। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और असम से गुजरात-कच्छ तक ब्रजभाषा बोलने वाले मिल जाते थे। ब्रज-भाषा को यह स्वरूप प्रदान करने में परिव्राजक साधुओं और तीर्थयात्रियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। देश का कदाचित ही कोई भाग ऐसा हो जिसने 'ब्रजभाषा' अथवा 'ब्रजबोलि' में काव्य रचना में अपना कुछ-न-कुछ योगदान न किया हो। किन्तु जब हम ब्रज के क्षेत्र की बात कहते हैं तो इसका आशय प्राय: दिल्ली के दक्षिण से इटावा तक और अलीगढ़ से धौलपुर-ग्वालियर तक के क्षेत्र से लिया जाता है।

कहना न होगा कि इस सार्वदेशिकता का प्रभाव ब्रज के लोक साहित्य पर भी पड़ा। जहां अन्य प्रदेशों का लोक साहित्य वर्णनात्मक अधिक है वहां ब्रज के लोक साहित्य में भावना की प्रचुरता के दर्शन होते हैं। इस प्रकार वह अलौकिक होते हुए भी अखिल भारतीय रूप ग्रहण कर लेता है। माधुर्य में भी ब्रज का लोक साहित्य, विशेषकर उसके लोक गीत कम नहीं हैं। कहते हैं, एक बार फारसी का एक अत्यंत प्रसिद्ध कवि, सम्भवत: फिरदौसी, अपने काव्य का सिक्का जमाने के लिए दिल्ली आ रहा था। मार्ग में मथुरा जनपद के किसी गांव में उसने एक नवयौवना को अपनी मां से कहते सुना—'माई री, सांकुरी गलिन में कांकुरी चुभत है'। वह वहीं से लौट गया। जिस देश की महिलाओं की बोली में इतना काव्य-रस है, उस देश के कवियों की रचनाओं में तो न जाने कितना माधुर्य होगा, उसने सोचा। ब्रज के झूला गीत, स्त्रियों के गीत, रसिया, लावनी, होली-गीत सभी में श्रोता को बरबस मोह लेने की सामर्थ्य है, ब्रज में सावन में गाए जाने वाले गीतों में 'पनिहारिन', 'नटवा', 'चंदना', 'बिजैरानी', 'मोरा', आदि प्रबंध गीत हैं। 'चन्द्रावली' भी इसी श्रेणी का प्रबंध गीत है। चन्द्रावली मध्यकाल की ऐसी वीर नारी है जो शत्रु के पंजे में फंस जाने पर अपने सत पर आंच आने देने की अपेक्षा आत्म-बलिदान का वरण करती है।]

बाबुल को लाड़ली, मां को राजदुलारी, भाई की हमजोली चन्द्रावली अपने गौने के बाद पहली बार ससुराल में थी। सास ने अपनी नई बहू की बलैयां ली। ससुर-जेठ ने इसे घर में लक्ष्मी का प्रवेश माना। पति ने अपने भाग्य सराहे। चारों ओर चन्द्रावली के रूप-गुणों की चर्चा फैल गई।

फिर सावन आया। गौने के बाद का पहला सावन। आकाश में मेघ घिर-घिर कर आने लगे। रिमझिम-रिमझिम वर्षा की फुहारें पड़ने लगीं। ऐसे में चन्द्रावली को मायके की याद आ गई—वे भाई-बहनों के साथ बिताए बचपन के प्यार भरे दिन, वह अमराई में सखियों के साथ झूलना। उसने आकाश की ओर आकुल दृष्टि से देखा। एक अकेली

चिड़िया उड़ती हुई उसके मायके की दिशा में जा रही थी। चन्द्रावली के मुंह से अनायास ही निकल पड़ा :

सरग उड़ती चिरहुली
लागी सामन मांस
हमरे बाबुल सों नौं कहो
अपनी बेटी ऐ लेइ बुलवाइ
लागी सामन मांस

(हे आकाश में उड़ती चिड़िया, तू मेरे बाबुल के पास जाकर मेरा यह संदेश दे देना कि सावन मास शुरू हो गया है, वह अपनी बेटी को बुलवा लें।)

चिड़िया जाकर चन्द्रावली के पिता के ऊंचो घर की मुंडेर पर जा बैठी और अपनी बोली सुना कर कुछ देर में ही उड़ गई। उसे तत्काल अपनी बेटी की याद आई। बेटी भी तो पिता के घर की चिड़िया ही होती है जिसे एक-न-एक दिन अपनी ससुराल की ओर उड़ जाना होता है। पिता ने अपनी पत्नी से अपने मन की व्यथा व्यक्त की। फिर उन्होंने अपने पुत्र को बहन को लिवा लाने के लिए भेज दिया।

ले डुलिया बीरन चले
लागी सामन मास
जाइ पहुंचे जीजा दरबार
भैजो जीजाजी बहैन कों जी
भैया कूं रांधूगी सैंमई जी
ऊपर बूरौ बांड
सैंयां कूं कोंधई जी
ऊपर रोटी साग
लै जाओ सारे अपनी बहैन जी

(भाई डोली लेकर बहन की ससुराल पहुंचा। वहां अपने बहनोई से बोला—जीजाजी, मेरी बहन को भेज दीजिए। पति को आनाकानी करते देख चन्द्रावली कहने लगी—आज मैं अपने भाई को सेंवइयां और उसमें ढेर-सा मीठा मिला कर खिलाऊंगी, लेकिन अपने पति को कोदो चावल और रोटी साग ही खाने को दूंगी। पति चन्द्रावली की नाराजगी को भांप गया और उसे प्रसन्न करने के लिए साले से बोला—साले जी, अपनी बहन को ले जाओ।)

भाई बहन को साथ लेकर अपने घर चला। मार्ग में एक मुगल अधिकारी ने अपना तम्बू लगाया हुआ था। जब उसे पता चला कि डोली में चन्द्रावली है तो उसने डोले को

घेर लिया। चन्द्रावली के रूप-गुण की प्रशंसा उसने सुन रखी थी। उसने चन्द्रावली को डोले से उतार कर अपने तम्बू में कैद कर लिया।

असहाय चन्द्रावली ने आकाश की ओर देखा। उसे ससुराल की दिशा में जाती हुई एक चिड़िया दिखाई दी। वह चिड़िया से कहने लगी :

सरग उड़ंती चिड़हुली
जइयो ससुर दरबार
हमरे ससुरजी से न्यो कहो
डोला लिया है घेर
लागो सामन मांस

(आकाश में उड़ती चिड़िया, तू मेरे ससुर जी के पास जाकर यह कहना कि तुम्हारी बहू का डोला मुगल ने घेर लिया है।)

ससुर हाथी और हथनियां लेकर मुगल के पास पहुंचा। कहने लगा—हे मुगल, इन्हें भट में ले लो और मेरी बहू को छोड़ दो। किन्तु मुगल ने ससुर की बात ठुकरा दी। उसने कहा :

हाथी तो मेरे बहुत हैं
हथिनीं और न छोर
ना छोडूं चन्द्रावली
जाइगी जी के साथ

(मेरे पास हाथी और हथनियों की कोई कमी नहीं है। मैं चन्द्रावली को नहीं छोडूंगा। वह मेरे प्राणों के साथ हो जाएगी।)

चन्द्रावली ने ससुर से कहा—आप घर वापस चले जाइए। मुझ पर विश्वास रखिए, मैं आपकी पगड़ी की लाज की रक्षा करूंगी। इसके बाद उसने उड़ती चिड़िया से जेठ के पास जाने को कहा :

लै घोड़ा जेठा चले
घोड़ी और न छोर
लैरे मुगल अपनी भेंट लै
लागो है सामन मांस
बहुअल तो छोड़ो चन्द्रावली जी

(जेठ अनगिनत घोड़े-घोड़ी लेकर चले। उन्होंने मुगल से कहा कि वह उन्हें भेंट में ले ले और बहू चन्द्रावली को छोड़ दे।)

मुगल ने जेठ को वही उत्तर दिया जो ससुर को दिया था। घोड़ी-घोड़ों की मेरे पास कोई कमी नहीं। मैं चन्द्रावली को नहीं छोड़ूंगा। वह तो मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारी है। चन्द्रावली ने जेठ को भी इस आश्वासन के साथ विदा किया कि वह अपने घूंघट की लाज बचाएगी।

इसके बाद चन्द्रावली ने चिड़िया को पति के पास भेजा। पति ढेर सारी मुहरें लेकर मुगल को चन्द्रावली के बदले भेंट करने के लिए लेगया। लेकिन उसने उन्हें भी स्वीकार नहीं किया। चन्द्रावली ने पति को भी वापस भेज दिया।

जाओ राजाजी घर आपने
राखूं फेरन की लाज
पानी न पीऊंगी पठान को
सेजां धरूंगी न पांव
इतनी सुनि राजा चलि दिए
लागो सामन मांस

(हे राजाजी, आप अपने घर जाइए। मैं आपके साथ लिए गए फेरों की लाज रखूंगी। विश्वास रखिए, मैं पठान के हाथों का पानी तक नहीं पीऊंगी और न उसकी सेज पर पांव रखूंगी। यह सुनकर पति अपने घर वापस चल दिया।)

चन्द्रावली अब सोचने लगी कि मुगल के शिकंजे से बचने का क्या उपाय करना चाहिए। तभी उसके दिमाग में एक विचार कौंधा। उसने मुगल से कहा—अब तो मेरे कोई मां है न कोई बाप। आप ही मेरे लिए सब कुछ हैं। मेरा कंठ प्यास से सूखा जा रहा है। कृपया आप मुझे अपने हाथ से पानी लाकर पिला दीजिए।

लै लोटा मुगल चलो
तम्बुआ दे लई आग
हाड़ जरै जैसे लाकड़ा
केस जरै जैसे घास
हाइ-हाइ मुगला कर
ठाढ़ै खाइ पछार
घेरी ही बरती नहीं
लागो सामन मांस
देखी ही चाखी नहीं
ऐसी राजदुलारी

(मुगल को और क्या चाहिए था। वह लोटा-डोर लेकर तत्काल कुए पर चल दिया। इसी बीच अवसर पाकर चन्द्रावली ने तम्बू में आग लगा ली। तम्बू के साथ-साथ वह

जलने लगी। उसकी हड्डियां ऐसे जल रही थीं जैसे लकड़ियां जलती हैं। उसके केश ऐसे जल रहे थे, जैसे घास जलती है। उसे जलता देख मुगल हाय-हाय करता पछाड़ खाकर गिर पड़ा, हाय मेरी राजदुलारी चन्द्रावली, मैंने तुम्हारा डोला ही घेरा था, भोग नहीं पाया। तुम्हारे रूप के दर्शन ही कर सका, पान नहीं।)

चन्द्रावली के जलने का समाचार जब उसकी ससुराल में पहुंचा तो वहां हाहाकार मच गया। ससुर, जेठ, पति सभी दहाड़ें मार-मार कर रोने लगे।

इतनी सुनि ससुरा रो दिए
मेरी राजदुलारी
बहू भली चन्द्रावली
राखी पगड़ी की लाज
इतनी सुनि जेठाजी रो दिए
मेरी राज दुलारी
बहू भली चन्द्रावली
राखी घूंघट की लाज
इतनी सुनि राजा रो दिए
राखी फेरन की लाज
रानी भली चन्द्रावली
खानों न खायो पठान को
सेजों पर रख्यो न पांव
लागो सामन मांस

(ससुर रोने लगा—मेरी राजदुलारी बहू चन्द्रावली ने मेरी पगड़ी की लाज रख ली। जेठ रोने लगे—मेरी राजदुलारी बहू चन्द्रावली ने घूंघट की लाज रख ली। पति रोने लगा—मेरी रानी चन्द्रावली ने भांवरों की लाज रख ली। उसने मुगल के घर का खाना न खाया और न उसकी सेज पर पांव रखा।)

इस लोक काव्य में चन्द्रावली के अपहर्ता के लिए कहीं पठान शब्द आया है, कहीं मुगल। चन्द्रावली ने आत्म-बलिदान देकर अपने सतीत्व की रक्षा की और इस प्रकार तत्कालीन नारी के सर्वोत्कृष्ट आदर्श का उदाहरण प्रस्तुत किया।

किस्सा राव किशनगोपाल

[हरियाणा राज्य में बोली जाने वाली हरियाणी या हरियाणवी को 'सधुक्कड़ी' बोली का नाम भी दिया गया था। यह उल्लेखनीय है कि हमारे देश की राजभाषा हिन्दी का आदिरूप हरियाणा, उससे लगे उत्तर प्रदेश के जिलों तथा दिल्ली में बोली जाने वाली बोलियों में ही खोजा जा सकता है।

हरियाणा का लोक संगीत और लोकगाथाएं उसके रागों, सांगों (स्वांगों) और किस्सों में सुरक्षित हैं जिन्हें या तो घुमक्कड जोगी और भाट गांव-गांव में घूम-घूमकर गाते हैं अथवा सांगिए लोकमंच पर प्रस्तुत करते हैं। हरियाणा ही एकमात्र ऐसा राज्य है जिसके अनेक गांवों का नाम विभिन्न रागों के नाम पर है यथा सारंगपुर, बिलावल, टोडी, असावेरी, जयश्री, मालकोस, हिंडोल, भैरवी, गोपकल्याण, जयजयवंती, मालती आदि।

यहां की लोक कथाओं को गाकर सुनाने में गायक प्रायः इकतारा या दोतारा जैसे वाद्यों को काम में लाते हैं। भाटों का प्रमुख वाद्य सारंगी है। स्वांग में सारंगी के साथ-साथ हारमोनियम और चिमटे का भी उपयोग किया जाता है।

किस्सा राव किशनगोपाल वीररसपूर्ण एक आधुनिक कथा है जिसका सम्बंध भारत के प्रथम स्वाधीनता संघर्ष से है, जिसे 1857 की सैनिक क्रान्ति भी कहा जाता है। इस क्रान्ति की चिंगारी मेरठ में भड़की थी और दिल्ली से गुजरती हुई वह शीघ्र सम्पूर्ण हरियाणा प्रदेश में फैल गई। रिवाड़ी के राव तुलाराम और उनके भाई राव किशनगोपाल तथा राव रामलाल इस क्रान्ति के प्रमुख अगुवाओं में से थे। उनकी वीरता की गाथा जोगी (गायक) अहीरवाल क्षेत्र के गांवों में घूम-घूम कर आज भी गाते हैं। किस्से का प्रारम्भ सरस्वती और गुरु की वंदना से होता है।]

सुर बिन मिलै न सुरसुती, गुरू बिन मिलै न ज्ञान
जल बिन हंसा उड़ चलै, अन बिन तजै पिरान
सुर तो देगी सुरसुती, गुरू तो देंगे ज्ञान
जल तो देगा इन्द जी, मन देगा भगवान

सन् 1857 के अप्रैल मास के अंतिम दिन थे अथवा मई के प्रारम्भिक दिन। भारत के तत्कालीन अंग्रेज शासकों ने उत्तर भारत के रजवाड़ों की एक बैठक मेरठ में बुलाई थी। इस बैठक में बाईस राजा नवाबों ने या उनके प्रतिनिधियों ने भाग लिया। रिवाड़ी से वहां के शासक राव तुलाराम के भाई राव किशनगोपाल उक्त बैठक में भाग लेने पहुंचे थे। बहत्तर वरिष्ठ अंग्रेज सेनाधिकारी भी उसमें मौजूद थे।

सुमरू साहब आपण हर माया तेरी
मेरठ के दरबार में भरपूर कचैरी
बाइस रजवाड़ा के राजदंड जुड़ बेठा केहरी
मुल्की जंगलाट नै बिच टोपी गैरी

(सुमरू साहब के निमंत्रण पर मेरठ में एक बड़ा दरबार लगा हुआ था जिसमें बाईस रजवाड़ों के राजा सिंह के समान विराजमान थे। इन देशी राजाओं के साथ विदेशी टोप-धारी अंग्रेज अधिकारी भी थे।)

यह दरबार एक विशेष उद्देश्य से बुलाया गया था। अंग्रेजी शासकों ने कुछ दिन पूर्व ही भारतीय सैनिकों में नए प्रकार के कारतूस वितरित किए थे। बंदूक में भरने से पूर्व सैनिकों को उन्हें दांतों से काटना होता था। इन कारतूसों के बारे में यह धारणा व्याप्त हो गई थी कि उनमें गाय और सूअर की चर्बी लगी है तथा अंग्रेजों ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को उनके धर्म से भ्रष्ट करने के लिए उन्हें जारी किया है। फलस्वरूप देशी सैनिकों में भारी असंतोष था। अंग्रेज सरकार इस असंतोष को ही दबाना चाहती थी।

अंग्रेज अधिकारी ने दरबार में खड़े होकर कहना प्रारम्भ किया :

सुणियो हिन्दू मुसलमान एक अर्जी मेरी
मालिक तै उतस्या एक दीन क्यूं दोय बगेरी
हिन्दू गंगा न्हावै करै दान है अकल अंधेरी
मुसलमान मक्का चलै मालिक का बैरी
धम दो दीना का करों कए में एकरंग फेरी
हिन्दू तोड़ों गऊ का कारतूस है अरज मेरी
मुस्ल तोड़ों सूर का कारतूस बिच टोपी मेरी

(हे हिन्दुओं और मुसलमानों, आप मेरी बात सुनें। ईश्वर ने तो एक ही धर्म की रचना की है, फिर आप इस प्रकार उसमें द्विविधता क्यों बरतते हो ? हिन्दू गंगा-स्नान कर दान करते हैं, इसमें समझदारी की कोई बात नहीं है। मुसलमान हज करने के लिए मक्का जाते हैं। यह उचित नहीं है क्योंकि खुदा तो हर जगह व्याप्त है। मैं दोनों धर्मों को एक ही रंग में रंग देना चाहता हूं। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों इस कारतूस को काटने में हिचकिचाएं नहीं।)

अंग्रेज अधिकारी के ऐसे वचन सुन कर दरबार में मौन छा गया। सभी मन-ही-मन सोच रहे थे कि यह अंग्रेज अधिकारियों की हमारा धर्म भ्रष्ट करने के लिए चाल है। अंत में हांसी का नवाब साहस कर खड़ा हुआ और कहने लगा :

तू सुणिये हिन्द के बादशाह अंग्रेज इलाई
आके हिन्दुस्थान में बदी बुरी उठाई

तेरा सिर काट्टे दल जोड़ के कोई भूप सिपाही
सुणकै जिब अंगरेज के अगनी लग जाई
ये गदबद् गदबद् करै दो सूल लाई
मियां पकल्लिया जल्लाद ने कोई बोल्ला नाई

(हे हिन्द के बादशाह अंग्रेज इलाहो सुनो। इस देश में आकर तूने बड़े-बड़े कुकर्म किए हैं। अच्छा हो, कोई राजा अपनी सेना लेकर तेरा सिर धड़ से उड़ा दे।

यह सुन कर अंग्रेज अधिकारी के तन बदन में आग लग गई। क्रोध से लाल होकर वह बोला—यह बहुत बकवास कर रहा है, इसे अभी फांसी दे दो। जल्लाद ने तत्काल नवाब को पकड़ लिया। उस समय वहां बैठा कोई व्यक्ति नहीं बोला।)

लेकिन राव किशनगोपाल से नहीं रहा गया। उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों की निन्दा करनी आरम्भ कर दी :

बोला किसनगोपाल राव कर दोनों जोड़
सुणिये हिन्द के बादशाह अंगरेज अमोड
तू जाता रहा जमीन तैं आया तेरा ओड़
बिना गुनाह सरदार नै दी सूली तोड़

(राव किशनगोपाल दोनों हाथ जोड़ कर बोले—हे हिन्द के निरंकुश अंग्रेज शासक सुनो, तुम्हारा अंत समीप आ पहुंचा है और तुम शीघ्र मिट्टी में मिलने वाले हो। तुमने निरपराध नवाब को फांसी की सजा दी है।)

राव किशनगोपाल की बात सुन कर अंग्रेज अधिकारी आग-बबूला हो उठा। चीख कर बोला—यह कौन बकवास कर रहा है, इसे भी फांसी दे दो। राव किशनगोपाल को तैश आ गया। रोष में भर कर कहने लगे :

कहता किसनगोपाल राव चर गल्ल सुनाई
सुणिये हिन्द के बादशाह अंगरेज इलाई
ते आकै हिन्दुस्तान बदी बुरी उठाई
घंटा तोड़ी नखलऊ नवाबी ढाई
भरतखंड पर भरत मार कर दिया रिआई
कल दिल्ली का पकड़्या बादसह जहां बेराबेरा नाई
आज तेरा झंडा फरकै दीन पै बड़ा सुथरा स्याई
चमड़ा भर जमीं लाई भी कलकत्तामांई
चमड़ा भर जमी लैके लिया किला रचाई
ना कोए मिलै तेरा दीन में रामदुहाई

(राव किशनगोपाल बोले—हे हिन्द के शासक अंग्रेज इलाही सुन—तूने हिन्दुस्तान में आकर बड़े-बड़े कुकर्म किए हैं। लखनऊ की नवाबी को समाप्त किया, दिल्ली के बादशाह

को पकड़ लिया। प्रजा को तरह-तरह के कष्ट दिए। आज तेरा झंडा हर ओर फहरा रहा है लेकिन कल ही तूने कलकत्ता में जरा-सी जमीन लेकर किला बना लिया था। मैं राम की सौगंध खाकर कहता हूं कि तुम्हारे धर्म का कोई भी व्यक्ति नजर नहीं आएगा।)

बात बढ़ती देख और वातावरण में गर्मी आती देख सैयद काले खां ने बीच-बचाव किया। उसने अंग्रेज अधिकारी को समझाया कि राव किशनगोपाल को दुर्बल समझना ठीक नहीं है। साथ ही उसने आठ दिन की मुहलत मांगी, जिससे भारतीय रजवाड़े मिल कर नए कारतूसों के उपयोग के बारे में कोई निर्णय ले सकें।

कालेखां सैयद खड़ा रहा अकल लड़ाई
सुणिये हिन्द के बादशाह अंगरेज इलाई
या बेट्टा जीवाराम का है बोदा नाहीं
थे का रेवाड़ी राज है बैठक ठुकराई
कहिए भतीजा तुलाराम रेवाड़ी मांही
अलोर दिल्ली नारनौल हीरवाल बताई
छत एक बसै सै पुलक एक कुछ बोदा नाहीं
हमने आठ दिनां छुट्टी मिले जावां घर ताईं
हम दिनां आठ में आ मिलां मेरठ के माहीं
प्यारी एक विल्लायत बस वायदा दिल्ली के माहीं,
हम मुखतै तोड़ां कारतूस दयां दीन बधांई।

(सैयद कालेखां ने अपनी बुद्धि लड़ाई। खड़ा होकर वह कहने लगा—हे हिन्द के बादशाह अंग्रेज इलाही, यह जीवराम का बेटा दुर्बल नहीं है। इसका सम्बंध रिवाड़ी राज से है। इसका प्रभाव अलवर, दिल्ली, नारनौर और अहीरवाल तक है। यह सारा क्षेत्र एक है, इसे दुर्बल नहीं समझना चाहिए। इसलिए आप हमें घर जाने के लिए आठ दिन का अवकाश दे दीजिए। इस अवधि के बाद हम मेरठ में फिर आ मिलेंगे। हमें आपसे प्रेम है, इसलिए हम आपका साथ नहीं छोड़ेंगे। हम दिल्ली में मिल कर यह निश्चय करना चाहते हैं कि कारतूस को मुंह से तोंड़ने की बात स्वीकार कर लें और अपने धर्म को तिलांजलि दे दें।)

सैयद काले खां ने यह बात केवल समय प्राप्त करने के लिए कही थी। लेकिन अंग्रेज अफसर भी स्थिति की गम्भीरता को भांप गए थे। अतः उन्होने आठ दिन का अवकाश देने की बात मान ली। इस बीच भारतीय सरदारों ने दिल्ली में अपना दरबार किया और अपने संगठन की एक योजना बनाई :

राव ने ठाय नमक की कांकरी लोटा में डारी
जै मैं थमने पीठ दयूं बीच किशन मुरारी

समद खां उट्ठा पठान दिदारी
हाथ धरा कुरान पै बिच मक्का डारी
रावजी जै मैं थमनै दगा छूं दोजग निजधारी
जंगबहादुर भाजरी बनगें करारी
एक हुआ हिन्दू मुसलमान को मेरठ दरबारी

(राव किशन गोपाल ने नमक की एक डली उठा कर लोटे में डाली और कहा कि कृष्ण मुरारी को शपथ है जो मैं आपके साथ विश्वासघात करूं। दारी के नवाब समद खां ने कुरान पर हाथ रख कर और मक्का को बीच में डाल कर शपथ खाई। उसने कहा कि रावजी यदि मैं आपके साथ विश्वासघात करूं तो मुझे नरक की प्राप्ति हो। झज्जर के नवाब जंगबहादुर ने भी साथ देने की शपथ खाई। इस प्रकार मेरठ के दरबार में एकत्र हुए हिन्दू और मुसलमान सरदार आपस में संगठित हो गए।)

योजना के अनुसार सभी सरदार निश्चित समय पर सदल-बल मेरठ में जा जुड़े और वहीं से उन्होंने क्रांति का श्रीगणेश कर दिया। जो अंग्रेज अधिकारी सामने पड़ा उसी को तलवार के घाट उतारने लगे। उस समय वहां बहत्तर अंग्रेज अधिकारी उपस्थित थे। उनमें त्राहि-त्राहि मच गई और हाथ जोड़ते हुए वे क्रांतिकारियों से अपने प्राणों की भीख मांगने लगे।

हाथ जोड़ वटकन कहै जवाब करारा
तू रेवाड़ी का रावजी धन म्हारा प्यारा
रावजी इबकै हेलै बक्स दे जीव हमारा
हम ना तुड़वावैं कारतूस कहण हमारा
चौथाई दिल्ली करो राज बण भाई म्हारा

(बड़ा अंग्रेज अधिकारी वाटकिन्स बोला कि हे रिवाड़ो के रावजी किशनगोपाल, आप तो हमें बहुत प्रिय है। इस बार किसी प्रकार हमारी जान बख्श दीजिए। हम वचन देते हैं कि आपसे इन कारतूसों को नहीं तुड़वाएंगें। बदले में हम आपको दिल्ली का एक चौथाई राज्य दे देंगे, वहां हमारे भाई बनकर राज करें।)

उन बी किशनगोपाल नै सूत्यां दुधारा
मारे झट कर लाट कै धड़ तै सिर न्यारा
बाजण लगी मिसरी तरवार कटारा
उल्टा हट-हट कहै साहब सांग्यौ का पारा
रंग-बिरंग थरी-थरी करकों की बाड़ा
जिनका धड़ परतै सिरनू पड़े झड़ पड़ै अनारा
कोठी मारा साहब लोग इकत्तर सारा

(राव किशनगोपाल तो अंग्रेजों की धोखा देने की नीति से भलीभांति परिचित थे। वह इस प्रकार के अनुनय विनय से कहां पिघलने वाले थे। अपनी मिसरी तलवार म्यान से निकाल कर उन्होंने दरबार में उपस्थित अंग्रेजों का कत्ले-आम प्रारम्भ कर दिया। सिर कट-कटकर भूमि पर गिरने लगे और रक्त के फव्वारों से सारी भूमि लाल हो गई। इस प्रकार कुल इकहत्तर अंग्रेज मारे गए।)
इस कत्लेआम से केवल एक काना अंग्रेज, टिमले ही बच पाया। वह गंगा की नहर के साथ जंगलों में छिप कर भाग निकला।

मेरठ में मारकाट मचा कर राव किशनगोपाल दिल्ली आए। उनके साथ-साथ क्रांति की लहर भी दिल्ली आ पहुंची। यहां शहजादा आजम के साथ भेंट कर और फिर झज्झर के नवाब से मिलते हुए वह रिवाड़ी पहुंचे। राव तुलाराम ने भी उनका साथ दिया और अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई की जोर-शोर से तैयारी होने लगी। सबसे पहला मोर्चा नसीबपुर में जमा। यहां राव किशनगोपाल की टक्कर भगोड़े जनरल टिमले से ही हुई। इस लड़ाई में अंग्रेजों को बुरी तरह मुंह की खानी पड़ी।

कहता किसनगोपाल राव धर गल्ल सुनाई
चालो ढोसी न्हाण नैं सौ भौती आई
ये ढोसी काल्हाण सैं कतल लड़ाई
जहंने प्यारा घर लगै घर अपणै जाई
जहंने प्यारा किशनगोपाल राव लो तेग उठाई
मरदां खांतर जंग बण्या न लड़ै लुगाई
खप जाओगे रणखेत में है इचरज नाहीं
करो चढ़ाई जंग जन्न बार-बार जनेमी नाहीं

(राव किशनगोपाल ने अपने सिपाहियों का साहस बढ़ाने के लिए उन्हें ललकारते हुए कहा—भाइयों, इस काने के साथ हमें घोर युद्ध करना है। जिसे घर प्यारा लगता हो, वह अब भी अपने घर लौट जाए। जिसे मुझसे प्यार है, वह मेरे साथ तलवार उठा कर मैदान में आए। लड़ाई लड़ना मर्दों का काम है, महिलाएं लड़ाई नहीं लड़ती। यदि रणभूमि में मारे गए तब भी चिन्ता की कोई बात नहीं है। आगे बढ़ो, जननी बार-बार यह जन्म नहीं देगी।)

स्वयं राव किशनगोपाल ने इस युद्ध में अद्भुत शौर्य का परिचय दिया। अपनी साढ़े सात सेर की मिसरी हाथ में लेकर वह कर्नल के सामने जा डटे, जो उस समय हाथी पर सवार था।

हौदा पै करनैल न धर सम्मुख पाई
सीट टट नीचे पड़्या धड़ हौदा माहीं
हाथी छूट्या चिघाड़ कै दल पाट्टै न्यारा
उन बी किसनगोपाल नै दिए ये बाग इसारा
हाथी के सोई घोड़ा दे दिया दे कै किलकारी
इब कित जाग्गा लानत का मारा
साढ़े सात सेर की मिसरी भोंकया दुधारा
हाथी के गैरे सूंड पै सूंड तड़ पै न्यारा
जैसे बोटा स्याल का कारीगर पाड़्या
हाथी खड़्या चिघाड़ै दल में न चल्लै चारा
दूजी गेरे साहब लोग पै धड़तै सिर न्यारा

(राव किशनगोपाल ने हौदा पर सवार कर्नल पर अपनी दुधारी तलवार मिसरो से भरपूर वार किया। कर्नल का सिर कट कर नीचे भूमि पर गिर गया जबकि धड़ वहीं हौदे में ही रह गया। इस हमले से घबरा कर हाथी चिंघाड़ कर भाग छूटा और अपनी ही सेना को कुचलने लगा। इस अवसर पर राव किशनगोपाल ने घोड़े की लगाम खींच कर उसे इशारा दिया। वह हाथी के आगे बिलवार कर जा खड़ा हुआ। राव किशनगोपाल ने मिसरी के एक वार से ही हाथी की सूंड को काट कर उसके तन से अलग कर दिया जैसे कोई बढ़ई आरी से लकड़ी के तख्ते को चीर कर अलग कर देता है। हाथी विवश हो पीड़ा से चिंघाड़ने लगा। इसी बीच राव ने दूसरे गोरों का सिर धड़ से अलग कर दिया।)

क्रांतिकारियों के शौर्य के सम्मुख अंग्रेज सेना के पांव उखड़ गए। टिमले स्वयं भाग खड़ा हुआ और नसीबपुर के एक जौहर में जा छिपा। राव किशनगोपाल ने वहां भी उसका पीछा नहीं छोड़ा।

टोपी साहब लोग की देगई दिखाइ
राव नै गैल ही घोड़ा दे दिया नसीबपुर ताईं
काणा मड़्या जंगलै चल्या भाग कुल लादी स्याई
बिण मार्‌या छोड़ूं नहीं मन्ने रामदुहाई।

(भागते हुए अंग्रेजों की टोपियां दिखाई दे गई। राव किशनगोपाल ने उनके पीछे नसीबपुर के मार्ग पर अपना घोड़ा डाल दिया। काना टिमले अपने कुल के मुख पर स्याही पोत कर जंगल में छिपने का प्रयास कर रहा था। सब ने भो राम की सौगंध खाई कि मैं उसे बिना मारे छोडूंगा नहीं।)

टिमले ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसे अपनी मौत आती दिखाई दी। वह वहीं जोहड़ में बचने के लिए कूद पड़ा।

साहब उल फिर के देखता हूंणी चल आई
घर के ठेका मारता जोहड़ कै माहीं
राव ने गैल ही घोड़ा दे दिया जोहड़ के माहीं
साहब गोता खाके देखता दिया सीस उड़ाई

(टिमले ने मुड़ कर देखा कि होनी चली आ रही है। वह दौड़ कर जोहड़ में कूद पड़ा। राव ने भी अपने घोड़े को जोहड़ में उतार दिया। टिमले ने गोता खाकर जैसे ही सिर पानी से बाहर निकाला, राव ने उसे तलवार से उड़ा दिया।)

इस प्रकार किशनगोपाल ने मेरठ दरबार के अंतिम बचे हुए अंग्रेज अधिकारी को भी ठिकाने लगा दिया। लगभग छह महीने तक राव अंग्रेजों का अपने क्षेत्र में धूल चटाते रहे और उनकी एक न चलने दो। बाद में अंग्रेज एक बड़ी सेना के साथ पंजाब की ओर से हरियाणा की ओर बढ़े। नारनौल में बल्लभगढ़ के राजा नाहरसिंह, झज्झर में नवाब एमद खां, मेवात के राव शमशाद खां और राव किशनगोपाल ने सम्मिलित रूप से उनसे मोर्चा लिया। भाग्य इस बार क्रांतिकारियों के प्रतिकूल था और भारी पराक्रम दिखाने के बावजूद पराजय ही उनके हाथ लगी। राव किशनगोपाल अंग्रेजों के हाथों पड़ गए और एक शहीद की मौत मरे। राव तुलाराम अंग्रेजों के जाल से निकल भागे और उनकी दृष्टि से बचते हुए ईरान जा पहुंचे। वहीं उनकी मृत्यु हुई।

इस प्रकार विदेशी दासता से मुक्ति के लिए देश के वीर सपूतों का एक साहसिक प्रयास निष्फल हो गया।

तेजाजी

[राजस्थानी में लोकगाथाओं का अत्यंत समृद्ध भंडार है। इन गाथाओं में भी वीर-गाथाओं का विशेष महत्व है। इनका नायक कोई ऐतिहासिक व्यक्ति होता है, किन्तु घटनाओं के लिए ऐतिहासिक होना आवश्यक नहीं है। इन घटनाओं के सहारे काल निर्णय कर पाना भी सम्भव नहीं होता। लोकगाथा में व्यक्ति और घटना महत्वपूर्ण होते हैं, समय नहीं। अत: अन्य प्रदेशों की वीरगाथाओं की तुलना में राजस्थानी वीरगाथाओं का अन्त प्राय: दुखद होता है।

इस प्रदेश की कुछ प्रमुख वीरगाथाओं में बगड़ावत, पाबूजी, गोगाजी, डूंगजी-जवारजी, तेजाजी, गलरलेंग आदि की गणना की जा सकती है। प्रस्तुत गाथा 'तेजाजी' में एक ऐसे वीर की कथा है जिसने गौरक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने में जरा भी संकोच नहीं किया। चोरों द्वारा अपहृत गूजरों की गायों को वापस लाने के लिए वह अकेला ही उनसे टक्कर लेने के लिए चल दिया। इस संघर्ष में उसके शरीर का कोई अंग अक्षत नहीं रहा। अन्त में उसने नाग से अपनी जीभ पर दंश लगवा कर अपना वचन पूरा किया।

तेजाजी की गाथा प्राय: वर्षा ऋतु में गाई जाती है। वाद्य यंत्रों में अलगोजा, ढोलक, थाली, हारमोनियम और सारंगी से काम लिया जाता है।

इस गाथा की एक विशेषता यह है कि यह राजस्थानी के प्राय: सभी रूपों में मिलती है। राजस्थान एक विशाल प्रदेश है और उसके विभिन्न अंचलों में विभिन्न बोलियों का बोला जाना असामान्य नहीं है। प्रस्तुत गाथा उसके हाड़ौती रूप से ली गई है। यह बोली कोटा-बूंदी अंचल में बोली जाती है।]

पैंली तो गढ़-कल्ला का गणेश मनाऊं
जीके पाछै देवी सारदा
कांई तो मानता करैंगो गणेस्यो
कांई करैंगी देवी सारदा
रद-सद करैंगा गणेसदेव लाल म्हारा
भूल्या नै संभलावैंगी देवी सारदा
कठै तो बसै छै गणेस देवता
कठै तो देवी सारदा
बागां में बसे छै गणेस देवता
परबत में देवी सारदा

कांई तो चढ़ै छै गणेस देवता
कांई चढ़ै छै देवी सारदा
लाडू चढ़ै छै गणेस देवता
और पान-पतासा, देवी सारदा।

(पहले केलागढ़ के गणेश को मनाऊं, उसके बाद देवी शारदा को।

—हे माता, गणेश क्या करेंगे और देवी शारदा क्या कर पाएंगी ?

—मेरे लाल, गणेश सब कामों को ठीक करेंगे और देवी शारदा भूलों को सुधारेंगी।

—गणेश देवता और देवी शारदा कहां बसती हैं ?

—गणेश देवता बागों में बसते हैं और देवी शारदा पर्वतों पर रहती हैं।

—गणेश देवता और देवी शारदा पर क्या चढ़ावा चढ़ता है ?

—गणेश देवता पर लड्डू चढ़ाए जाते हैं और देवी शारदा पर पान-बताशे।)

दिन निकलते ही जाट का लड़का तेजाजी गायों को चराने के लिए चल पड़ा। मार्ग में गायों को एक ओर खड़ा कर वह सरोवर में स्नान के लिए उतर गया। स्नान कर वह वहीं सीढ़ियों पर बैठ पूजा-पाठ के लिए चंदन घिसने लगा।

उसी समय एक गूजरी हाथ में कलश लिए तालाब पर पानी भरने को पहुंची। तेजाजी के सीढ़ियों पर बैठे होने से उसे बाधा हो रही थी, इसलिए उसने तेजाजी से सीढ़ियां छोड़ देने को कहा। तेजाजी बोला—मैं पूजा कर रहा हूं, तू दूसरी सीढ़ियों से पानी भर ले।

दोनों के बीच कुछ कहा-सुनी हुई। बातों-बातों में गूजरी ने कह दिया कि तू इतना झूठ मत बोल। मुझसे तेरा कौन-सा भेद छिपा है ? मेरा पीहर तेरा सासरा है।

तेजाजी ने उत्तर दिया—यह तू क्या कह रही है ? मैं तो अभी कुंवारा हूं।

गूजरी बोली—मेरी बात का विश्वास न हो तो जाकर अपनी मां से पूछ ले।

तेजाजी झटपट पूजा पूरी कर घर की ओर भागा। मार्ग में उसे अपना एक मित्र मिला जो नए-नए कपड़े पहन कर अपनी ससुराल जा रहा था। तेजाजी बोला—मित्र कुछ समय के लिए रुक जाओ। मैं भी तुम्हारे साथ अपनी ससुराल चलूंगा, जरा मां से पूछ आऊं।

घर लौट कर तेजाजी मुंह लटका कर बैठ गया। मां ने पूछा क्या बात है जो तेरा चेहरा इस तरह काला पड़ गया है ?

तेजाजी ने उत्तर प्रश्न किया—मां, सच-सच बता, मैं विवाहित हूं या कुंवारा ?

मां उसका यह प्रश्न सुन कर हैरान रह गई। उसने टालने का प्रयास किया, लेकिन तेजाजी के जिद करने पर बताना ही पड़ा कि उसका विवाह शैशव में ही हो गया है। जब तेजाजी ने अपनी ससुराल का पता पूछा तो मां ने उसे उसकी भाभी के पास भेज दिया।

खड़-खड़ पेड्या चढ़ ग्यो
ग्यो भाभी का महल में
सूती छै के जागै छै भौजाई म्हारी
बारै ऊबो छै थारो देवर लाडलो
न सूती, न जागूं
डाबरिया नैणा में नंदरा घुल रई ।
कांई काम पड़ंग्यो रै देवर म्हारा
अनो छै म्हारे वारणै

(खटाखट सीढ़ियां चढ़ कर वह भाभी के महल में पहुंचा और बोला—हे भाभी तुम सो रही हो या जाग रही हो ? द्वार पर तुम्हारा प्यारा देवर खड़ा है ।

भाभी ने उत्तर दिया—न सो रही हूं, ना जाग रही हूं । बड़ी बड़ी आंखों में गहरी नींद छा रही है । हे देवर, ऐसा कौन काम पड़ गया जो तुम इस समय मेरे द्वार पर आए हो ।)

तेजाजी ने कहा—इस समय मेरे हृदय में भारी उथल-पुथल मची है, तुम मुझे मेरी ससुराल का पता दो ।

भाभी ने कहा कि अपनी ससुराल तो बाद में जाना पहले बहन को उसकी ससुराल से लिवा लाओ । इस समय सभी विवाहिताएं अपने नैहर में है, केवल वही ससुराल में है ।

तेजाजी ने टालने का बहुत प्रयास किया किन्तु भाभी भी काफी चतुर थी । उसने उसकी एक न चलने दी । तेजाजी ने कहा कि बहन के घर छोटे भाई को भेज और मुझे अपनी ससुराल जाने दे । भाभी ने उत्तर दिया कि मेरा छोटा देवर तो अभी बालक है, वह सिर्फ बछड़े-बछड़ियों को चराने ले जा सकता है । तब तेजाजी ने घोड़ा-गाड़ी न होने का बहाना किया । भाभी बोली—हे देवर, नई गाड़ी बनवा ले और उसमें काकाजी के बैलों को जोत ले जा ।

कोई चारा न देख तेजाजी बढ़ई के पास गया । बढ़ई ने तालाब के किनारे से बबूल का पेड़ काट कर एक बढ़िया-सी गाड़ी बना दी । भट्माड़ के मेले से उसके लिए डेढ़ सौ रुपये में बैलों की जोड़ी खरीद कर लाई गई । दर्जी ने रेशम की झूल बनाई । ठठेरे ने बैलों का खोल तैयार किया । इस प्रकार जब गाड़ी तैयार हो गई तो तेजाजी भाभी के महल में पहुंचा और बोला :

बारै नकल आरै भाभी म्हारी
बारै ऊबो छै लड़को जाट को

घड़ीक गम खाजे रे देवरिया म्हारा
मोत्यां का थालां सूं उतारूंगी आरती

(हे भाभी बाहर निकल कर आ, बाहर मैं जाट का लड़का खड़ा हूं। भाभी बोली— हे देवर, घड़ी भर को ठहर जा, मैं मोती के थाल से तेरी आरती उतारूंगी।)

तेजाजी ने भाभी से पुन: ससुराल जाने देने के लिए अनुरोध किया। लेकिन भाभी ने उसे फिर यह कह कर रोका कि रात सोते में मुझे एक बहुत बुरा सपना दीखा है, इसलिए अभी इस वर्षा ऋतु में तू अपनी ससुराल न जा। पहले बहन को बुला ला, फिर ससुराल चले जाना।

तेजाजी ने नौकर को घोड़ी तैयार करने का आदेश दिया। उसने घोड़ी और तांगा दोनों तैयार कर दिए। फिर छोटी बंदूक और बोजलसार का भाला लेकर वह बहन की ससुराल के लिए चल दिया।

मंजल्यां लांगतो जावै छै है घोड़ी हाला,
जात्यो छै बन्यां में एकलो
घोड़ी मूंडर यूं बोली छै— घोड़ी जी हाला
गेला तीन फटै छै रे
गाबलो जावैगो पील्या खाल पै

(घोड़ी वाला मंजिलें पार करता हुआ वन में अकेला जा रहा है। एक स्थान पर रुक कर घोड़ी ने उससे कहा—आगे तीन रास्ते फूट रहे हैं, इनमें से पील्याखाल को कौन-सा रास्ता जाएगा।)

तेजाजी ने उत्तर दिया—इधर-उधर न मुड़ कर तू सीधी चली चल। वह आगे बढ़ते गए। बैलगाड़ी की धमक और बैलों के गले में घंटियों की आवाज से रास्ते में सोता हुआ मीणा जाग गया। उसने तेजाजी को रोकने का प्रयास किया लेकिन तेजाजी वापसी पर उसके पास रुकने का वचन देकर आगे बढ़ गए।

चलते-चलते तेजाजी अपनी बहन राधा की ससुराल के गांव में जा पहुंचे। वहां बावड़ी के पास उसने घोड़ी को बांध दिया। पनिहारिनों का झुंड बावड़ी से पानी भरने के लिए आ रहा था। उन्होंने तेजाजी से पूछा— हे घोड़ीवाले, तुम कहां के रहने वाले हो और यहां किसके घर आए हो। तेजाजी ने उत्तर दिया कि मैं रूपनगर का रहनेवाला हूं। मैं मदन जाट के यहां आया हूं। उससे मेरी बहन का विवाह हुआ है।

यह सुनते ही पनिहारिनों ने लाज से घूंघट निकाल लिया। तेजाजी ने उनसे मदन जाट के घर का पता पूछा। पनिहारिन के कहने पर वह उसके पीछे-पीछे चल दिया और

माणिक चौक में पहुंचा। राधा की ननद ने उसे आते देखा तो भागी-भागी अपनी भाभी के पास गई और उसे सूचना दी। राधा को सहसा विश्वास नहीं हुआ। ननद ने उसे अपनी बात सच होने की सौगंध दिलाई। राधा बोली—तेरी बात सच हुई तो मै तुझे अपने गले का हार और आरसो दे दूंगीं।

राधा दौड़ के माणिक चौक पहुंची। वहां सचमुच उसका भाई खड़ा था। वह उससे लिपट गई और शिकवा-शिकायतें करने लगी—भाई तू इतने दिनों बाद क्यों आया ? मैं तो तेरी बाट देखते हुए यहां सुसराल में मर रहो हूं।

तेजाजी बोला—घर पर खेती के काम में फंसा होने से नहीं आ सका। यहां तुझे ऐसा कौन-सा कष्ट है जो तू इतनी दुबलो हो गई है ?

राधा ने उत्तर दिया—एक दुख थोड़ं हो है। राज मन भर पीसना पड़ता है, मन भर आटे की रोटियां पोनी पड़ती हैं। सास कोसती है, ननद ताने देती है। बहनोई तुम्हारा जुआरी है, वह दिन-रात चौपड़ में मस्त रहता है।

बहन को लेकर तेजाजी जब लौटने लगा तो सबके मुंह फूले हुए थे। मार्ग में उसकी भट फिर मीणा से हुई। वह उसको प्रतोक्षा में हो बैठा था। अपने दल के साथ उसे लूटने के लिए टूट पड़ा। यह देखकर राधा रोने लगो—इतने लोगों से मेरा भाई अकेला किस प्रकार टक्कर ले सकेगा ? लेकिन तेजाजी ने उसे धीरज बंधाया और भाला [लेकर मीणा तथा उसके साथियों पर टूट पड़ा। उसने हुंकार लगाई—हे मीणा भाई, पहले तो मेरा भाला सम्हालो, फिर गाड़ी-डंगरों को हाथ लगाना। उसकी मार के आगे एक भी मीणा नहीं ठहर पाया और वे सभी भाग खड़े हुए।

राधा तो तांगा मैं बैठी छै रै घोड़ीजीहाला
मंजल्यां ही मंजल्यां चालबो—
तेजी मंजल्या मैं राई आंगणै।
घड़ो कै गम खाजै रै लाल म्हारा.
मोत्यी का थालां सूं उतारूंगी थारो आरत्यो।

(राधा फिर बैलगाड़ी में जा बैठो। मंजिल-दर-मंजिल चलते हुए वे अपने घर पहुंच गए। मां बोली—बेटा, घड़ी भर को ठहर जा, मैं मोतियों के थाल से तेरी आरती उतारूंगीं।)

मां ने मोतियों का थाल सजा कर तेजाजी की आरती उतारी। इसके बाद राधा दौड़ कर मां और भाभी से गले मिली। तेजाजी भी भाभी के पास पहुंचा और बोला—मैं बहन को ले आया हूं, अब तू मुझे मेरी सुसराल भिजवा दे।

भाभी बोली—देवरजी, मुझे अपशकुन हो रहे हैं, ससुराल मत जाओ। लेकिन तेजाजी किसी प्रकार न माना। उसने नौकर को फिर घोड़ी तैयार करने का आदेश दिया। नौकर बोला—मालिक, घोड़ी तैयार है,और वह सावन को मोरनी की तरह नाच रही है :

घोड़ी तो त्यार होगी छै रे धणी म्हारा,
घोड़ी नाचरी छै सावण की सी मोरड़ी।
पग तो पागड़े मैल्यो छै रे घोड़ीजी हाला,
घोड़ा का मीरां पै भंवर बराज र्‌यो।

तेजा जी ने अपनी छोटी बंदूक मंगाई, हाथ में भाला सम्भाला और मां, भाभी तथा बहन के बरजने और अनुनय-विनय को ठुकरा कर ससुराल के लिए रवाना हो गया। बारह बरस बाद वह ससुराल जा रहा था। मार्ग में वन में सगुन मनाता हुआ वह अकेला चलने लगा, तभी बाईं ओर कोचर पक्षी ने बोलकर अपशकुन किया। अन्य अपशकुन भी होने लगे।

आगे वन में एक जगह कंधे पर कम्बल डाले एक ग्वाला भागा-भागा उसके पास आया। तेजाजी ने उससे पूछा—बात क्या है? ग्वाले ने बताया कि हिरन की ठोकर से वन में आग लग गई है और गायों का चारा धू-धूकर जल रहा है। तेजाजी अपनी घोड़ी को मोड़ कर पीछे उसी ओर चल पड़ा। वहां उसने देखा कि आग में एक नाग जल रहा है।

तेजाजी ने पास ही कड़वे नीम की डाली तोड़ कर उससे आग को बुझा दिया और नाग देवता को जलने से बचा लिया। उसे छाती से लगा कर पेड़ की छांव में ले गया और ग्वाले से उसके लिए पत्ते का दोना बना कर उसमें दूध दुह लाने को कहा।

कुछ दूध पी चुकने के बाद नाग देवता में दम आया और वह फन उठाकर खड़ा हो गया, बोला :

थनें म्हंसूं बरी करी छै रे घोड़ीजी हाला
म्हारा जोड़ा की बलगी माला नागणी।
जलै तो फेरूं जलादूं रे बासक देवता
ऊसर सूं पटकादूं चंनण रुखड़ा
जाण्यां सूं कुण जलै छै रे घोड़ीजी हाला
अण जात्या बलगी माला नागणी
थनै म्हूं डसूंगूं रे घोड़ीजीहाला
थारी घोड़ी नै डसूंगो बांवा कान कै

(हे घोड़ी के सवार तूने मेरे साथ बहुत बुरा किया। इस आग में मेरी नागिन जल कर मर गई है। अच्छा होता, तू मुझे भी जल जाने देता। तेजा जी ने उत्तर दिया—हे नाग

देवता, यदि तेरी इच्छा जलने की ही है तो मैं तुझे फिर जला दूं। ऊपर से तेरे ऊपर चंदन का पौधा डाल दूंगा। नाग बोला—घोड़ी वाले, कोई जान-बूझ कर जलता है? मेरी नागिन तो अनजाने में जल गई। अब मैं तुझे डसे बिना नहीं छोडूंगा। तेरी घोड़ी को भी बाएं कान में डसूंगा।)

तेजाजी बोला—नाग देवता, तू मुझे इस बार तो जाने दे, मैं चांद-सूरज को साक्षी बनाकर और धरती माता को बीच में डालकर वचन देता हूं कि लौटती बार अवश्य तेरे पास आऊंगा। तब तू मुझे डस लेना। तू मुझे अपनी बांबी दिखा दे।

नाग को वचन देकर और उससे बनास नदी का रास्ता पूछ कर तेजाजी आगे चल दिया। बनास नदी में उस समय बाढ़ आई हुई थी। तब घोड़ी के कहे-अनुसार उसके धड़ को नाव बना कर और उसके चारों पैरों को पतवार बना कर डूबता-उतराता वह नदी के पार हो गया और गऊ घाट पर जा पहुंचा। फिर घोड़ी को उछालता और दौड़ाता हुआ वह गऊ घाट से बदरीनाथ पहुंचा जहां मन्दिर के पट खुलवा कर उसने भगवान के दर्शन किए। उसने वहां रुपये चढ़ाए और मन्दिर की परिक्रमा की। वहां से पवन-वेग से लौटता हुआ वह अपनी ससुराल पहुंचा।

वहां उसने नवलखा बाग में डेरा डालने का निश्चय किया। माली की लड़की से बाग का फाटक खोलने को कहा, लेकिन उसने यह कह कर टालने का प्रयास किया कि फाटक पर बड़ा ताला लटका हुआ है और उसकी कुंजी मालकिन अपने साथ ले गई है। तेजाजी और माली की लड़की के बीच नोक-झोंक हुई। तेजाजी ने कनेर की डाल तोड़कर माली की लड़की को जड़ दी। वह शिकायत लेकर बाई (मालिक की कन्या) के पास पहुंची। वही तेजाजी की पत्नी मोडल रानी थी। तेजाजी और उसकी घोड़ी के रूप का वर्णन सुन कर वह समझ गई कि आने वाला कोई दूसरा नहीं, उसका अपना पति ही है। उसने माली की लड़की को तत्काल वापस भेज दिया और कहा कि अपने जीजा का ठीक से स्वागत-सत्कार कर। माली की लड़की ने तेजाजी और उसकी घोड़ी के लिए मोतियो के गजरे गूंथे।

अगले दिन मोडल रानी कजली तीज पर झूला झूलने का बहाना कर अपनी सखी-सहेलियों को साथ ले और सोलहों शृंगार कर पति से मिलने नवलखा बाग में पहुंची। तेजाजी बावड़ी के पाट पर बैठा हुआ था। उसने घोड़ी से पूछा कि यह किसका झुंड आ रहा है? घोड़ी ने बताया कि ये जाट-कन्याएं हैं और इनमें हाथ में जो कलश लिए हुए है, वही आपकी पत्नी मोडल रानी है।

आम के पेड़ पर झूला डाल कर सहेलियां झूलने लगीं। मोडल ने कनेर की डाल तोड़ कर उससे पूछा कि बता मेरा स्वामी कौन है? विवाह के बाद मैं एक बार भी अपनो

ससुराल नहीं गई। डाल ने कहा—हे जाट-कन्या, तू झूठ मत बोल। तेरा स्वामी बावड़ी के पाट पर ही तो बैठा है।

तेजाजी का ध्यान आकर्षित करने के लिए मोडल झूला झूलते-झूलते चिल्ला उठी—अरी लड़कियो, देखो मेरी मोती की माला टूट गई है और इसके डेढ़ सौ मोती खो गए हैं। लड़कियां बोलीं...चिन्ता क्यों करती है ? बारह वर्ष बाद तेरा पति तुझे लेने आ पहुंचा है। अब नई माला बनवा लेना।

झूला झूल कर मोडल जब घर लौटने लगी तो तेजाजी भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। ससुराल में तेजाजी का स्वागत-सत्कार होने के बजाय उलटे अपमान हुआ। शक्कर की जगह नमक खाने में डाल दिया गया और घी के स्थान पर अलसी का तेल परोसा गया। तेजाजी खाना वहीं फेंककर घोड़ी पर सवार हो वापस चल दिया।

मोडल को इस घटना पर भारी पश्चाताप हुआ। वह भी पति के पीछे-पीछे भागी। उसकी सहेली गूजर की लड़की ने घोड़ी की लगाम थाम ली और मोडल रानी ने उसके पैर पकड़ लिए। लेकिन तेजाजी ने ससुराल वापस जाना स्वीकार न किया। तब गूजर कन्या उसकी खुशामद कर उसे अपने घर ले गई। वहां उसने अपने जीजा और उसकी घोड़ी का सब प्रकार से भारी स्वागत-सत्कार किया।

वह भोजन करके उठा ही था कि गूजर की लड़की भागी-भागी उसके पास पहुंची और बोली...जीजाजी, बहुत बुरा हुआ है, हमारी गायों को चोर घेर-बटोर कर ले गए हैं।

तेजाजी ने कहा कि ढोल बजवा कर लोगों को इकट्ठा कर ले। गूजर कन्या भागी-भागी ढोलची के पास पहुंची। लेकिन ढोलची ने बहाना बना दिया कि ढोल फूटा पड़ा है। गूजरी उसे गालियां देती हुई लौटी। कहने लगी—जीजाजी, हमारे गांव में तो रांडें बसती हैं। मर्दों ने कांच की चूड़ियां पहन रखी हैं।

तेजाजी ने उसे गांव के ठाकुर के पास भेजा। वहां से भी वह निराश होकर लौटी। तब तेजाजी ने अपनी घोड़ी तैयार करने को कहा। वह बोला कि वही गाय-बैलों को वापस लाने जाएगा। बंदूक और भाला सम्भाल तथा घोड़ी पर सवार होकर तेजाजी अकेला ही चोर मीणाओं के ठिकाने की ओर चल दिया। उसने मीणा से मामा-भानजे का सम्बंध जोड़ा और उनसे गूजरी की सारी गायों को घेर कर लौटा लाया, केवल एक सांड को उसके पास छोड़ आया।

उन्हें देखकर गूजरी बोली—जीजा, यह तो अच्छी बात नहीं हुई जो तू सांड को मीणाओं के पास ही छोड़ आया। उसके बिना तो ये गायें किस काम की हैं। ये तो रांड जैसी हैं। उसको वापस लाने पर ही हमारा काम चलेगा।

तेजाजी वापस मीणाओं के ठिकाने की ओर चल दिया। इस बार उसकी पत्नी मोडल भी उसके साथ चलने की हठ करने लगी लेकिन तेजाजी ने यह कह कर उसे रोक दिया कि वहां झगड़ा होने की सम्भावना है, तू जाकर क्या करेगी। वह फिर अकेला ही रवाना हुआ। उसका अनुमान सही था। मीणाओं से उसकी जमकर लड़ाई हुई। वह सांड़ को वापस तो ले आया, लेकिन उसका अंग-अंग घायल हो गया।

गूजरी ने उससे आराम करने और वैद्य बुला लाने को कहा लेकिन तेजाजी न माना और जिद करने लगा कि अब मुझे वापस जाना है। गूजरी मोडल को बुला लाई। मोडल ने भी उसकी बहुत खुशामद की। तेजाजी ने उसे नाग को दिए अपने वचनों की बात बताई और बोला—अगर मैंने अपना वचन नहीं निभाया तो इससे मेरी मां का दूध लजाएगा। तू अपने महल में लौट जा।

उलट महलां में चाली छै मोडल रानी
गी छै ऊं का महल मैं
परण्यूं सालू पैर्यो छै रै जाटां की छोरी
परण्यूं जद को पैर्यो छै अस्सी कली को घाघरो
महलों में संजोवड़ा संजोया छै जाटां की छोरी,
मीड्यां सूं मांग भरी छै रै जाटां की छोरी
मोत्यां भरली छै मांग।

(मोडल अपने महल में वापस चली गई, और वहां उसने दुलहिन का शृंगार सजाया, विवाह का दुपट्टा पहना, विवाह के दिन वाला अस्सी कली का घाघरा धारण किया और सिंदूर तथा मोती से अपनी मांग सजाई।)

मोडल ने अपने भाई से कहा कि मैं अपनी ससुराल जा रही हूं। भाई ने जाकर यह बात अपने पिता से कही। पिता भागा-भागा गूजरी के घर पहुंचा और तेजाजी से अपने घर चलने की विनय करने लगा जिससे वह उसका उपचार करा सके। तेजाजी ने कहा कि अब उपचार कराने से कोई लाभ नहीं है। मेरा काल निकट आ गया है। मेरी भाभी देवी है, उसने जो बात कही थी, वह पूरी होकर रहेगी। मैंने नाग देवता को वचन दिया है वह मुझे निभाना ही है। तू मेरे रास्ते में न आ।

मोडल भी उसके साथ चलने के लिए तैयार होकर आ गई। उसकी मां ने और तेजाजी ने उसे बहुत रोका लेकिन उसने किसी का अनुरोध न माना। निदान आगे-आगे तेजाजी और उसके पीछे-पीछे अकेली मोडल वन में चल पड़े। तेजाजी ने नाग की बांबी पर पहुंच कर उसे पुकारा। नाग बाहर निकल आया। तेजाजी को देखकर बोला—

थंन तो बरी करी छै रै घोड़ीजी हाला
भाला सूं भर लायो थारो डीलड़ो

कटै म्हूं डसूंगो रे घोड़ीजी हाला
न दीखै अछूती ठाम
जीभ तो अछूती लायो छूं रे बासक राजा
घोड़ी को लायो छूं बायों कानड़ो

(हे घोड़ी वाले, तूने यह बुरा किया जो अपने सारे शरीर को भालों के घाव से भर लाया। मैं तुझे कहां डसूं, कोई भी तो स्थान खाली नहीं है। तेजाजी ने उत्तर दिया—नागदेवता, जीभ तो मेरी अक्षत है, वहीं डस लो। घोड़ी का बायां कान भी अक्षत लेआया हूं।)

नाग बोला—तू घोड़े से नीचे उतर आ, मुझसे ऊपर चढ़ा नहीं जाएगा। घोड़ी ने तेजाजी से कहा—मालिक, तुम कहो तो मैं अपने खुर से इस नाग देवता का फन कुचल दूं, लेकिन तेजाजी ने उसे रोक दिया। घोड़ी वहां से चल कर अकेली ही तेजाजी के घर पहुंची और उसकी मां, भाभी तथा बहन को सारा हाल बताया। वे विलाप करती हुई उस स्थान पर पहुंची जहां नाग तेजाजी को डसने के लिए तैयार खड़ा था।

नाग ने तेजाजी को उसकी जीभ पर डस लिया। तेजाजी के कहने से उसकी घोड़ी ने भी नाग को अपने बाएं कान पर डस लेने दिया। वह वहीं पत्थर हो गई। मोडल ने चंदन की लकड़ियों की चिता सजाई और पति के साथ जल कर सती होने को तैयार हो गई। वह नाग को श्राप देने लगी। लेकिन नाग बोला—मुझे श्राप मत दो। यह तो कलि-युग का प्रभाव है। जो आज के दिन तेजाजी की पूजा करेगा, उस पर सांप के काटे का कोई प्रभाव नहीं होगा।

दोनों हाथ जोड़ ऊबी छै मोडल रानी
सत मांग री सरी भगवान सूं
घोड़ीजी हालो—जाटां को डावड़ो अर मोडल राणी
दोन्यां नै ल्यो छै अगनो असनान

(मोडल राणी दोनों हाथ जोड़कर खड़ी हो गई और भगवान से प्रार्थना करने लगी। घोड़ी सवार जाटपुत्र तेजाजी और मोडल रानी दोनों ने एक साथ उस चिता में अग्नि-स्नान किया।)

कुंवर बिजई (विजयमल)

[भोजपुरी की शौर्य गाथाओं में विजयमल या कुंवर बिजई की गाथा का प्रमुख स्थान है। इस लोकगाथा की विशेषता यह है कि यह विशुद्ध रूप से भोजपुरी बोली की धरोहर है यद्यपि अन्य बोलियों, जैसे मगही में भी यह गाथा पाई जाती है।

भोजपुरी क्षेत्र में इसे अधिकांशत: नेटुआ नामक बन्जारा जाति तथा तेली जाति के लोग गाते हैं। नेटुआ नट का ही बदला हुआ रूप जान पड़ता है क्योंकि नटों की भांति इस जाति के लोग भी लोकगाथाएं गाकर अथवा शारीरिक करतब दिखाकर अपनी जीविका कमाते हैं।

लोकगाथा में विजयमल या कुंवर बिजई का सम्बंध तेली जाति से बताया जाता है किन्तु उसका चरित्र-चित्रण एक क्षत्रिय राजकुमार जैसा हुआ है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में, जहां भोजपुरी बोली जाती है, तेली जाति के लोग अपनी गणना वैश्यों में करते हैं। उनके किसी राजवंश से सम्बंधित होने का ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता। अत: सम्भव है कि आल्हा अथवा अन्य किसी वीरगाथा से प्रेरित होकर इस गाथा के रचयिताओं ने अपने नायक में क्षत्रियोचित गुणों की कल्पना कर ली हो। यह भी सम्भव है कि विजयमल का सम्बंध उक्त क्षेत्र में बहुसंख्या में बसे मल्ल क्षत्रियों से रहा हो और तेली जाति के लोकगाथाकारों ने उसे अपना लिया हो। मल्ल क्षत्रियों का उल्लेख बौद्धकाल से ही मिलता है।

जैसा इस प्रकार की गाथाओं में प्राय: होता है, नायक अपनी नायिका को प्राप्त करने के लिए अद्भुत शौर्य का परिचय देता है। न केवल वह स्वयं अलौकिक कर्म करता है, वरन् इस कार्य में दिव्य शक्तियां भी उसकी सहायता करती हैं। अंत में वह एक अत्याचारी राजा या व्यवस्था के विरुद्ध शोषित वर्गों का रक्षक बन कर आगे आता है। इससे कथा में प्रणय का रूप गौण हो जाता है और शौर्य का रूप प्रधान।

इस लोक गाथा को गाते समय प्राय: प्रत्येक पंक्ति के आरम्भ में 'रामा' शब्द का प्रयोग किया जाता है और अंत में 'रे ना' का। गायक द्रुत लय से गाथा की पंक्तियों को गाता चला जाता है। भावों के अनुसार स्वरों में उतार-चढ़ाव आता रहता है किन्तु 'रामा' और 'रे ना' का क्रम वैसा ही बना रहता है।]

रोहतासगढ़ के राजा धुरमलसिंह के दो पुत्र थे—धीरानन और विजयमल। उनकी रानी का नाम मैनावती था। दोनों भाइयों की आयु में काफी अंतर था। जब रानी दूसरी बार गर्भवती हुई तो देवी दुर्गा ने उसे स्वप्न दिया :

रामा सपना देखे देवि माई दुलगुवा रे ना
बबुआ तोहरा पुतर होइ है तेजमंतवा रे ना

(तेरा पुत्र अत्यंत तेजस्वी होगा।)

अतः पुत्र-जन्म होने पर राजा के महल में और पूरे नगर में भारी उल्लास मनाया गया।

रामा महल में भइल खुसहलिया रे ना
रामा बेटा भइले राजा घुरमलसिंघवा रे ना
रामा कुंवर बिजई लिहले जनमवा रे ना
रामा गढ़वा बजेला नगरवा रे ना
रामा दुअरा पर झरे नौबतिया रे ना
रामा लाग गइले दुअरा झमेलवा रे ना
रामा मांगे लगले नेगी आपन नेगवा रे ना
रामा आइ गइले भोर पवरिया रे ना
रामा गावे लगले मंगल गीतिया रे ना
रामा देवे लगले राजा बहु धनवा रे ना
रामा अन्नधन लुटावे लगले सोनवा रे ना
रामा खुशी होइ गइले सब घरवा रे ना

(राजा घुरमलसिंह के घर कुंवर बिजई ने जन्म लिया। महल में खुशी छा गई। कोट पर नगाड़े और द्वार पर नौबत बजने लगी। नेगी आ-आकर नेग मांगने लगे। भाट और चारणों ने वहां पहुंचकर मंगल-गीत गाने शुरू कर दिए। राजा ने उन्हें बहुत सारा धन दिया, अन्न और सोना लुटाया। घर-घर में खुशियां मनाई जाने लगीं।)

लगभग उसी समय बावनगढ़ के राजा बावन सूबेदार के घर कन्या ने जन्म लिया। उसका नाम तिलकी रखा गया। बावन सूबेदार के भी एक बड़ा पुत्र था, जिसका नाम था मानिकचंद।

कन्या का जन्म होते ही बावन सूबेदार ने उसके लिए वर की खोज शुरू कर दी। उसने नाई-पुरोहितों को तिलक का सामान देकर अनेक राजाओं के पास भेजा किन्तु कहीं भी उन्हें उपयुक्त वर नहीं मिला। वे निराश होकर वापस आ गए। कुछ समय पश्चात जब बावन सूबेदार ने घुरमलसिंह के यहां पुत्र-जन्म की बात सुनी तो उसने वहां भी नाई-ब्राह्मणों को भेजा। उनके साथ उसका पुत्र मानिकचंद भी था।

प्रारम्भ में घुरमलसिंह ने तिलक के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। बावन सूबेदार की ख्याति अच्छी नहीं थी। चारों ओर उसके अत्याचारों की कहानियां फैली हुई थीं। इसलिए कोई भी राजा उसके साथ सम्बंध जोड़ना नहीं चाहता था। किन्तु पुत्र

धीरानन के काफी समझाने-बुझाने पर घुरमलसिह ने तिलक लेना स्वीकार कर लिया। फिर क्या था, भारी धूमधाम से तिलक चढ़ा। इस अवसर पर बावनगढ़ से लाखों लोग रोहतासगढ़ पहुंचे। धीरानन ने हाथ-पांव धोने के लिए उन्हें पानी की जगह तेल दिया और पीने के लिए घी।

मानिकचंद इस व्यवहार से चिढ़ गया। उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि वह इन लोगों से बावन देश में बदला अवश्य लेगा। इन्होंने उसके आदमियों को पानी के बिना प्यासा मार दिया है। बावन देश पहुंचने पर जब पिता ने कुशल-समाचार पूछा तो मानिकचंद ने रो-रोकर सारी घटना बता दी। सुनकर बावन सूबेदार भी क्रोध से आग-बबूला हो उठा।

तब वहां बैठे उसके मंत्री ने उन लोगों को सलाह दी :

रामा बोलत बाड़े मंतिरी देवनवा रे ना
रामा सुन लेहु बेटा मानिकचंद रे ना
रामा अइहें मांड़ो बरिंतिया रे ना
रामा तब दीह सबके जेहलिया रे ना
रामा कूले खूटे बनिहय बरितिया रे ना
रामा बांधल बाटे हिछल बछेड़वा रे ना

(बेटा मानिकचंद, सुनो ! जब बराती विवाह मंडप में आएं तो उनको जेल में डालकर खूंटे से बंधवा देना। उनके साथ उनके हिछल बछेड़े नामक घोड़े को बांधना भी न भूलना।)

घुरमलसिह और धीरानन यथासमय छप्पन लाख लोगों की बारात लेकर बावनगढ़ पहुंचे। उनका भारी आदर सत्कार किया गया। विवाह भी बड़े सुंदर ढंग से सम्पन्न हुआ। तब मंत्री की सलाह के अनुसार मानिकचंद ने घुरमलसिह और उनके बरातियों को मंडप में निमंत्रित किया। जैसे ही ये लोग वहां पहुंचे, हाथ पैर बंधवाकर इन्हें बावनगढ़ के किले में बंद कर दिया गया। उनके साथ गए हिछल बछेड़े की आंखों पर पट्टी बंधवा दी गई और उसके पांव कसवा दिए गए।

अब मानिकचंद ने तिलकी की सखी चल्हकी नाइन से कहा कि वह विजयमल को आग में झोंक दे। चल्हकी नाइन काफी चतुर थी। वह नहीं चाहती थी कि उसकी सखी इस प्रकार विधवा हो जाए। अत: उसने एक उपाय किया। उसने हिछल बछेड़े के अलौकिक गुणों की कहानी सुन रखी थी। वह हवा में उड़ सकता था और मनुष्यों को बोली बोल सकता था। चल्हकी ने हिछल बछेड़े को बंधन से खोलकर कुंवर बिजई को उस पर बैठा दिया और एड़ लगाकर घोड़े को उड़ा दिया। हिछल बछेड़ा आंखों पर पट्टी बंधी होने पर

भी सब कुछ देख और समझ रहा था। वह उड़ कर सीधा रोहतासगढ़ पहुंचा। वहां उसने धीरानन की पत्नी और कुंवर की भाभी सोनमती को सारी घटना बताई। सुनकर सोनमती को भारी दुख हुआ।

रामा पोसे लगली सोनवा मतिया कुंवरा के रे ना
रामा कुंवर के करेलउ सिंगरवा रे ना
रामा कुंवर भइले दोइ चार बरसिवा रे ना
रामा खेले लगले लरिकन के संगवा रे ना
रामा लरिका खेलतु गुली डंडवा रे ना
रामा कुंवर गइले लरिकन के भितरवा रे ना

(सोनमती बड़े प्रेम से कुंवर का पालन-पोषण करने लगी और उसे खूब सजा-संवार कर रखती। धीरे-धीरे कुंवर कुछ बड़ा हो गया और दूसरे लड़कों के साथ खेलने योग्य हो गया। लड़के गली में गिल्ली-डंडा खेलते थे। कुंवर उनसे मित्रता कर उनके पास पहुंचा।)

कुंवर ने उन लड़कों से कहा कि तुम मुझे भी गिल्ली डंडा खेलने दो। उनमें से एक लड़का काना और शैतान था। उसने जवाब दिया कि जब तुम अपने गिल्ली डंडा लाओगे तब हम तुम्हें अपने साथ खिलाएंगे। कुंवर ने अपनी भाभी सोनमती से कहकर लकड़ी के गिल्ली डंडा बनवा लिए। उन्हें लेकर फिर लड़कों के बीच पहुंचा। इस बार वह काना लड़का बोला—तुम राजा के बेटे हो, लकड़ी के छोटे-से गिल्ली-डंडा से खेलते अच्छे नहीं लगते। जाकर लोहे की अस्सी मन की गिल्ली और अस्सी मन का डंडा बनवाओ। तब हम तुम्हारे साथ खेलेंगे।

कुंवर महल में लौट आया। और भाभी से सारी बात कह दी। सोनमती ने उसका मन रखने को लुहार से अस्सी मन की गिल्ली और अस्सी मन का डंडा बनाने को कहा। गिल्ली-डंडा बन तो गए लेकिन उन्हें उठा कर कौन लाता? लुहार भागा-भागा महल में पहुंचा और बोला—सरकार गिल्ली-डंडा तैयार हैं, आप किसीको भेज कर उन्हें मंगवा लीजिए।

यह सुनते ही कुंवर उठ कर लुहार के साथ चल दिया।

रामा चलि गइले कुंवर डोंढा के दुअरिया रे ना
रामा एक हाथ लिहले उत गुलिया रे ना
रामा दोसर हाथ लिहले अपना डंडवा रे ना
रामा ले के गइले बारी बगइचवा रे ना
रामा उमरि रहले बारह बरिसया रे ना
रामा उहां रहले सभकेह लरिकवा रे ना
रामा तब मरि एगो चंपवा रे ना
चंपवा जावे गिरल बावनगढ़ मुलुकुवा रे ना

(कुंवर लुहार के घर के दरवाजे पर पहुंचा। वहां उसने एक हाथ में गिल्ली उठाई और दूसरे हाथ में डंडा। उन्हें लेकर वह बाग में गया। उस समय उसकी अवस्था बारह वर्ष की थी। उसके साथ सभी लड़के भी बाग में जा पहुंचे। कुंवर ने डंडे से जब गिल्ली को उछाला तो वह बावनगढ़ में जाकर गिरी।)

कुंवर का यह करतब देख वहां मौजूद सभी लड़के और दूसरे लोग दांतों तले उंगली दबाने लगे। उस काने लड़के ने फिर ताना कसा—यार, तुम इतने वीर हो तो क्यों नहीं पिता और भाई को शत्रुओं की कैद से छुड़ा लाते ?

कुंवर बिजई को अपने विवाह की और पिता-भाई की गिरफ्तारी की कुछ भी जानकारी नहीं थी। उसने जाकर अपनी भाभी से पूछा। सोनमती यह सुनकर घबरा गई। पूरे कुल में एकमात्र वही नर-बालक बावन सूबेदार के हाथों से बचा था। उसे चिन्ता हुई, यदि यह बावनगढ़ गया तो बावन सूबेदार इसे जीवित नहीं छोड़ेगा। उसने कुंवर को बावनगढ़ जाने से रोकने का बहुत प्रयास किया किन्तु कुंवर ने उसकी एक न मानी। उसने प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं अपने पिता-भाई और अन्य बरातियों को कैद से नहीं छुड़ा लूंगा और बावन सूबेदार को उसकी करनी का दंड नहीं दे लूंगा, चैन से नहीं बैठूंगा।

तब सोनमती ने देवी की पूजा कर उससे कुंवर की कुशलता के लिए मनौती मांगा :

रामा सुन लेहु देवी मोर अरजिया रे ना
रामा देबिया आज मोर हो वहु सहइया रे ना
रामा देबिया बुधवे पोतइबों तोर चढ़ावा रे ना
रामा देबिया गुलगुले गरहबों तोर हवनवा रे ना
रामा देबिया बावन जोड़ि देबि तोहि करइवा रे ना
रामा देबिया सोरह लाख खिवइबें बमनवा रे ना

(हे देवी, मेरी विनती सुनो। आज तुम्हें मेरी सहायता करनी है। यदि मेरा काम कुशल पूर्वक पूरा हो गया तो दूध-चावल से तुम्हारा भोग लगाऊंगी। पूओं से तुम्हारा हवन कराऊंगी। तुम्हें बावन जोड़े वस्त्र भेंट करूंगी। सोलह लाख ब्राह्मणों को भोजन कराऊंगी।)

कुंवर हिछल बछेड़े पर सवार होकर और भाभी को प्रणाम कर बावनगढ़ के लिए रवाना हो गया।

रामा हिछल घुरिया उड़वलस सरगवा रे ना
रामा घेरे जैसे सावन बदरवा रे ना
रामा नीचे छोड़े हिछल धरतिया रे ना
बिचे भारत बाड़े हिछल मेंड़रिया रे ना
जैसे मारतिया चिल्हइया पखेरिया रे ना
रामा डरे कांपे कुंवर बिजेमलवा रे ना

तब गारी देला हिंछल बछेड़वा रे ना
सरक डरे कंपलहु पिठि का उपरवा रे ना
तब कइसे जितबउ बावनगढ़ किलवा रे ना
बबुआ मति देख तुहू अधरिबा रे ना
रामा चलि गइले एही तरे दुनिया रे ना

(हिंछल घोड़ा आकाश में ऐसे उड़ चला जैसे सावन की घटा उमड़ती है, धरती नीचे छूटती जाती है। हिंछल ऐसे कुलाचें भर रहा है जैसे कोई चील पक्षियों पर झपट रही हो। उसकी पीठ पर सवार कुंवर उसके वेग को देख कर कांपने लगा। तब हिंछल बछेड़ा उसे गाली देता हुआ बोला कि जब तू मेरी पीठ पर बैठा कांप रहा है तो बावनगढ़ के किले को किस प्रकार जीतेगा ? हे पुत्र, तू नीचे की ओर मत देख। इस प्रकार दोनों आगे बढ़ते गए।)

जंगलों, पहाड़ों और नदियों को पार करते हुए वे बावनगढ़ देश में पहुंच गए। हिंछल बछेड़ा वहां भवरानन पोखर के किनारे जा उतरा। उस समय तिलकी अपनी सोलह सौ सखियों के साथ वहीं डेरा डाले हुए थी। उसने अपनी सखियों को आज्ञा दी कि जेल में प्यासे लोगों के लिए वे भवरानन पोखर से पानी भर लाएं। उसका आदेश पाकर सब सखियां सोलह श्रृंगार कर झूमर गाती हुई और घड़े लेकर भवरानन पोखर के पास पहुंचीं। हिंछल बछेड़े ने कनखियों से उन्हें देखा और कुंवर से बोला—हे कुंवर, उठ कर देखो ये तिलकी की सखियां यहां पानी भरने आई हुई हैं।

कुंवर ने जैसे ही उठ कर देखा, वह गश खा कर गिर पड़ा। उसके मुंह से निकला—हाय राम, जब सखियां ऐसी हैं तो राजकुमारी न जाने कैसी होगी।

इसके बाद कुंवर ने एक तीर से ही उनके सारे घड़ों को फोड़ दिया। सखियों ने तिलकी के पास जाकर इसकी शिकायत की। तिलकी ने चलहकी को भवरानन पोखर पर भेजा। उसे आते देख कुंवर योगी बन कर बैठ गया और मंत्रबल से उसने पोखर के घाटों को बांध दिया। चलहकी के अनुनय-विनय पर भी उसने कोई ध्यान नहीं दिया और मधुर वचनों से उससे इस प्रकार बोला :

रामा भउजी से कइलीं कररवा रे ना
रामा पहिले छोड़ाइब आपन भइया रे ना
तवना बाद छोड़ाइब बाप धुरमलसिंघवा रे ना
तवना बाद छोड़ाइब पलटनिया रे ना
रामा तबे करिब आपन हम गवनवा रे ना

(मैंने भाभी को वचन दिया है कि पहले मैं अपने भाई को मुक्त कराऊंगा, फिर अपने पिता घुरमलसिंह को छुड़ाऊंगा। इसके बाद पलटन को छुड़ाऊंगा, तभी अपना गौना कराऊंगा।)

कुंवर ने चल्हकी को बताया कि बावन सूबेदार उसके श्वसुर हैं। उसकी बात सुन कर चल्हकी रोने लगी और मीठे स्वर में बोली—हे पाहुन, तुम्हारे पास तो कोई सेना भी नहीं हैं, तुम बावन सूबेदार से कैसे जीतोगे? कुंवर ने उत्तर दिया—सेना नहीं है तो क्या है, हिंछल बछेड़ा जो है।

चल्हकी लौट कर तिलकी के पास पहुंची। तिलकी अपनी मां से अनुमति लेकर स्नान करने के बहाने भवरानन पोखर की ओर चल दी। उसके साथ उसकी सोलह सौ सखियां और चल्हकी नाइन भी थी।

रामा पहले लांघे तिलकी जब देवढ़िया रे ना
रामा कड़के लगली चोली अनमोलिया रे ना
रामा दूजे देवढ़ी लांघे तिलकी देइया रे ना

रामा चोली बंदवा टूटल औहि समइया रे ना
रामा तिसरी देवढ़ी लांघे तिलकी रनिया रे ना

रामा खसकि गइल कमर के सरिया रे ना
रामा हंसे लगली सखियां-सहेलियां रे ना
रामा पीटे लगली सब मिलि तलिया रे ना

रामा सुन-सुन चल्हकी भउजिया हमरी बचनिया रे ना
रामा केहिरे करनवें चोली बंदवा टूटल ए राम
रामा केहिरे करनवें असगुन भइल ए राम

रामा नन्हीं से पेन्हली भउजी हम सारी चोलिया रे ना
रामा कबहीं ना अइसन अचरज भइल ए राम

रामा रहि-रहि आवे भउजी हमरा रोअइया हे राम
रामा नयना टपकि नवरंग भीजेला ए राम

(तिलकी ने जैसे ही पहले द्वार के बाहर पांव रखा, उसकी चोली चटकने लगी। दूसरे द्वार को लांघते ही उसकी चोली के बंद टूट गए। तीसरे द्वार को लांघने पर कमर से साड़ी खिसक गई। यह देख कर साथ की सखि—सहेलियां हंसने लगीं और मिल कर ताली पीटने लगीं। तिलकी ने चल्हकी से कहा—हे भाभी, मेरी चोली के बंद क्यों टूटे और क्यों इस प्रकार के अपशकुन हुए। मैं बचपन से ही साड़ी-चोली पहनती रही हूं लेकिन ऐसा अचरज कभी नहीं हुआ। हे भाभी, मुझे रह-रह कर रोना आता है और आंखों से आंसू टपक कर मेरे वस्त्रों को भिगो रहे हैं।)

चल्हकी ने उत्तर दिया—हे ननदी, मरी बात मानो, ये अपशकुन नहीं, शकुन है तुम्हारे कंत आने वाले हैं।

हिछल बछेड़े ने कनखियों से तिलकी और उसकी सखियों को आते देखा। वह कुंवर से बोला—"अब यह मखमल की चादर उतार फेंको।"

तिलकी का रूप देखते ही कुंवर मूछित हो गया। हिछल बछेड़े ने उसकी मूर्च्छा दूर की। तब कुंवर ने तिलकी को अपना परिचय देते हुए कहा—मेरा घर घुरमलपुर में है। मेरी मां का नाम मैनावती और भाभी का नाम सोनमती है। मेरा नाम कुंवर बिजई है। हमारे श्वसुर का नाम बावन सूबेदार है। सलहज का नाम फूलमनो और साले का नाम मानिकचंद है। अपनी पत्नी का नाम तो हम अपने मुंह से ले ही नहीं सकते हैं।

यह सुनते ही तिलकी ने लाज से लम्बा घूंघट काढ़ लिया और जोर-जोर से रोने लगी। बोली—हाय विधाता का यह कैसा खेल है। हे स्वामी, मेरा कहना मानो। मेरे बाप-भाई हत्यारे हैं। वे आपको अपना दामाद नहीं मानते। यहां वे आपको मार डालेगें। इसलिए आप अपने घर लौट जाएं।

कुंवर ने कहा कि जब तक मैं अपने बाप-भाई को न छुड़ा लूंगा और सबके सम्मुख तुम्हारा गौना करवाकर तुम्हें साथ नहीं ले चलूंगा तब तक मैं अपने घर नहीं जाऊंगा।

वह हिछल बछेड़े पर सवार हो गया और उड़ कर जेल के भीतर जा पहुंचा। वहां उसने सभी लोगों की हथकड़ी-बेड़ियों को काट फेंका और जेल का फाटक तोड़ कर उन्हें मुक्त कर दिया। भवरानन पोखर पर लाकर सब बरातियों के बाल बनवाए गए और उनको जलपान कराया गया।

कुंवर हिछल बछेड़े पर सवार होकर नगर में निकल पड़ा। राजा की दासी एक कुंए पर पानी भरने आई थी। कुंवर ने उससे पीने के लिए पानी मांगा। दासी के मना करने पर उसने उसका घड़ा फोड़ दिया। दासी ने राजा के पास जाकर शिकायत की। राजा ने कुंवर को पकड़ने के लिए चार पहलवान भेजे। कुंवर ने उन चारों को मार गिराया। इसके बाद राजा का भेजा हुआ महाबली पहलवान असराम भी मारा गया। तब कुंवर की टक्कर तीन सौ की पलटन से हुई। कुंवर ने उन सबको भी मौत के घाट उतार दिया।

अब तो बावन सूबेदार के क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। वह अपने पुत्र मानिकचंद के साथ लाखों की सेना लेकर स्वयं कुंवर से लड़ने आ पहुंचा। उनके बीच घमासान युद्ध छिड़ गया। कुंवर ने देवी दुर्गा का स्मरण किया और हिछल बछेड़े पर बैठ कर शत्रुदल पर

टूट पड़ा। आकाश से युद्ध करके उसने कोहराम मचा दिया और बावन सूबेदार की सारी सेना को काट डाला। घुरमलसिंह ने अब कुंवर बिजई से अपने देश को लौट चलने को कहा। लेकिन कुंवर ने कहा कि अभी मेरा प्रण पूरा नहीं हुआ है। अभी मुझे तिलकी का गौना कराना बाकी है।

कुंवर महल के अंदर घुस गया। वहां अवसर पाकर मानिकचंद ने उस पर घातक प्रहार किया। वह मूर्छित हो गया। हिंछल बछेड़ा उसे अपनी पीठ पर लाद कर देवी दुर्गा के पास ले गया। देवी दुर्गा ने अपनी कनिष्ठा अंगुली चीर कर उसके मुंह में खून की कुछ बूंदें टपकाई। कुंवर तत्काल उठ बैठा और उड़ कर क्षणभर में फिर बावनगढ़ जा पहुंचा। किले का विध्वंस कर उसने बावन सूबेदार और मानिकचंद दोनों को पकड़ कर जंजीरों से बंधवा दिया।

इसके बाद तिलकी का गौना करा कर पिता, भाई और सारे बरातियों के साथ वह रोहतासगढ़ के लिए वापस चल दिया। साथ में जंजीरों से बंधे बावन सूबेदार और मानिकचंद भी थे। रोहतासगढ़ पहुंचकर उन्हें जेल में डलवा दिया।

इस सारे कांड में सबसे अधिक प्रसन्नता सोनमती को हुई। देवी ने उसकी विनय सुन ली थी। पति और श्वसुर उसे वापस मिल गए। देवर सकुशल लौट आया और साथ में मिली तिलकी जैसी देवरानी।

छतरी घुघुलिया

[मगही या मागधी बोली के क्षेत्र में 'छतरी घुघुलिया' [क्षत्रिय घुघुली] लोक वीरगाथा का व्यापक प्रचलन है। गाथा को बिरहा गीत के समान लय से प्रायः एक ही गायक गाता है और गायन में अधिक ओजस्विता लाने के लिए ढोल का सहारा लिया जाता है।

इस गाथा का सम्बंध मध्ययुगीन भारत से है। राजा बृजभान द्वारा दिल्ली के शासक को गुप्त पत्र भेज कर सहायता के लिए 'तुर्क' सेना भेजने और अपनी लड़की सुखंती को ही मुसलमान बना लेने का सुझाव देने से स्पष्ट है कि उस समय दिल्ली की गद्दी पर मुसलमान शासक आसीन थे और बिहार के अंचलों पर यद्यपि उनका सीधा नियंत्रण नहीं था, तथापि दबदबा अवश्य था।

लोकगाथा के नायक 'छतरी घुघुलिया' में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो वीरगाथा के नायक में होना आवश्यक हैं। वह अकेला ही चौदह हजार सेना को पल मात्र में नष्ट करने में सक्षम है। उसमें अनेक दैवी गुण बाल्यकाल से ही मौजूद हैं। तलवारों के मंडप में वह अपना विवाह रचाता है और अत्याचारी को दंड देने में अपने निकट सम्बंधियों तक को नहीं बख्शाता।

नायक के श्वसुर बृजभान की गणना सह-खलनायकों में की जा सकती है। वह भी अपनी करनी का फल पाता है और जमाई के हाथों यमलोक को सिधारता है।]

घने जंगल को काट कर झाझमपुर नामक एक नगर बसाया गया था जिसमें बावन गलियां और तिरपन बाजार थे। किसी समय वहां राजा रणपाल सिंह राज करता था। वह बड़ा शूरवीर था और उसके पास हाथियों तथा घोड़ों की बड़ी सेना थी। राजा को शिकार का भी बड़ा शौक था। इसके लिए उसने बारह कोस का एक जंगल अलग छुड़वा रखा था जिसमें किसी को वृक्ष काटने की अनुमति नहीं थी।

जंगल के दूसरी ओर घाटमपुर नामक स्थान था। वहां सात घाटम भाइयों का राज्य था। राजा रणपाल सिंह की रानी यशोदा इन्हीं घाटम भाइयों की बहन थी। एक दिन घाटमपुर का एक सौदागर सात सौ बैलों पर सामान लाद कर साढ़े तीन सौ व्यापरियों के साथ व्यापार के लिए निकला। मार्ग में झाझमपुर पड़ा। उन्हें देख कर राजा रणपाल सिंह अपने सिपाहियों से बोला—जाकर देखो, ये किसके बैल हमारे राज्य में घुस आए हैं।

उन्हें मार-मार कर उनका सारा माल छीन लो और बैलों को जंगल में भगा दो। सिपाहियों ने राजा के आदेश का पालन किया।

व्यापारी रोते हुए लौट कर घाटमपुर पहुंचे। उन्होंने घाटम भाइयों से इस घटना की शिकायत की।

एतना जे बतिया सुनइ बड़के घाटम
तड़वे के लहर चढ़इ कपार
जल्दी ला दे जयपत कोरा कगजवा,
आउ ला दे कलम दवात
फगुआ के नेओता लिखिए घाटम
गांगू हजमा से दें हइ भेजाय

(इतनी बात सुनकर क्रोध में बड़े घाटम को त्यौरियां चढ़ गईं। उसने जल्दी से कागज और कलम-दवात लाने का आदेश दिया और तत्काल राजा रणपाल सिंह को फाग का निमंत्रण लिखकर उसे गंगू नाई के हाथों भेज दिया।)

उस समय रणपालसिंह अपने महल में बैठा हुआ था। निमंत्रण पाते ही वह उसे लेकर रंगमहल में रानी के पास पहुंचा। उसकी बात सुनकर रानी यशोदा दहाड़ें मार कर रोने लगी और बोली :

एहु न्योतवा सामी मार के रखउ बाये दहिने बोले काग।

(हे स्वामी इस निमंत्रण को स्वीकार मत कीजिए। मेरे बाएं और दाएं काग बोल रहे हैं।)

राजा ने उत्तर दिया—हे रानी, हम क्षत्रिय हैं, किसी के निमंत्रण को ठुकराना हमारा धर्म नहीं है। हम अवश्य जाएंगे।

जिरह बख्तर धारण कर, हथियारों से सुसज्जित होकर और हैकल घोड़ी पर सवार होकर राजा रणपाल सिंह घाटमपुर के लिए चल पड़ा। घाटम भाई अपनी नीचता के लिए प्रसिद्ध थे। बहनोई के स्वागत के लिए उन्होंने कच्चे सूत की चारपाई बुनवाई और उसके नीचे एक गहरा गड्ढा खुदवा दिया। उन्होंने शर्बत में विष मिला कर भी तैयार रखा। लेकिन देवी माई की कृपा से कच्चे सूत की चारपाई पक्की हो गई और शर्बत भूमि पर गिर पड़ा जिसे देवी माई ने चाट लिया।

तब घाटम भाइयों ने राजा को धोखे से शराब पिला कर उसकी हत्या कर दी। यह समाचार पाकर रानी यशोदा दहाड़ें मार-मार कर रोने लगी। हे भाई, मिलने के बहाने तूने यह कैसा बदला लिया जो मुझे विधवा बना दिया।

घाटम भाइयों को इससे तुष्टि नहीं हुई। यशोदा उस समय गर्भवती थी। उसका गर्भ गिराने के लिए उन्होंने एक दाई को उसके पास भेजा। लेकिन दाई को रानी पर दया आ गई। उसने उसे भाग जाने की सलाह दी और मिट्टी के बर्तन में पान की पीक ले जा कर घाटम भाइयों को विश्वास दिला दिया कि वह अपना काम पूरा कर आई है।

परान बचाने ला भागइ रानी जसोदा,
जा हइ राजा बृजभान के पास
रानी के सुरतिया देखिके राजा
तब मनमा करई विचार
तोरा से करबउ बिअहवा रानी
तोरे ही रखबउ रानी बनाय

(रानी यशोदा प्राण बचाने के लिए भाग कर राजा बृजभान के पास पहुंची। रानी का रूप देखकर राजा बृजभान का मन डोल गया। उसने मन में सोचा, इससे विवाह कर इसे अपनी रानी बनाना चाहिए।)

यशोदा से उसने अपने मन का भाव प्रकट कर भी दिया। यशोदा ने उसे धिक्कारते हुए कहा कि मैं तो तेरी बहन जैसी हूं, तुझे यह कहते लाज नहीं आई ?

उसकी बात से चिढ़ कर बृजभान ने उसे फांसी पर चढ़ा देने का आदेश दे दिया। बधिक यशोदा को फांसी देने के लिए जंगल की ओर ले चले। हेमद मोदी की यशोदा पर दया उमड़ आई। राजा के पास पहुंच कर उसने झुक कर अभिवादन किया और बोला :

ए ननदी भउजइया मे भैलइ झगड़वा,
ओर बहिनी घर से बहराल
कोने कसुरवा कैलस मोर बहिनिया,
काहे फांसी देलउ चढ़ाय।

(हे राजा, ननद-भावज में झगड़ा होने से मेरी बहन घर से निकल कर चली आई थी। उससे ऐसा कौन-सा अपराध हो गया जो तुम उसे फांसी पर चढ़ा रहे हो ?)

राजा ने मोदी से शीघ्र जंगल में जाकर अपनी बहन को छुड़ा लाने को कहा। हेमद मोदी यशोदा को छुड़ा कर अपने घर ले आया जहां वह उसकी बहन बन कर रहने लगी।

समय आने पर यशोदा ने एक पुत्र को जन्म दिया। मोदी ने उसकी नाल काटने के लिए दाई को बुलाया। दाई सज-धज कर मोदी के घर पहुंची। लेकिन जैसे ही वह नाल काटने लगी, बालक बोल उठा :

ए मोरा से अलग रह डगरिन
देवा मइया कटिहें नार

(ए दाई, तू मुझसे दूर रह, मेरी नाल तो देवी मां काटेंगी।)

बालक के जन्म पर उसके ग्रह बांचने के लिए पंडित भी बुलाया गया।

कासीपुर से अयलइ बभना
पोथिया खोलि करइ बिचार
छतरी कुल में करतउ नाम
बावन लाख रुपया राजा बृजभान से चुकेतउ
सूद में करतउ ओकर बेटी से बिआह
छतरी कुल के तोरो हउ भगिनमा मोदी
छतरी घुघुलिया धइली नाम

(काशीपुर से पंडित आया। पंचांग देख कर उसने कहा कि हे मोदी, तेरा भानजा छत्रिय कुल का है और छत्रिय कुल में अपना नाम ऊंचा करेगा। वह राजा बृजभान से अपने बावन लाख रुपये वसूल करेगा और ब्याज में उसको बेटी से विवाह करेगा। तेरा भानजा छत्रिय कुल का है, इसलिए मैंने उसका नाम छतरी घुघुलिया रखा है।)

धीरे-धीरे बढ़ता हुआ छतरी घुघुलिया बारह वर्ष का हो गया। एक दिन वह नहाने गया। उसने धोती ऊंची जगह पर रख दी और गंगा में गोता लगाया। तभी श्रद्धादेवी बुढ़िया का रूप धर वहां पहुंची और धोती उठा ली। घुघुलिया ने उसका रास्ता रोक लिया और बोला—हे मां, तू ही इस रास्ते से आई थी, तूने ही मेरी धोती चुराई है।

बुढ़िया के रूप में श्रद्धामाई बोली—बेटा, तू क्यों मुझे बदनाम करता है। हट, मेरा रास्ता छोड़। भूख से मेरे प्राण निकल रहे हैं।

दुलरू (घुघुलिया) कहने लगा—मां, मेरे पास देवी पूजन के लिए एक मुट्ठी चावल हैं, वह पका कर मैं तुझे खिला सकता हूं।

बुढ़िया ने जवाब दिया—मैं तेरे हाथ का भोजन कैसे खा सकती हूं? तेरे हाथ में छूत लगी हुई है।

घुघुलिया ने पूछा—माई, छूत कैसे लग गई? सब सच बात बता।

बुढ़िया बोली—बेटा, तेरे मामा घाटम ने तेरे पिता की हत्या कर दी थी। उसका क्रिया-कर्म अब तक नहीं हुआ है। इसलिए तुझे छूत लगी हुई है।

इतना सुन कर छतरी घुघुलिया की त्यौरियां चढ़ गई। वह बोला—मां, मुझे आदेश दो, मैं अपने सातों मामाओं के सिर उतार कर ले आऊं।

श्रद्धामाई बोली—बेटा, मेरी बात सुन। गेरुआ रंग के कपड़े रंगा कर योगी का रूप धारण कर ले। इस वेश में घाटमपुर जाकर और अपने मामाओं को डरा-धमका कर पिता का कर्म सम्पन्न करा ले। उनके पास तेरे बाप की हैकल घोड़ी और जिरहबख्तर भी हैं। उन्हें भी उनसे दान में मांग लेना।

छतरी घुघुलिया ने ऐसा ही किया। योगी का वेश बना कर वह घाटमपुर जा पहुंचा और वहां सरोवर के किनारे डेरा डाल दिया। वहां का पानी बदबूदार हो गया था। एक दासी ने उसका कारण पूछा तो योगी वेशधारी घुघुलिया ने कहा--तेरा राजा चांडाल है। उसने अपने बहनोई की हत्या कर उसका कोई कर्म नहीं कराया, इसी से यहां का पानी दूषित हो गया है।

दासी ने यह बात घाटम महल में जाकर कह दी, उसकी बात सुन कर जयपत इन्द्र चौरे पर पहुंचा। घुघुलिया ने उससे भी वही बात दुहरा दी जो उसने दासी से कही थी। जयपत ने इस पाप से मुक्ति का उपाय पूछा। योगी ने कहा उपाय हम घाटम को बताएंगे।

तब छतरी घुघुलिया योगी के वेश में घाटम के पास पहुंचा।

तब बोली बोलउ हइ छतरी घुघुलिया,
सुन घाटम कहल हमार
अस्सी गो बराहमन के तू भोजन करा दे
हैकल घोड़िया का दे दान
लोहा पोसाक हउ तोरे बहनोइया के
ओहू दान दे तू कराय
सब जब दनवा करावे राजा
दोस-पाप कटि जाय

(छतरी घुघुलिया इस प्रकार बोला—हे राजा घाटम, हमारा कहना सुन तू अस्सी ब्राह्मणों को भोजन करा और अपने बहनोई की हैकल घोड़ी तथा जिरहबख्तर दान में दे दे। इनका दान करने पर तेरे दोष-पाप कट जाएंगे।)

घाटम ने ऐसा ही किया। छतरी घुघुलिया ने जिरह-बख्तर पहन कर छप्पन कटार कमर में बांधी और हैकल घोड़ी पर सवार होकर हाथ में तलवार खींच ली। कहने लगा—घाटम मामा सुन! मैं जोगी नहीं हूं, तुम्हारा भानजा छतरी घुघुलिया हूं। मैं तुम सातों के सिर अपनी तलवार से उड़ा दूंगा।

घोड़ी को एड़ लगा कर वह सीधा देवी के मंदिर में पहुंचा। वहां देवी से अपने मामाओं के सिर उतार लेने का आदेश मांगा। देवी प्रकट होकर बोली—बेटा, मेरा कथन सुनो। पहले तुम राजा बृजभान से अपना बावन लाख रुपये का कर्ज वसूल करो और ब्याज में उसकी बेटी से विवाह करो।

यह सुन कर छतरी घुघुलिया ने हेमद मोदी के पास पहुंच कर कर्जे के बारे में जानना चाहा। मोदी उसके साथ बृजभान के दरबार में पहुंचा और कर्ज लौटाने को कहा। बृजभान ने कुछ कर्ज क्वार में, कुछ कार्तिक में और शेष सब अगहन में चुकाने का वायदा किया। लेकिन छतरी घुघुलिया ने तत्काल सारा कर्ज लौटाने पर जोर दिया और ब्याज के बदले में उसकी बेटी का हाथ मांगा।

एतनी जे बतिया सुनइ राजा बृजभान
उनकर तरवा के लहर चढ़इ कपार
सुनरे पेयादा अलउ एक फनगा,
बोली से बोलउ हउ कछु बोल
मच्छरे नीयर सार के मार के तू छांड़
चटनी नीयर पीसी दे

(इतनी बात सुन कर राजा बृजभान के माथे की त्यौरियां चढ़ गईं। उसने सिपाहियों से कहा—एक कीड़ा आकर कुछ उल्टे-सीधे बोल रहा है। चटनी की तरह इस मच्छर को मार कर पीस दो।)

सिपाही जैसे ही छतरी घुघुलिया के पास पहुंचा, हैकल घोड़ी ने उसे चबा डाला। यह देख कर दूसरे सिपाही डर कर भाग खड़े हुए और बृजभान के पास पहुंचे। उनकी बात सुनकर बृजभान ने गढ़ पर्वत पर युद्ध का डंका बजवा दिया। डंके की चोट पर सारी सेना वहां एकत्र हो गई। छतरी घुघुलिया हैकल घोड़ी पर सवार हो उसके बीच में कूद पड़ा और चारों ओर मार काट मचा दी। क्षण भर में ही चौदह हजार की सेना का सफाया हो गया। उसका सेनापति पूरनमल देवनमा लाशों की ओट लेता हुआ महल की ओर भागा। उसके पीछे-पीछे घुघुलिया भी वहां पहुंचा। राजा से बावन लाख रुपये वसूले और राजकुमारी सुखंती को बुलाने को कहा। तलवारों का मंडप बनाकर और ढालों की छाया कर उसने वहीं उसे बैठाकर उसकी मांग में सिंदूर भर दिया। उसे डोली में बैठाकर हेमद मोदी के साथ घर को वापस चल दिया।

उधर राजा बृजभान ने दिल्ली के तुर्क शासक को गुप्त पत्र भेजा। इसमें उसने मित्र पर विपत्ति पड़ने और सहायता के लिए आने की गुहार की थी। उसने लिखा था कि बावन लाख रुपये लूटकर सेना में बांट देना तथा रानी सुखंती को मुसलमान बना लेना। साथ ही हेमद मोदी का सिर काटकर पूरा बदला चुका लेना। पूरनमल देवनमा ने तुर्क सेना के साथ पहुंचकर रानी सुखंती की डोली को रोक लिया।

छतरी घुघुलिया हैकल घोड़ी पर सवार होकर तुर्क सेना के बीच जा घुसा और उसने सभी को मार गिराया। पूरनमल देवनमा भागकर बृजभान के पास पहुंचा और बोला—हे

राजा, इस भिनगे को आप भिनगा मत समझिए। वह किसी देवता का अवतार जान पड़ता है। तभी घुघुलिया ने वहां पहुंचकर राजा बृजभान का सिर काट डाला।

घुघुलिया जब सोने के पलंग पर सुख की नींद सो रहा था, पूरनमल ने चुपके से तलवार चलाकर उसका वध कर डाला। अपने पति की मृत्यु पर रानी सुखंती जोर-जोर से विलाप करने लगी और उसकी चिता के साथ जलकर सती होने का विचार किया।

देवी बुढ़िया का रूप धर उसके पास पहुंची और बोली—बेटी, सती मत हो, हम तुम्हारा दूसरा विवाह रचा देंगे। लेकिन सुखंती अपने निश्चय पर अटल रही। तब बुढ़िया ने रानी यशोदा के पास जाकर यह सब समाचार दिया।

यशोदा तत्काल सिहुलो जंगल में पहुंची जहां सुखंती उसके मृत बेटे के साथ सती होने के लिए तैयार थी। यशोदा अपने पुत्र के शव को उठाकर देवी के मंदिर में ले गई और उससे विनती करने लगी कि वह उसके पुत्र को जिला दे, बदले में वह चंदन की लकड़ी और चावल से पूजकर, फूल की चादर चढ़ाकर और बकरी का बच्चा भेंट कर उसकी पूजा करेगी। देवी ने घुघुलिया को जिला दिया। वह जैसे ही उठकर बैठा, उसने देवी से अपने मामाओं के सिर काट लाने को अनुमति मांगी। देवी ने उससे थोड़े दिन धैर्य रखने और घर जाने को कहा।

कुछ दिन बाद घुघुलिया को मामाओं की चिट्ठी मिली जिसमें दुआ-सलाम के बाद छठी के उत्सव में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया गया था। घुघुलिया निमंत्रण-पत्र लेकर मां के पास पहुंचा। मां ने उसे घाटमपुर जाने से मना किया। बोली—तेरे मामा बड़े नीच हैं। उन्होंने फाग का निमंत्रण देकर तेरे पिता को मार डाला। अब छठी का निमंत्रण देकर तेरी जान लेना चाहते हैं।

लेकिन छतरी घुघुलिया नहीं माना। बोला—मैं क्षत्रिय कुल का हूं, किसी के निमंत्रण को अस्वीकार नहीं कर सकता। जिरहबख्तर पहन, कमर में छप्पन कटारें सजा हैकल घोड़ी पर सवार होकर वह घाटमपुर पहुंचा। वहां उसने अपने मामाओं को प्रणाम किया। मामा बोले—भानजे, हाथ-मुंह धोलो और चलकर भोजन करो। छतरी घुघुलिया ने कहा—अभी नहीं, मैं थोड़ी देर बाद खाना खाऊंगा।

घाटम ने जयपत को पाठ पढ़ाया कि जब घुघुलिया खाने बैठे, तुम उसका सिर काट लेना। यह बात उसकी छोटी-भाभी ने सुन ली। उसने चुपके से उसके पास संदेश भिजवाया कि इस घर में सावधान रहना, तुम्हारी जान खतरे में है।

घुघुलिया ने घाटम से कहा कि मामा, जब तक आप मुझे बख्शीश नहीं देंगे, मैं भोजन नहीं करूंगा। घाटम ने उत्तर दिया कि भानजे, कुछ सोना लो, कुछ चांदी लो और भोजन

करो। घुघुलिया हैकल पर सवार हो देवी के मंदिर में पहुंचा और सातों मामाओं के सिर उतार लाने का आदेश चाहा। देवी ने फिर उसे कुछ दिन धीरज रखने को कहा।

कुछ दिन और बीते। एक दिन रानो सुखंती ने सोचा कि सैरा पोखरा के किनारे मेला लगा है, वहां जाकर स्नान करना चाहिए। उसने सास से अपने मन की बात कही। सास बोली—जिसके अपने घर में ही सुंदर सरोवर हो, वह तालाब में जाकर क्यों नहाए ? सुखंती ने उत्तर दिया :

अब पनिया के लगलइ पिअसवा मोरा
दुधवा कैसे करि हम अघार
अब सैरा पोखरा के भइया सौखवा लगल है,
तब कैसे चौरा निहाय।

(अब मुझे पानी की प्यास लगी है, तो दूध से मेरी तृप्ति कैसे हो सकती है ? इस समय सैरा पोखरा पर मेला लगा है, तब मैं सरोवर में कैसे नहाऊं ?)

सास ने कहा– मैं तो आज्ञा नहीं देती, अपने पति से पूछ लो। रानी सुखंती ने पति से अपने मन की बात कही। घुघुलिया ने तत्काल तालाब तक उसके लिए सड़क बनवा दी। रानी डोली में बैठ कर वहां पहुंची।

उस समम सातों घाटम भाई मछलियां मारने पोखरा पर आए हुए थे। सुखंती को देख घाटम ने कहा—जयपत, इतनी सुंदर स्त्री कहां मिल सकती है। इसको उठाकर घर ले चलो। उसकी बात सुनकर सुखंती की एक दासी लखिया दोकान अपने घर को भागती हुई पहुंची। उसने घुघुलिया को सारी बात बताई और बोली—मेरे साथ फौरन चलो नहीं तो रानी की इज्जत नहीं बच पाएगी।

जब घुघुलिया सैरा तालाब पर पहुंचा तो उसे देखकर सातों मामा घबरा उठे। उसने फौरन तलवार खींचकर मामाओं पर वार कर दिया और छह मामाओं को मार गिराया। जैसे ही वह क्रोध में भरकर सातवें मामा पर झपटा, छोटी मामी उसके सामने पड़कर अपने पति के प्राणों की भीख मांगने लगी। मामी के अहसानों को देखते हुए घुघुलिया ने अपने छोटे मामा को मारा नहीं, केवल उसकी नाक काट कर छोड़ दिया।

खुशी-खुशी छतरी घुघुलिया लखिया दोकान लौट गया। सुखपूर्वक वह वहां अपने घर का कामकाज देखने लगा।

जब सब बतियां पूरा होलइ,
रानी जसोदा मंदिर में चल जाय

आबा लेलन चढ़ावा, चननमा के लकड़ी,
देवी के चउरवा पूजे जाय।
काली लेलन पठिया, कुंवारी देवी मइला।
चौरापर देलन चढ़ाय
हथवा उठाके देवी मइया सरधा
दुलरू के देलन वरदान।

(सब काम पूरे हो जाने पर रानी यशोदा देवी के मंदिर में पहुंचो। चावल, चंदन की लकड़ी और बकरी का बच्चा ले जाकर वहां उन्होंने देवी को भेंट चढ़ाए। श्रद्धादेवी माई ने भेंट से प्रसन्न हो छतरी घुघुलिया को हाथ उठाकर वरदान दिया।)

राजा वीरसिंह

[छत्तीसगढ़ की गाथाओं में सबसे अधिक लोकप्रिय गाथा राजा वीरसिंह की है। मध्ययुग की रचना होने के कारण इन गाथाओं में जहां तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण रहता है, वहीं उस समय के जन-विश्वासों की झलक भी मिलती है। गेयता उनकी रोचकता और आनंद को और बढ़ा देती है।

वीरगाथा में नायक का वीर होना एक अनिवार्य शर्त है। किन्तु स्त्रियां भी इस गुण से वंचित नहीं हैं। नायक की उपलब्धियों में उनका तथा दैवी शक्तियों का सहयोग भी भरपूर मात्रा में रहता है। राजा वीरसिंह की गाथा जादू-मंतर, जोगी (योगी), जोग के आधार पर चलती है। जोगी रानी से भिक्षा लेने के बहाने उसे मक्खी बनाकर हर ले जाता है। उसकी खोज में गए राजा और उसकी सेना को पत्थर की मूर्तियों में परिवर्तित कर दिया जाता है। अंत में राजकुमार जोगी के इस जादू-मंतर के जाल को छिन्न-भिन्न करने और अपने माता-पिता को मुक्त कराने में सफल होता है।]

हरदीनगर में राज्य करता था राजा वीरसिंह। उसकी रानी का नाम था रमुला। रानी की गोद में पांच महीने का एक शिशु था मदनसिंह।

एक दिन राजा वीरसिंह दरबार में गया। वह घर के द्वार पर एक रेखा खींचता गया और कहता गया कि यदि दुर्जन जादूगर भिक्षा मांगने आए तो इस रेखा से बाहर निकलकर उसे कुछ देना नहीं।

राजा के जाते ही जय सीताराम कहता हुआ जोगी वहां पहुंच गया। दरवाजे के सामने खड़े होकर वह इकतारा बजाने लगा। इकतारा सुनकर रानी रमुला ने अपनी दासी से कहा—जा बाबा को भिक्षा दे दे। दासी सोने की थाली में भिक्षा लेकर दुर्जन जादूगर के पास पहुंची। लेकिन उसने दासी के हाथों से भिक्षा लेने से इंकार कर दिया।

दासी रानी के पास पहुंची। रानी ने उससे पूछा—क्यों क्या बात है? तेरा गोरा मुंह काला कैसे पड़ गया? तू उदास क्यों है?

दासी ने उत्तर दिया—बाबा ने मेरे हाथ से भिक्षा स्वीकार नहीं की। वह आपके हाथों से ही भिक्षा लेगा।

उधर दरवाजे पर बाबा ने हांक लगाई—माई, भिक्षा लाती हो या मैं वापस चला जाऊं?

रानी सोने की थाली में भिक्षा लेकर बाबा के पास पहुंची। बाबा बोला—रानी, मेरी बात सुन। तू इस रेखा से आगे आकर मुझे भिक्षा दे। रानी ने रेखा से आगे निकलकर उसके आगे थाली रख दी। तभी जोगी ने रानी को मक्खी बनाकर उसे अपनी भुजा पर बैठा लिया और वहां से भाग निकला। रानी का इस प्रकार अपहरण होते देख सभी लोग रोने लगे।

झर-झर-झर चेरिया छोरी रोवे
पलंगों में रोवथे बाबू मदनसिंह
सात खंडा महल में सासे ओ डोकरिया
कोठा में रोवथे भूरी मोर भैंसी
सिंह दरवाजा में भूरी ओ कुतरनी

(दासी की आंखों से झर-झर-झर अश्रु बहने लगे। पलंग पर पड़ा मदन सिंह रो रहा था। अपने सात मंजिले महल में बूढ़ी सास रो रही थी। कोठे में भूरी भैंस रो रही थी और मुख्य दरवाजे पर भूरी कुतिया।)

राजा वीरसिंह दरबार से लौटे तो उन्हें सारे महल में उदासी छाई दिखाई दी। वह पूछने लगे—रानी रमुला कहां है ? उन्होंने सारे महल में घूम-घूमकर देखा, रानी का कहीं पता नहीं था। उन्होंने मां से पूछा—मां जल्दी बता रानी कहां है ? मां ने कहा—बेटा, पहले नहा-खा तो ले। लेकिन राजा ने उत्तर दिया कि जब तक तुम बताओगी नहीं तब तक मैं न अन्न खाऊंगा, न जल ग्रहण करूंगा। मां बोली :

बहू के हालत बेटा का बतइहो
कहां के जोगड़ा बेटा मांछी बनाके लेगे

(बेटा, तुम्हें बहू का क्या बताऊं ? एक अज्ञात जोगी आया था जो उसे मक्खी बनाकर ले गया।)

राजा ने यह सुनते ही तत्काल कोतवाल को बुलाया। वह दौड़ा-दौड़ा आया। राजा ने आदेश दिया कि गांव-गांव में डुग्गी पिटवा दी जाए कि सभी प्रजाजन रानी को खोज में लग जाएं। मैं भी सेना लेकर उसे खोजने के लिए जाऊंगा।

नव लाख हाथी घोड़ा राजा के तैयार
हाथी वाला हाथी चढ़ै घोड़ा वाला घोड़ा
गाड़ीवाला गाड़ी अऊ पैदल वाला पैदल
बाग गाड़ा चावर धरे हावे
जोरा जोड़के वीरसिंह लेगये फौजे
पांच हजार फौज रेंगावे
एक कोस रेंगे, दुहन कोस रेंगे

तीसरे कोसन तरिया डबरी में जावे
बाबा के डबरी मे परे हे महिलानी
बीरसिंह तम्मू ला तनावे
राजा के तम्मू लगे हैं
आवे राजा के लगे कन्नाचं

(राजा के नौ लाख हाथी-घोड़े तैयार हुए। हाथी वाले हाथी पर चढ़े, घोड़े वाले घोड़ों पर। गाड़ी वाले गाड़ी में चले और पैदल वाले पैदल। बारह गाड़ियों में चावल भरकर लादा गया। राजा वीरसिंह अपनी पांच हजार फौज को भी जोड़कर ले गया। अब एक कोस चले, दो कोस चले, तीसरे कोस चलने पर वे एक तालाब के किनारे पहुंचे। वहां बाबा का डेरा था। राजा वीरसिंह ने वहां निकट ही अपने तम्बू लगा दिए। कनातों से सजा हुआ उनका तम्बू अलग से दिखाई दे रहा था।)

बाबा ने रानी रमुला को कुतिया बनाकर रखा हुआ था। रानी ने उससे कहा—आपने इतने दिन से मुझे कुतिया बना रखा है, आज तो मनुष्य बना दो। मुझे गहना कपड़ा पहने बहुत दिन हो गए हैं। जरा तालाब में नहा आने की छुट्टी दे दो।

उसकी बात सुनकर लाल-लाल आंखें किए बाबा बोला—इस जंगल में कुछ बाहर के लोग आ गए हैं। अच्छा, तू जल्दी से तालाब पर नहाकर लौट आ।

बाबा ने रानी को पुन: मनुष्य के रूप में ला दिया। हंसली पहनकर रानी तालाब की ओर चल पड़ी। वह तालाब में डुबकियां खाते-उतराते दूसरे पार पर पहुंच गई। वहां उसने हाथियों को बंधे देखा। उनकी गर्दन में लटक रहे घंटों से टन-टन की आवाज आ रही थी। रानी उधर नजर उठाकर देखने लगी। ये तो मेरे राजा के हाथी हैं। राजा मेरी खोज में आया है।

रानी राजा के तम्बू में पहुंची। बोली—हे राजा, हमारी बात सुनो। तुम बड़े वीर हो। इतनी फौज लेकर भी आए हो। लेकिन यह बाबा बड़ा जादूगर है। पल में मुझे कुतिया बना देता है, पल में मक्खी बना देता है। वह तुम्हें भी पत्थर बना देगा। इसलिए भलाई इसी में है कि तुम यहां से लौट जाओ।

राजा बोला—मैं वापस नहीं जाऊंगा। बाबा को मारकर तुझे अपने साथ वापस ले जाऊंगा।

रानी रोती हुई कुटिया में लौटी।

बाबा देखे रानी कर मुंहू
काहे कारन रानी रोवा परे है

आंखी मं कचरा मोर परे है
कारी तो नैना टरत भला होवे
बाबा के मन ला रानी बोधन लागे
राम रसोई रंधके बाबा ला खबावे
घर-घर-घर रानी रोवत भला होवे

(बाबा ने रानी का मुंह देखा। पूछा—रानी, तू क्यों रो रही है ? रानी ने उत्तर दिया—आंख में कचरा गिर गया है इसलिए पानी आ गया। वह बाबा के मन की बात को भांपने लगी। खाना बनाकर उसने बाबा को खिलाया। साथ ही उसकी आँखों से झर-झर अश्रु भी बह रहे थे।)

सांय चार बजे राजा वीरसिंह बाबा की कुटिया पर पहुंचा। बाबा इसके लिए पहले से ही तैयार था। जादू-टोना करके उसने राजा और उसके सैनिकों को पत्थर बना दिया। फिर व्यंग्यपूर्वक रानी से बोला—तुम्हारा प्रेमी आया था।

इधर कुंवर मदनसिंह धीरे-धीरे बड़ा होने लगा और बाहर निकलकर गली-मुहल्ले में खेलने लगा। एक दिन साठ हजार पनिहारिनें हाथों में घड़े लिए चींटी की चाल से तालाब पर पानी भरने जा रही थीं। कुंवर का पत्थर एक पनिहारिन के घड़े पर जा लगा और घड़ा फूट गया। पनिहारिन ने कहा—तू बड़ा वीर बनता है। अरे तेरी मां को तो एक बाबा मक्खी बनाकर ले गया और तेरा पिता भी गांव भर की प्रजा और किसानों को साथ लेकर उसकी खोज में गया है। क्या तुझे वीरता दिखाने के लिए हमीं मिली हैं ?

ओतरा सुनथे बाबू मदनसिंह
रोवत-रोवत महला घर आवे,
जल्दी बतादे दाई-ददा दाई मोर कहां
महीच तोर दाई महीच तोर ददा
कौन बताइस बेटा अंगरी छिनादों
आंखी कौन मारिस आंखी फोरा दों

(यह सुनकर कुंवर रोता-रोता महल में आया। दादी से बोला—दादी मां, जल्दी बता मेरेमाता-पिता कहां हैं ? उसके प्रश्न को सुनकर दादी काफी हैरान होकर कहने लगी—मैं ही तेरी मां हूं, मैं ही तेरा पिता हूं। तुझे किसने बहकाया है ? जिसने उंगली उठाई उसकी उंगली कटवा दूंगी। बुरी दृष्टि से देखने वाले की आंखें फुड़वा दूंगी।)

कुंवर बोला—न तो किसी ने मुझे मारा है, न पीटा है। तू जल्दी बता मेरे माता-पिता कहां हैं। नहीं बताएगी तो मैं पेट में कटार भोंककर मर जाऊंगा।

दादी को बताना ही पड़ा कि मां को जोगी हर ले गया है और पिता उसकी खोज में गया है। कुंवर ने लिलि हंसा घोड़ा निकालने को कहा। दादी ने बहुत कहा कि मां-बाप को खोजने मत जाओ, लेकिन कुंवर कहां मानने वाला था।

लिलि हंसा घोड़ा में भये हैं तैयारे
बस्ती से बाहिर होगे मदनसिंह
चामें के कोडरा में घोड़ा ला मारल लागे
सनन-सनन भाई लिलि हंसा भागे
एक कोस रेंगे दूसर कोस रेंगे
बीस कोस में सकेलनपुर में जावे

(लिलि हंसा घोड़े पर सवार होकर मदनसिंह बस्ती से चल पड़ा। चमड़े को चाबुक खाते ही घोड़ा हवा से बात करने लगा। एक कोस दो कोस करके वह बीस कोस चलने पर सकेलनपुर में पहुंच गया।)

सकेलनपुर में कुंवर आम के पेड़ की छाया में घोड़े को बांधकर पत्थर पर सुस्ताने बैठ गया। तभी वहां की राजकुमारी अपनी दासियों को साथ लेकर तालाब पर स्नान करने के लिए पहुंची। मदनसिंह को देखकर पूछा—हे परदेसी, तुम किस शहर के रहने वाले हो और यहां से कहां जा रहे हो ? कुंवर ने उत्तर दिया—न मेरा कोई गांव है न गढ़ा। मैं फक्कड़राम गिरधारी हूं जिसके पास न लोटा है न थाली। मैं देश-देश में घूमता फिर रहा हूं।

राजकुमारी कुंवर के रूप पर लट्टू हो गई। वह उसे अपने पिता के पास दरबार में ले गई। राजा ने भी राजकुमारी का मन रखने के लिए मदनसिंह के साथ उसका विवाह कर दिया। वह ससुराल में ही रुक गया। फिर एक दिन बोला— मुझे यहां रहते बहुत दिन हो गए हैं। अब माता-पिता को खोज के लिए जाने को छुट्टी दो। राजकुमारी ने भी साथ ले चलने का इच्छा व्यक्त की। कुंवर ने उत्तर दिया—जंगल-जंगल तुझे कहां साथ लिए फिरूंगा ? तू इस काली कपिला गौ की सेवा करना और रोज उसका दूध दुहना। जब तक दूध दूध रहे, समझना मैं कुशल से हूं। जिस दिन दूध फट जाए, समझ लेना मैं किसी विपत्ति में पड़ गया हूं। उस दिन खोज-खबर लेने चली आना।

राजकुमारी ने आरती उतारकर कुंवर को विदा किया।

कई कोस चलने पर मदनसिंह अब जोहरनपुर पहुंचा। वहां की राजकुमारी अपने महल में बैठी हुई थी। उसने घोड़े पर सवार इस गबरू जवान को देखा। उसने दासियों को भेजकर उसे महल में बुलाया उसने अपने पिता से कहा कि वह उस परदेशी के साथ ही उसकी भांवर डलवा दे। राजा ने ब्राह्मणों को बुलाकर विवाह का सारा प्रबंध कराया।

पांच ठन गांव टिकथे मुवासा
नव लाख हाथी नव लाख ऊंट
पांच हजार बरतन टिकथे
सात खंड के ओबरी महला अरथे

(राजा ने दहेज में उसे पांच गांवों का स्वामित्व, नौ लाख हाथी तथा नौ लाख ऊंट दिए। साथ ही पांच हजार बर्तन दिए और रहने के लिए एक सतमंजिला महल दिया।)

जब वहां भी रहते-रहते काफी दिन हो गए तो कुंवर ने चलने की अनुमति मांगी। दूसरी पत्नी के साथ चलने का आग्रह करने पर वह बोला—तू नित्य आंगन में तुलसी के पौधे की सेवा करना। जब तक यह हरा-भरा रहे, समझना कि मैं जीवित हूं। जिस दिन मुरझाए, मुझे मरा समझकर मेरी खोज में आ जाना। वहां भी आरती कराकर वह अपने माता-पिता को खोजने के लिए आगे बढ़ा।

जोहरनपुर से मदनसिंह जितनपुर पहुंचा और वहां की राजकुमारी के साथ भी उसने विवाह किया। उससे यह कहकर अनुमति ली कि मैं जब तक मां-बाप को खोजकर न लौटूं, तुम रोज दही जमाना। जब तक दही ठीक से जमती रहेगी, तब तक मैं जीवित रहूंगा। जिस दिन फट जाएगा, उसी दिन मरा समझना और मेरी खोज में निकल पड़ना।

आठ रात नौ दिन तक लगातार दिन-रात घोड़ा दौड़ाते हुए कुंवर उसी तालाब पर पहुंचा जिसके निकट बाबा का डेरा था। एक कदम्ब के पेड़ से घोड़े को बांधकर वह उसी पेड़ के ऊपर चढ़ गया।

संयोग से उसी दिन रानी रमुला ने बाबा से कहा कि मुझे तालाब पर नहाने के लिए गए हुए बहुत दिन हो गए हैं, अत: आज वहां जाने दो। बाबा ने कहा कि कहीं वहां तुझे छुड़ाकर ले जाने वाले न आए हों। रानी ने जवाब दिया कि मुझे छुड़ाने अब कौन आ सकता है, सबको तो तुमने पत्थर बना रखा है। इस पर बाबा ने कहा कि जाओ झटपट स्नान कर लौट आना।

कुटी ले बाहिर रानी रमुलिया हावे
हाथी के लुहगी बाघ के चोमपी
हरिना के सही रानी मारथे उचाट
पहुंचन लागी सगुरी के पारें
गंगाजमुना पथरा में जाइके रानी बैठे

(रानी रमुलिया कुटिया से बाहर चली। उसकी चाल कभी हाथी जैसी थी, कभी बाघ जैसी। कभी वह हरिण की भांति कुलाचें भरती हुई चल रही थी। वह तालाब के किनारे जा पहुंची और एक पत्थर पर बैठ गई।)

मदनसिंह पेड़ से उतरकर उसके पास पहुंचा और उसे अपना परिचय दिया। सुनकर रानी बहुत दुखी हुई और बोली—बेटा ! तू यहां क्यों आया है ? जा अपने राज को लौट जा। देखता नहीं, तेरे पिता की फौज को इसने पत्थर बना दिया है। लेकिन कुंवर ने जवाब दिया कि वह मां को साथ लिए बिना नहीं लौटेगा।

कुंवर ने मां को सुझाव दिया कि वह बाबा का भेद लेकर यह पता लगाए कि उसका जीव कहां बसता है। सांझ ढले रानी ने बाबा को भोजन कराते समय पूछ ही लिया—बाबा, कहीं तुम मर गए तो मेरा क्या होगा।

बाबा ने उत्तर दिया—रानी, मेरा मरना इतना सरल नहीं है। सात समुंदर पार पानी के बीच एक टापू में मेरा जीव सुरक्षित है। वहां अबक के पेड़ पर सोने के पिंजरे में एक तोता है। उसको मारने से ही मैं मर सकता हूं।

बाबा का भेद लेकर रानी अगले दिन हंसती-हंसती तालाब पर पहुंची। उसने मदन सिंह को सब कुछ बताया। बोली—जाओ, उस पिंजरे को ले आओ। बाबा को अब जीवित नहीं रहने देना है। मदनसिंह लिली हंसा घोड़ा पर सवार होकर चल दिया। सागर किनारे पहुंचकर उसने नदी के खड्ड में घोड़ा बांध दिया। तभी वहां टंटू मगर आ पहुंचा। टेंटू मगर की पीठ पर सवार होकर कुंवर सात समुद्रों को पार करता हुआ उक्त द्वीप पर पहुंचा जहां अबक के पेड़ पर तोते का सोने का पिंजरा लटका हुआ था।

अबक के डारा कांधा धरथे मदनसिंह
सोने के पिंजरा मदनसिंह धरन लागे
रटले सुआ हांका बलावन लागे
पिंजरा छुटगे डाल कांधा छुटगे
पटले गिरगे बाबू मदनसिंह
सात समुंदर सोला धार में
रई छई छरियागे

(जिस डाल पर पिंजरा लटका हुआ था, उसे कुंवर मदनसिंह ने अपने कंधे पर रख लिया। वह सोने के पिंजरे को हाथ में पकड़ने का प्रयास करने लगे। लेकिन तोते के शोर मचाने से पिंजरा हाथ से छूट गया, कंधे से डाल छूट गई और कुंवर पत्थर पर गिरकर समुद्र की धार में डुबकियां खाने लगे।)

उसी समय सकेलनपुर की राजकुमारी की सोते से नींद उचट गई। उसने बाहर निकलकर गाय के थन को देखा तो उसमें से दूध के बजाय टप-टप खून टपक रहा था। वह समझ गई उसके पति किसी विपत्ति में फंस गए हैं। वह वहीं रोने-चिल्लाने लगी।

उधर जोहरनपुर की राजकुमारी ने देखा कि तुलसी का पौधा मुरझा रहा है। रोते-बिलखते उसने कहा कि मुझे अपने पति की खोज में जाना चाहिए।

जितनपुर की राजकुमारी ने देखा कि दही फटकर पानी-पानी हो गया है। वह भी रोती हुई अपने घर से निकल पड़ी। मार्ग में जंगल में तीनों राजकुमारियों की भेंट हो गई। तीनों को एक-दूसरे का परिचय मिलने पर वे साथ-साथ अपने पति की खोज में नदी के किनारे-किनारे चल दीं।

सागर के किनारे उन्होंने लिली हंसा घोड़े को देखा। उससे उन्हें पता चला कि उनका पति अबक पेड़ से गिरकर सात समुद्र की सोला धार में गिर पड़ा है। यह सुनकर सकेलन-पुर की राजकुमारी ने पानी में डुबकी लगाकर कुंवर की अस्थियों को निकाल लिया। जोहरनपुर की राजकुमारी ने उनको इकठ्ठा कर जोड़ा और जितनपुर की राजकुमारी ने सात परतों का कपड़ा उढ़ाकर तथा अमृत की बूंदे छिड़क कर कुंवर को जीवित कर दिया।

राम कहिके उठ मदनसिंह
बड़ा बहर सोये कइसे तुम्ही आवेव
तोरे बलाये राजा जमुना में आये
काहे कारन तोर जियरा गइस जल्दी बतादों
अबक करा पेड़ में सोने का पिंजरा
ओही पिंजरा के सूआ मोहू ला चाबिस

(राम-राम कहके मदनसिंह उठ बैठा। कहने लगा—सोते हुए बहुत देर हो गई। फिर अपनी पत्नियों को सामने खड़े देख बोले—तुम लोग यहां कैसे आई? राजकुमारियों ने उत्तर दिया—राजा, तुम्हारे बुलाने पर ही तो हम आए हैं। हमें जल्दी बताओ, तुम्हारे प्राण किस प्रकार गए। कुंवर ने बताया कि अबक के पेड़ पर सोने का पिंजरा टंगा था। उस पिंजड़े का तोता उसे चाहिए था।)

कुंवर तत्काल पेड़ पर चढ़ गया। तोते को चोंच को पकड़कर उसके हाथ-पांव, आंखें और पंख तोड़ने शुरू कर दिया। जैसे-जैसे तोते के अंग टूटने लगे, वैसे-वैसे उधर बाबा के अंग टूटने लगे। बाबा रानी रमुला को गाली देता हुआ बोला—यह सब तेरी शरारत है। मेरे प्राणों का भेद ले कर तूने उसे किसी आदमी को बता दिया है।

कुंवर पिंजरा लेकर घोड़े पर सवार हो गया और बाबा की कुटिया की ओर चल दिया। उसके साथ तीनों राजकुमारियां थीं। कुटिया में रानी रमुला मौजूद थी। बाबा का शरीर हाथ-पैरों से अलग हुआ पड़ा था। उसने कुंवर से विनती की कि वह उसके प्राणों को बख्श दे। उसने कहा कि पहले मेरे पिता और उनकी फौज को फिर से जीवित करो जिन्हें तुमने पत्थर बना दिया है।

बाबा ने अपने जादू-टोने से उन्हें फिर से जीवित कर दिया। फिर पिता और मां के कहने पर कुंवर ने तोते की गर्दन तोड़ दी। बाबाजी अपनी कुटिया में ही मर गया। वहीं उसकी चिता सजाकर उसे फूंक दिया गया। इसके बाद प्रसन्नतापूर्वक सभी हरदीनगर को लौट पड़े।

तीन ठन डोला में तीनों केना चधे
एक ठन पालकी में रानी रमुलिया
मौरानद हाथी में वीरसिंह राजा
लिली हंसा घोड़ा में बाबू मदनसिंह
गाड़ीवाला गाड़ी में, घोड़ावाला घोड़ा
वीरसिंह के फौज पांच हजार रेंगे

(तीन डोलों में तीन राजकुमारियां और पालकी में रानी रमुला चल पड़ी। भौरानंद हाथी पर राजा वीरसिंह, लिली हंसा घोड़ा पर कुंवर मदनसिंह चले। हाथी वाले हाथी पर सवार हुए घोड़े वाले घोड़ों पर। राजा वीरसिंह की पांच हजार फौज घर को वापस चल दी।)

जितनपुर के बाहर फौज पहुंचने पर कुंवर पिता से बोला—इस जितनपुर में ही मेरी ससुराल है। थोड़ी देर हाथी को रोक दीजिए, मैं सास से भेंट कर आऊं।

जितनपुर में उसका भारी सत्कार हुआ। इसके बाद वे जोहरनपुर और सकेलनपुर में भी रुके। इन स्थानों पर भी राजा वीरसिंह, रानी रमुला, राजकुमारियों का, मदनसिंह का भारी स्वागत-सत्कार किया गया।

वहां से प्रस्थान करने के बाद आठ रात और नौ दिनों तक लगातार चलने के बाद राजा वीरसिंह हरदीनगर पहुंचे। वहां बाहर मैदान में ही उन्होंने तम्बू लगवा दिए। तम्बू देखकर बस्ती के लोग सोचने लगे, ये तम्बू न जाने किस राजा के लगे हैं। उन्होंने अपना दूत वहां भेजा। उसने राजमाता के पास आकर संदेश दिया कि राजा वीरसिंह और कुंवर मदनसिंह लौट आए हैं, उन्हीं के ये तम्बू हैं। उनके साथ आपकी रानी रमुला भी है।

राजमाता ने तत्काल सभी प्रमुखों को बुलाया और उन्हें बत्तीस जोड़ी बाजे के साथ उनके स्वागत के लिए भेजा। नगर की गली-गली में बाजे बजने लगे। छोटे बच्चों को गोद में लिए महिलाएं अपने-अपने घरों की छतों पर जा चढ़ीं जिससे राजा वीरसिंह को वहां से गुजरते देख सकें।

अब परघावथे वीरसिंह राजा
भौरानंद हाथी झुमरथ चलथे

लिली हंसा घोड़ा चिरंट देवत जाये
रानी डोकरी आरती साजे है
चार ठन डोली में आरती लेवे
राजा वीरसिंह ला हाथ धर उतारे

(अब राजा वीरसिंह पधारे। भौरानंद हाथी झूमता चल रहा था। लिली हंसा घोड़ा हिनहिनाता चल रहा था। राजमाता ने आरती सजाई। उन्होंने चार डोलियों में सवार पुत्रवधू तथा पौत्रवधुओं की आरती उतारी। राजा वीरसिंह को उन्होंने हाथ पकड़कर हाथी से उतारा।)

राजा वीरसिंह ने कहा—मां, तेरे पुण्य से ही हम लौट सके हैं। उसने राजपाट मदनसिंह को सौंप दिया। मदनसिंह की तीनों पत्नियां अपने-अपने महलों में चली गई। रानी रमुला ने सास के पांव छुए। हरदीनगर में चारों ओर आनंद छा गया।

तिलू रौतेली

[गढ़वाल क्षेत्र में भी लोकगाथाओं को 'पंवाड़ा' ही कहा जाता है। इसका कारण कदाचित यही है कि मराठी पंवाड़ों अथवा आल्हा-ऊदल की गाथाओं की भांति गढ़वाली लोक-गाथाओं में भी स्थानीय वीरों के वीरतापूर्ण कृत्यों का वर्णन अधिक रहता है। इन पंवाड़ों की रचना सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में होने लगी थी और उन्नीसवीं शताब्दी तक उनका क्रम बना रहा। बाद में अंग्रेजी शासन के प्रभाव से इन्हें हेय समझा जाने लगा और इनकी रचना समाप्तप्राय हो चली।

गढ़वाली लोकगाथाएं सीधी-सादी होती हैं। उनकी पृष्ठभूमि ऐतिहासिक होती है किन्तु वर्णन में यथार्थ के साथ-साथ कल्पना का प्रचुर अंश मिलता है। अतिशयोक्तियों की भी कमी नहीं रहती।

पंवाड़े लम्बी ढौल (तर्ज) में ऊंचे स्वर से गाए जाते हैं। एक ही गाथा के भिन्न-भिन्न रूप भी मिलते हैं। साथ ही एक बड़ी गाथा में अनेक छोटी-छोटी गाथाओं का समावेश रहता है। ये गाथाएं ढोल या हुड़की के साथ प्रस्तुत की जाती हैं।

गढ़वाली लोकगाथाओं की एक अन्य विशेषता यह है कि उनमें वीरांगनाओं को भी उतना ही सम्मानपूर्ण स्थान मिला है जितना वीरों को। पति, पिता या भाइयों की मृत्यु का बदला लेने के लिए वे अपूर्व शौर्य का परिचय देती हैं। तिलू रौतेली की गाथा ऐसी ही एक वीरांगना की गाथा है। अपने पिता और भाइयों की मृत्यु का बदला लेने के लिए वह पन्द्रह वर्ष की अवस्था में हाथ में तलवार लेकर निकल पड़ी और सात वर्षों तक निरंतर शत्रुओं के दांत खट्टे करते रहने के बाद बाईस वर्ष की आयु में वीरगति को प्राप्त हुई।]

अठारहवीं शताब्दी में कत्यूरा राजवंश का सूर्य अपनी पूरी प्रखरता के साथ चमक रहा था। सम्पूर्ण गढ़वाल में कत्यूरों का आतंक व्याप्त था। विजेता होने के साथ-साथ वे अत्याचारी भी कम न थे। इससे वे सभी सरदार दुखी थे जो कत्यूरों के हमलों और आतंक के शिकार बनते। कत्यूरों के मुंह फेरते ही कभी-कभी वे विद्रोह के लिए सिर भी उठाते, लेकिन नृशंसतापूर्वक कुचल दिए जाते।

उन्हीं दिनों कत्यूरा के राजा धामशाही ने गढ़वाल के तत्कालीन राजा मानशाही की राजधानी खैरागढ़ पर आक्रमण किया। वीरतापूर्वक सामना करने पर भी मानशाही को अपनी राजधानी छोड़कर भागने के लिए विवश होना पड़ा और उसने चांदगढ़ी में जाकर अपना डेरा डाला।

मानशाही के एक सरदार का नाम था भूपू गोली। वह गुराड ग्राम का रहने वाला था। उसने कत्यूरों से मोर्चा लेने का प्रयास किया। किन्तु सराइ खेत के युद्ध में खेत रहा। उसके दो पुत्र भवतू और पत्तू भी कांडा में मारे गए। परिवार में भूपू गोली की विधवा पत्नी के अतिरिक्त केवल उसकी एक पुत्री ही शेष रही जिसका नाम था तिलू रौतेली। उसकी आयु उस समय बहुत छोटी थी किन्तु उस समय की प्रथा के अनुसार ईड़ा ग्राम में उसकी सगाई हो चुकी थी।

गढ़वाल के कांडा नामक स्थान पर प्रति वर्ष एक बहुत प्रसिद्ध कौतिग मेला जुड़ता है। इसी स्थान पर तिलू रौतेली के दो भाई कत्यूरों के हाथों मारे गए थे। जब तिलू पन्द्रह वर्ष की हुई तो उसने भी मां से कांडा के मेले में जाने की इच्छा व्यक्त की। इसके लिए उसने तैयारी भी आरम्भ कर दी। तिलू के कांडा जाने की इच्छा पर मां को अपने पुत्रों और पति की याद हो आई। उच्छ्वास लेते हुए वह बोली—आज यदि मेरे दो पुत्र होते तो वे अवश्य कत्यूरों को मारकर उनसे अपने पिता तथा भाइयों की मृत्यु का बदला लेते। उनके रक्त से उस स्थान का तर्पण कर ही वे मेला देखने जाते।

तिलू रौतेली को मां की यह बात चुभ गई। अतः उसने कहा—मां, तुम्हारे पुत्र नहीं हैं तो मैं पुत्री तो हूं। मैं अवश्य ही अपने पिता और भाइयों की मृत्यु का बदला लूंगी।

इजा मैंण यू बीरु टीका लगावा साज सजावा
मैं तीलू बोलद जौंका भाई होला जैंकी बण होली
ओ रणखेतू जाला
बल्लू पहरी तु मुल्क जाइका धै लगैदे
वीरों की मृकुटी तनीं गे
तीलू रौतेली

(मां, तुम मुझे वीरों का टीका लगाओ। लोगों से पूछकर वह रणक्षेत्र बताओ, जहां मेरे भाई वीरगति को प्राप्त हुए थे। जिनके भाई-बहन होंगे वे अवश्य युद्ध करेंगे। बल्लू पहरेदार, तुम जाकर लोगों में अलख जगा दो। नए उत्साह के साथ नाचते-गाते आगे चलो।)

तिलू की दो सहेलियां बेल्लू और रक्की भी उसके साथ चलने को प्रस्तुत हो गई। उन लोगों ने कांडा का कौतिग का मेला बंद करा दिया। देवी देवताओं का पूजन कर और युद्ध के लिए तैयार होकर तिलू सखियों के साथ घर से निकल पड़ी। उनके साथ हाथ में तलवार लिए घेमडू हुड़क्कया भी था। तिलू ने हाथ जोड़कर देवी-देवताओं की मनोनी मानी कि यदि मैं रणक्षेत्र में विजयी होकर लौटी तो सोने का छत्र चढ़ाऊंगी।

तिलू ने अपना अभियान खैरागढ़ से प्रारम्भ किया। उसे जीतकर वह रमोली ग्वाल की ओर बढ़ी। इसके पश्चात उसने इड़िया मौन में कत्यूरों को पराजित किया और मेनदेवी

की स्थापना की। फिर उमरागढ़ी में बूंगादेवी की स्थापना कर वह सल्ड महादेव पहुंची। इस प्रकार एक के बाद एक स्थान पर अधिकार करते हुए उसने पूरे क्षेत्र को अपने नियंत्रण में ले लिया।

विजय मिल पर तिलू छिरीगे
बेल्लू देवकी रणखेलूरा यखी काम आईना
इतना मा शिब्बू पोखरियाल मदद लेके आइगे
जब शार्दूला लड़द-लड़द पहुंची गे कालिका खाल
सराई खेत आइगे घमसाण युद्ध
शार्दूला की मार से कत्यूरा रण छोड़ी भागीगे
यूं कत्यूरों का खून से तर्पण देईका कौतिक खेललो

(सल्ड महादेव से आगे बढ़ते हुए मिलंगजा भौन, चौखुटिया और देघाट में तिलू की टक्कर कत्यूरों से हुई। इन स्थानों पर भी विजयश्री उसी के हाथ रही, किन्तु भिलंगणा भौन में उसकी प्रिय सखियां बेल्लू और देवकी (रक्की) रणक्षेत्र में काम आई। यहां शिब्बू पोखरियाल भी उनकी सहायता के लिए आ पहुंचा। वहां से लड़ती-लड़ती वह सिंहनी कालिका खाल पहुंची। फिर सराई खेत में कत्यूरों से उसका घमासान युद्ध हुआ। उसकी मार के आगे वे टिक नहीं पाए और मैदान छोड़ भागे। इस प्रकार सिंहनी तिलू ने कौतिग के मेले में कत्यूरों के रक्त से अपने पिता तथा भाइयों का तर्पण किया।)

कांडा से तिलू अपने गढ़ डुमलों को लौट आई। किन्तु वह अधिक दिन तक चैन से नहीं बैठ पाई। कत्यूरों ने शक्ति संचय कर खैरागढ़ पर पुन: आक्रमण कर दिया। उधर बूंगी तथा पैनों के सरदारों ने भी विद्रोह कर दिया। तिलू रौतेली बूंगी और पैनों के सरदारों के विद्रोह को कुचलती हुई फिर खैरागढ़ जा पहुंची। नेगी सरदारों की सहायता से उसने कत्यूरों को एक बार फिर रणभूमि में धूल चटाई। वहां से वह विश्राम के लिए कांडा की ओर चल पड़ी।

जं रौतेली आगे बढ़ी गे
रणजीति सिंघणी दुबटा मां नहेण लगी गे
रामू रजवार घात पाईगे
राजुला तु रणचंडी छई
अपणों काम करीक नाम धरीगे
कौतिक जाईका खेलणो छयो खेली याले

(मार्ग में विजयी सिंहनी नयार नदी में स्नान करने के लिए उतरी। वहां रामू रजवार पहले से ही उसके लिए घात लगाए बैठा था। जैसे ही वह नदी के बाहर निकली, उसने

उस निहत्थो वीरनी पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार गढ़वाल की यह सिंहनी वीरगति को प्राप्त हुई।)

याद तौ की जुग-जुग रहली
तू साक्षी रैली खाटुली की देवी
तू साक्षी रैली सल्ड महादेव
तू साक्षी रैली पंचनाम देव
तू साक्षी रैली कालिका की देवी
तू साक्षी रैली लंगूरिया भैरों
तू अमर रैली तिलू सिंघणी शार्दूला
जब तक भूमि सूरज आसमान
तिलू रौतेली की तब तक याद रैली

(हे वीर सिंहनी तिलू रौतेली, जब तक भूमि, सूरज और चांद रहेंगे, तब तक युग-युग तेरी याद रहेगी। खाटुली की देवी, कालिका की देवी, सल्ड महादेव, पंचनाम देव और लंगूरिया भैरों तेरी अमर यश गाथा के साक्षी हैं।)

माही

[गुजरात और राजस्थान से लगे मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के धार, झाबुआ आदि जिलों में भील जनजाति का अच्छा-खासा जमाव है। ये तीर-कमान के प्रयोग में अत्यंत कुशल तथा बहुत अच्छे लक्ष्यभेदी होते हैं लेकिन अधिक सभ्य और आधुनिक अस्त्र-शस्त्र से सज्जित जातियों के सम्मुख ठहर पाना उनके लिए सम्भव नहीं। इसने उनके शौर्य के मानदंड को भी प्रभावित किया है, जिसका परिचय उनकी सामाजिक परम्पराओं तथा लोकगाथाओं में मिलता है।

इस जाति में अनेक गेय गाथाएं प्रचलित हैं जिन्हें झाड़-फूंक करने वाले 'भोपा' गाते हैं। उनकी सबसे अधिक लोकप्रिय गाथा माही नदी से सम्बंधित है।

भील माही को अत्यंत पवित्र मानते है और उसकी पूजा करते हैं। किंवदंती के अनुसार माही नदी की उत्पत्ति उज्जैन के राजा इन्द्रद्युम्न के पसीने से हुई है। भीलों में उसकी उत्पत्ति के सम्बंध में एक और ही कथा है। उनका विश्वास है कि माही नदी किसी समय सुंदर गूजर युवती के रूप में थी। एक दिन अपने श्वसुर की लोलुप दृष्टि से बचने के लिए वह दही बिलोने के पात्र में कूद पड़ी। उसमें वह तत्काल जलधारा के रूप में परिवर्तित हो गई और पर्वतों को चीरती हुई आगे बढ़ती गई। समुद्र में जाकर ही उसने दम लिया। भीलों के लिए उसका यह शौर्य निश्चित ही प्रेरणादायक है और यह प्रकट करता है कि अपनी निजी मान्यताओं के बावजूद वे सतीत्व रक्षा को काफी महत्व देते हैं।

इस कथा में कहीं-कहीं पाठ भेद भी है। कुछ स्थानों पर लोलुप श्वसुर न होकर गूजर युवती का लोलुप प्रेमी होता है जिससे बचने के लिए वह बिलोवन में कूदती है। कथा गीतों की भाषा में गुजराती और मालवी का काफी पुट मिलता है। गुजराती का उसमें बिगड़ा हुआ रूप मिलता है। उच्चारण में 'स' का 'ह' और 'च' का 'स' हो जाता है। उक्त क्षेत्र की स्थिति को देखते हुए यह स्वाभाविक भी है।]

एक गूजर युवती थी, अत्यंत सुंदर। एक दिन वह अपनी काली और भूरी गायों को दुह रही थी। तभी उसकी सास वहां आ पहुंची। गूजर युवती दूध दुहने का काम पूरा कर सास के साथ पानी भरने गई।

कालूड़ी ने भूरीधावेड़ाते, गुजरेडी
कालूड़ी ने भूरी धावेड़ाते
हाउड़ी ने बउड़ी पानी साल्या, गुजरेडी
हाउड़ी ने बउड़ी पानी साल्या

युवती की बगल में चांदी का घड़ा था। उसके दाएं हाथ में सोने की चूमनी (ईंडुनी) लटक रही थी। वह नदी के तट पर पहुंची। वहां उसने चूमनी को चम्पा की डाल में लटका दिया। पानी भरने के लिए घड़े को तट पर रखा।

कारवा मा लिदा है रूपा बेबड़ा, ओ गुजरेडी
हाथा मा लिदा है सुना सुमलो
बेवड़या तो मेल्या सावर पाले, ओ गुजरेडी
सुमलो मेल्यी है चम्पा डाले

(पानी भर कर युवती सास के साथ घर लौटी। उसने घड़े को सोने की घड़ोंची पर रख दिया। इसके बाद वह गौशाला के पास नित्य की भांति दही बिलौने लगी। दही का बिलौना मटके में तेजी से घूमने लगा।)

बेड़ला भरी ने पासां फर्या, ओ गुजरेडी
बेड़ला भरी ने पासां फर्या
बेड़ला मेल्या हे सुग्ना पलेंडी
गांया ना बेड़ा मा गोला घुमे, ओ गुजरेडी
गांया ना बेड़ा मा गोला घुम
ससराजी आना लेना आया, ओ गुजरेडी
लीदी बावलिया न ह्वे ओ गुजरेडी,
लीदी बावलिया ना ह्वे।

(इसी समय उसे ले जाने के लिए श्वसुर आ पहुंचा। गूजरी दही बिलौने में इतनी व्यस्त थी कि उसे श्वसुर के आगमन का पता ही नहीं चला। वह देख ही नहीं पाई कि कब वह द्वार के पास आकर खड़ा हो गया। अचानक दृष्टि उठने पर वह उसे देखकर सकपकाई-सी रह गई। वह उसकी ओर अपनी लोलुप दृष्टि गड़ाए हुए था।)

युवती का ध्यान अब अपने शरीर की ओर गया। उसकी ओढ़नी सिर से खिसक गई थी। दही बिलौने में वह इतनी व्यस्त थी कि उसे अपनी अर्ध-नग्न अवस्था का ध्यान ही नहीं था। हे भगवान! अब वह क्या करे। इस समय सिर पर कपड़ा खींचना भी कठिन है। उसमे भी कठिन है बूढ़े की लोलुप दृष्टि को सहन करना। लाज के मारे वह अधमरी हो गई सहसा उसके मस्तिक में कुछ कौंधा और वह तत्काल उस बिलोवन के पात्र में कूद गई।

गूजरी को नारी से जल की धार में परिवर्तित होने में क्षणभर की भी देर न लगी। मटका फोड़कर वह आगे बह चली। मार्ग में पर्वत आड़े आए लेकिन वह उन सभी को

तोड़ती हुई आगे बढ़ती गई। न उसने आगा देखा न पीछा, सीधे खारे समुद्र तक पहुंच कर ही दम लिया।

बड़ा-बड़ा परवत फोड़ी नाख्या, ओ गुजरेडी
बड़ा-बड़ा परवत फोड़ी नाख्या
आड़याना बाइड़ा आड्या फेर्या, ओ गुजरेडी
गई तो कां वा खारे समंदर

मही (दही) के मटके में से बहकर निकलने के कारण उसका नाम माही पड़ गया। इस प्रकार उक्त युवती ने अपने सतीत्व की रक्षा की। एक अबला नारी के लिए यह शौर्य की बात नहीं, तो और क्या है।

मियांनाथ

[जम्मू प्रदेश में बोली जाने वाली डोगरी या डुग्गर में वीरगाथा को 'बार' कहा जाता है। यह शब्द 'वीर' का ही बिगड़ा रूप जान पड़ता है। इसका बहुवचन है 'बारा'। बार का सम्बंध उक्त प्रदेश के राजनीतिक उत्थान-पतन से न होते हुए भी उनमें प्रायः मध्यकालीन वीर पुरुषों की शूरवीरता की पद्य रूप में गाथाएं रहती हैं। उनमें देशप्रेम और प्यार की झलक भी मिल जाती है। गाथाओं में घटनाओं की ही प्रधानता रहती है और वे श्रोताओं पर अपना सांस्कृतिक प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहती।

डोगरी की इन 'बारा' या वीरगाथाओं को प्रायः 'दरेस' गाते हैं जो अरबी के दरवेश (फकीर) शब्द का अपभ्रंश है। गाने में वे एक विशेष वाद्य को काम में लाते हैं जिसे 'तुम्बा' कहते हैं।

'बारा' में मियांनाथ, रामसिंह पठानियां, राजा जगता, राजा किरपाल देव, राजा रणजीत देव आदि की गाथाएं विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें भी मियांनाथ की गाथा काफी लोकप्रिय हैं। मियांनाथ बाहु राज्य के शासक सामंत किरपालदेव (1660-1675) का मंत्री था। वह उदार और राजभक्त होने के साथ-साथ तलवार का भी धनी था।]

सत्रहवीं शती की बात है, डुग्गरप्रदेश के बाहु नामक राज्य में किरपाल देव नाम का एक शक्तिशाली सामंत शासन करता था। किरपाल देव के चार पुत्र थे—नंद देव, अग्रदेव, घमंडदेव तथा पुष्प देव। नंद देव इनमें ज्येष्ठ होने के कारण युवराज भी था।

किरपाल देव के मंत्री का नाम था मियांनाथ। उसके सद्गुणों के कारण प्रजा उसे बहुत चाहती थी। साथ ही वह तलवार का भी धनी था और अपनी तलवार को प्राणों से भी अधिक प्यार करता था। इससे अन्य दरबारी मियां नाथ से मन-ही-मन भारी द्वेष करते थे।

कुछ दरबारियों ने मिलकर सामत किरपाल देव को भड़काया कि मियांनाथ अपनी तलवार के आगे किसी को कुछ समझता ही नहीं है, यहां तक किरपाल देव को भी। इसलिए किरपाल देव को उसकी वह तलवार उससे ले लेनी चाहिए। किरपाल देव उनके भड़काने में आ गया। उसने मियां नाथ को बुलाया और उससे उसकी तलवार मांगी। मियांनाथ दरबार से यह कहकर उठ आया कि तलवार युद्ध क्षेत्र में दी जाती है, जिसमें साहस और शक्ति हो वह युद्धक्षेत्र में उससे ले ले।

मियांनाथ ने अब बाहु राज्य में और रहना निरापद नहीं समझा। वह उसे छोड़कर जसरोटा जा पहुंचा। जसरोटा में उन दिनों राजा ध्रुवदेव शासन करता था। वह किरपाल देव के अधीन था। किन्तु साथ ही वह वीरों का सम्मान भी करता था। किरपाल देव की नाराजगी की परवाह न करके उसने मियां नाथ को अपने यहां शरण दे दी। जसरोटा में एक अन्य वीर अमर सिंह जन्द्राही पहले से ही था। मियांनाथ और उसके बीच मैत्री-सम्बंध स्थापित हो गए तथा दोनों मित्र प्रेमपूर्वक हिलमिलकर वहां रहने लगे।

कुछ दिनों बाद मियांनाथ और जन्द्राही ने राजा ध्रुवदेव को परामर्श दिया कि वह बाहु राजा के विरुद्ध विद्रोह का झंडा खड़ा कर स्वयं को उसकी अधीनता से मुक्त कर ले। राजा ध्रुवदेव ने ऐसा ही किया। उसने बाहु को वार्षिक कर भेजना बंद कर दिया और जसरोटा को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया।

किरपाल देव को ध्रुवदेव के इस आचरण पर क्रोध आना स्वाभाविक था। उसने जसरोटा पर आक्रमण के लिए एक बड़ी सेना भेज दी। ध्रुव देव ने उसका सामना करने के लिए दीनानगर के प्रशासक दीनाबेग से सहायता मांगी। दीनाबेग ने उसकी सहायता के लिए कुछ सेना भेज दी। उधर जब किरपाल देव ने दीनाबेग से सहायता का अनुरोध किया तो उसने अपना एक तोपखाना उसकी सहायता के लिए भेज दिया।

मियांनाथ दीनाबेग की चाल को ताड़ गया। वह बाहु और जसरोटा के सामंतों को लड़ाकर स्वयं उन के राज्यों को हड़पना चाहता था। इसके लिए वह वर्षों से आंखें लगाए हुए था। उस के विचार से अब इसका उपयुक्त अवसर मिल गया था।

जब दोनों सेनाएं आमने-सामने आईं तो मियांनाथ घोड़े पर सवार हो उनके बीच जाकर खड़ा हो गया। उसने ललकारा—है कोई ऐसा योद्धा जो युद्ध के मैदान में मुझसे मेरी तलवार छीन सके ?

किरपाल देव का कोई भी योद्धा मियांनाथ की तलवार छीनने आगे नहीं आया। तब किरपाल देव ने मियां नाथ के पुरोहित ब्राह्मण अभय को मियां नाथ का सामना करने का आदेश दिया :

आपूं राजे हुकुम कराया
अभे ब्राह्मणेंगी फरमाया
धन्न ब्रह्मा ने टेआ जमदी माई
छोड़ेयां घोड़ा रणै च जाई
खड़ा मियां नाथ जायो नाई
दाबै गीर खड़ोते आई

नाथ मियां पैरे पैंदा जाई
करो जा बार साड़े पर आई
सील बचन करदा नाथें ताई
तुलकी बरछी दस्तैया ठाई,
मिलिये नाथें दे तन लाई
नाथ मियां ढाल्ला लैंदा जाई
दुई होर नाथें दे लाई
त्री होर नाथें दे लाई
चौथी बारी नाथें दे लाई
पगड़ी तलवार दस्तैया ठाई
मिलियें ब्राह्मणें दे तन लाई
बैठी विच लक्कें दे जाई
तेग बहादुर नाथ मियें नैं
बाली मार गिराई

(तब राजा ने अभय ब्राह्मण को आदेश देते हुए कहा कि हे ब्राह्मण देवता, आप घोड़े पर सवार होकर युद्ध क्षेत्र में जाइए, जहां मियां नाथ खड़ा है और उसकी तलवार छीनकर ले आइए। फलस्वरूप अभय ब्राह्मण मियां नाथ के सामने पहुंचा। मियां नाथ ने ब्राह्मण देवता के चरण छुए और विनयपूर्वक उससे वार करने को कहा। अभय के पहले वार को उसने ढाल पर ले लिया दूसरे और तीसरे वार के साथ भी ऐसा ही किया। जब अभय ने चौथी बार वार किया तो मियां नाथ ने तलवार पकड़कर उस पर जवाब में ऐसा वार किया कि तलवार उसके शरीर में घुस गई। एक वार में मियां नाथ ने अभय को ऐसे गिरा दिया जैसे राम ने एक ही बाण में बाली को मार गिराया था।)

अभय के खेत रहने पर किरपाल देव ने राम गढ़ के राजपूत सरदार मियां गाढ़ा को मियां नाथ का सामना करने को कहा। मियां गाढ़ा अपने चौदह सैनिकों के साथ आगे बढ़ा। सबसे पहले दयाराम ने मियां नाथ पर आक्रमण किया, लेकिन मियां नाथ ने शीघ्र ही उसे रणभूमि में सुला दिया। इसके बाद उसने मियां टोढू को धराशाही किया और फिर मियां गाढ़ा को भी अपनी तलवार से सदा के लिए सुला दिया। मियां गाढ़ा के मरते ही उसके शेष साथी मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए। किरपाल देव ने किसी प्रकार उन्हें उत्साहित कर पुनः रणभूमि में भेजा। मियांनाथ लड़ते-लड़ते काफी थक चुका था। फिर उसने उनमें से चार सैनिकों को ठिकाने लगा दिया और शेष भाग निकले :

आपूं राजै हुकुम कराया
काले मियें गी फरमाया

शेर दा घोड़ा रंग च जाई
खीर बल करदा नाथें नाई
बारी दयारमे दी आई
पगड़ी तलवार दस्ते उठाई
पगड़ी तलवार दस्ते उठाई
तुलकी नाथै दे तन लाई
दुइ बारी नाथै दी आई
पगड़ी तलवार दस्ते उठाई
मिलिये दयाराम दे लाई
नाथ झलदा खब्बै मुंडै जाई
नस्से आ ठोढू तेंगा पाई
खबर तेरी मियां नाथै आई
ऊ ए केड़ी बरछी पुट्ठ चलाई
बैठी विच कयाड़ी आई
सुट्टेआ घोड़े खल्लने आई
खोरे भाई गाढ़ेया जायां नाई
खोरे भाई गाढ़ेया जायां नाई।

मियां गाढ़ा का काम तमाम होने के बाद राजा किरपाल देव ने मियां नाथ के सगे भाई मियां साबू को अपने भाई के साथ द्वन्द्व के लिए भेजा। उसे स्वामी के आदेश का पालन करना ही पड़ा :

आपूं राजे हुकुम कराया
मियें साबू गी फरमाया
धन मियां साबू जमदी माई
शेर दा घोड़ा रण बिच जाई
नाथ मियां मियें गल्ल मलाई
मिलबै साबू जाया नाई
पगड़ी-तलवार दस्ते उठाई
मिलिये साबू दे तन लाई
बैठी साबू मत्थै जाई
दुई होर साबू दे लाई
बैठी डौले उप्पर जाई
चौथी होर साबू दे लाई।

मियां नाथ ने जब अपने ही भाई को युद्धक्षेत्र में उतरते देखा तो उसे उस पर प्रहार करना उचित नही लगा। द्वन्द्व में उतरने से पूर्व उसने साबू से कहा कि मेरे मरने के बाद मेरी तलवार का सम्मान करना।

मियां साबू के वारों से मियां नाथ गम्भीर रूप से घायल हुआ। यों भी वह काफी थका हुआ था। उसने रणभूमि में ही प्राण त्याग दिए। मियां नाथ को मार कर मियां साबू जब राजा के पास उसे प्रणाम करने पहुंचा तो राजा ने उससे मियां नाथ की तलवार मांगी।

मियां साबू ने तलवार म्यान से बाहर निकाला। उसे हवा में लहराते हुए बोला — यह तलवार केवल रणक्षेत्र में ही मिल सकती है।

जीऊणा अपनी लूट का माल प्राय: कडियाल के एक साहूकार काशीराम को बेच देता था। उसके सिर पर बड़े इनाम की घोषणा सुनकर काशीराम के मुंह में पानी भर आया। उसने उसे पकड़वाने के लिए पुलिस का जाल भी फैलवाया लेकिन एक बुढ़िया के द्वारा समय से सावधान कर देने से उस जाल में फंसने से बच गया। इसके बदले उसने बाद में काशीराम की पिटाई कर लिया।

कुछ दिन बाद जीऊणा ने दौले आल गांव से एक बहुत बढ़िया घोड़ी खोलकर उड़ा ली। उसने रस्सी पकड़कर जो खींची तो खूंटा भी साथ ही उखड़ आया और उछलकर जीऊणा की नाक पर जा लगा। इससे उसकी नाक पर घाव हो गया और निशान पड़ गया। घोड़ी पर सवार हो जीऊणा सीधे डोगर के गांव पहुंचा और उसे घर से बाहर निकलने की चुनौती दी।

डोगर भी अपने को कम बहादुर नहीं समझता था। वह तत्काल बंदूक हाथ में लेकर बाहर आ गया। उसे देखते ही जीऊणा बोला—"डोगर, अब तू मरने के लिए तैयार हो जा, सच्चा सूरमा न किसी के साथ विश्वासघात करता है और न किसी को धोखे से मारता है। मैं तुझे पहले वार करने का अवसर देता हूं।"

डोगर ने क्रोध में गोली चलाई। जीऊणा की घोड़ी नीचे बैठ गई और गोली जीऊणा के सिर के ऊपर से निकल गई। डोगर ने फिर निशाना साधा। जीऊणा इस बार भी उसका वार बचा गया। अब जीऊणा की बारी थी। एक ही निशाने में उसने डोगर को यमलोक पहुंचा दिया। डोगर के घर में रोना-पीटना मच गया। किशना का बदला ले जीऊणा तत्काल वहां से नौ-दो-ग्यारह हो गया। सूचना पाकर बलाढ़ से पुलिस वहां पहुंची, लेकिन शिकार हाथ से निकल चुका था।

अब जीऊणा पक्का डाकू बन चुका था। वह प्राय: बरातों को लूट लेता। फिर जब उसे लड़की वालों की या लड़के वालों की बेबसी का पता चलता तो न केवल वह सभी लूटे हुए गहने लौटा देता बल्कि अपने पास से सहायता के रूप में हजार-पांच सौ रुपये दे देता। इससे क्षेत्र के लोगों में उसके प्रति सहानुभूति पैदा हो गई थी। वे प्राय: कहते—"जीता रह जीऊणा मोड़, भाई हमारा।"

एक दिन जीऊणा ने राजा हरिसिंह के महल में घुसकर उसकी खास घोड़ी उड़ा ली। चलते-चलते संतरी से कहता गया—"जाकर अपने राजा से कह देना कि तुम्हारी घोड़ी जीऊणा ले गया। राजा को उसका यह आचरण बहुत बुरा लगा। उसने बड़ी संख्या में अपने सिपाही उसे पकड़ने के लिए लगा दिए। आखिर सिपाहियों ने उसे सोते हुए पकड़ लिया। पुलिस के घेरे में आ जाने पर जीऊणा हंसकर बोला—

हस्स के जीऊणा आखदा घोड़ी बड़ी कमाल
बक्की सांभलाओ आपदी मैं देखी दी चाल

(यह घोड़ी बड़े कमाल की है। इसे सम्भाल लो। मैं तो सिर्फ इसकी चाल देख रहा था।)

सिपाहियों ने घोड़ी के साथ-साथ जीऊणा को भी बंदी बना लिया और जेल में डाल दिया। अगले दिन राजा स्वयं उससे मिलने पहुंचा। जीऊणा से उसका हाल पूछने लगा।

जीऊणा बोला—"राजा, अपने कैदियों के लिए लोहे के पिंजरे बनवाओ। ऐसी जेल से तो वे कभी भी भाग सकते हैं।"

राजा उसकी बात पर हंस पड़ा। कहने लगा—"अच्छा भागकर दिखाओ। हम भी तो देखें कि इतने सख्त पहरे, सीखचों तथा ऊंची दीवारों को फांद कर तुम कैसे भागते हो।"

उसी रात जीऊणा जेल से भाग निकला।

एक बार एक ब्राह्मण अपनी लड़की को उसकी ससुराल से लेकर आ रहा था। रास्ते में बदमाशों ने उसे घेर लिया। लड़की चीख-चीख कर रोने लगी। दैवयोग से उसी समय जीऊणा उधर से गुजर रहा था। चीख-पुकार सुन कर वह घटना-स्थल पर जा पहुंचा और बदमाशों को ललकारने लगा।

एक बदमाश बोला—"तू कौन होता है बीच में आने वाला ?"

"मैं हूं तुम्हारा बाप जीऊणा मोड़," जीऊणा गरज उठा।

जीऊणा का नाम सुनते ही बदमाश थर-थर कांपने लगे। जीऊणा ने जूते मार कर उन्हें छोड़ दिया और ब्राह्मण तथा उसकी लड़की को अपने संरक्षण में उनके घर पहुंचा दिया। ब्राह्मण ने उसे सौ-सौ आशीर्वाद दिए। ब्राह्मणों का रक्षक कहकर उसका यश गाया जाने लगा।

जीऊणा मोड़ साध गऊ गरीब दी करे सेवा
सब्बो खाना दी अलख मुकांवदा जी
जेड़े बादशाह दे घर करे चोरी
पर्चा छाप के पहलां लगांवदा जी
शीहनी मां ने जम्मेया शेर जीऊणा
नहीं लुक्क के वक्त लंघावदा जी

(जीऊणा मोड़ साधु, गाय और गरीबों की सेवा करता है। वह बड़े-बड़े अकड़वालों के अहंकार को तोड़ता है। बादशाह के घर में चोरी करने से पहले पर्चे छपवाकर लगाता है। शेरनी मां ने जीऊणा शेर पैदा किया है। वह छिपकर जिन्दगी के दिन नहीं काटता।)

एक दिन जीऊणा मोड़ ने सोचा कि देवी सदा उसकी रक्षा करती रहती है, अत: देवी के दर्शन करना चाहिए। उसने चारों ओर खबर फैला दी कि वह नैनादेवी के मंदिर में दर्शन करने जाएगा और मां पर सोने का छत्र चढ़ाएगा। साथ ही उसने पुलिस को भी चुनौती दी कि यदि उसमें दम हो तो पकड़ ले।

मंदिर में जाने के लिए उसने साधु का वेश धारण किया और पुलिस की आंखों में धूल झोंककर रेलगाड़ी पर सवार हो गया। मार्ग में आनंदपुर साहब के गुरुद्वारे में उसने दसवें गुरु के निमित्त सवा सौ रुपये का चढ़ावा चढ़ाया। वहां से वह नैनादेवी के मंदिर में पहुंचा। उस समय पुलिस चारों ओर से मंदिर का घेरा डाले पड़ी थी। जीऊणा उसकी आंख बचाकर अंदर पहुंच गया और सोने का छत्र चढ़ाकर देवी के दर्शन किए।

दुर्भाग्य से जब वह वहां से लौट रहा था तब उसके नाक के निशान ने उसे धोखा दे दिया। पुलिस ने उसे पहचान लिया। जीऊणा ने भाग निकलने का प्रयत्न किया लेकिन घेरा कड़ा था और उससे बच निकलना असम्भव था। जीऊणा ने अपना चिमटा चलाकर दस-पांच पुलिसजनों को जमीन पर लिटा भी दिया, किन्तु अंत में वह पकड़ा गया। चारों ओर खबर फैल गई कि किशना डाकू का भाई जीऊणा पकड़ा गया। लोग सुनकर हक्के-बक्के रह गए।

जीऊणा को फांसी की सजा हुई। फांसी देने की तारीख आठ दिन बाद की निश्चित हुई। जीऊणा की बहन गोविंदा ने अपने भाई की ओर से बड़े लाट तक मुकदमा लड़ा लेकिन उसकी एक न चली। फांसी का दिन भी आ पहुंचा। अफसर ने कहा कि जो चाहे खा-पी ले आखिरी बार जिससे मिलना चाहे, मिल ले।

जीऊणा बोला—"हम सिर्फ खाने-पीने के लिए ही इस जग में नहीं आए हैं। दुनिया याद रखेगी कि भाई-भाई की बांह होता है। रही बात मिलने की सो जिसके चित्त में तड़प होगी, वह स्वयं मिलने आएगा।"

अंतत: सबको सत सिरी अकाल कहता हुआ जीऊणा मोड़ फांसी के तख्ते पर झूल गया। उस समय उसके चेहरे पर न कोई घबराहट थी और न. एक भी शिकन। उसकी

मृत्यु से सबसे अधिक दुख उसकी बहन गोविंदा को हुआ। वह विलाप करती हुई कहने लगी—

बे तीयां दे दिन कीनूं उडीकांगो
कौन भेजूगा संधोर वे मेरेया सूरमेआ वीरा

(ओ मेरे सूरमा भाई, तीज के दिन मैं किसकी प्रतीक्षा करूंगी ? कौन मुझे सिधारा भेजेगा ?)

जीऊणा मोड़ चला गया लेकिन पंजाबी महिलाएं अब भी उसे याद करती हुई कहती हैं—

मावें घर-घर पुत्त जम्मदे
जीऊणा मोण न किसे बण जाणा

(घर-घर माएं पुत्रों को जन्म देती हैं, लेकिन जीऊणा मोड़ कोई नहीं बन सकता।)

कारायल-कपूरी

[गुजराती लोकसाहित्य अत्यंत समृद्ध होने के साथ-साथ उसमें भारी विविधता भी है। यह विविधता बोली-भेद के कारण तो है ही, प्रत्येक जाति का भी अपना अलग लोक साहित्य है। इस लोक साहित्य में पिछले लगभग एक हजार वर्ष की लोक परम्पराएं और लोक संस्कृति सुरक्षित हैं।

जहां तक शौर्य गाथाओं का सम्बंध है, गुजराती रचनाओं पर राजस्थान के डिंगल में रचित चारण साहित्य का स्पष्ट प्रभाव है। सोलहवीं शती तक गुजरात और राजस्थान की भाषा एक ही थी। अतः राजस्थान के अनेक चारण कवियों को गुजराती का कवि भी स्वीकार किया जाना स्वाभाविक है। गुजराती में चारणी साहित्य का प्रारम्भ सोलंकी काल से माना जाता है। मावल वासड़ा उसके आदि चारण कवि समझे जाते हैं जो मूलराज सोलंकी के समकालीन थे। जैनाचार्य हेमचन्द्र, मेरुतुंग आदि की गणना भी उन कवियों में होती है। दूमल, रामचन्द्र, आनंद-करमानंद, कच्छ के बीजल, दुदो तथा सोमंग, उदयसिंह, प्रेमचन्द आदि ने भी डिंगल कवियों का अनुसरण किया और अनेक प्रबंध काव्यों की रचना की।

अनेक चारण कवि लोक से जुड़े रहे और उनकी रचनाओं में आम लोगों के वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन है। ऐसे अनेक कवि अज्ञात हो रहे लेकिन अब उनकी रचनाएं लोक साहित्य की धरोहर बन चुकी हैं। कच्छ के वीर कारायल और सती कपूरी की गाथा एक ऐसी ही गाथा है।

कारायल और कपूरी की गाथा दसवीं शती की है। उस समय की काठी सत्ता समा वीरों के उन्मूलन में लगी हुई थी। क्षेत्र में फैली अराजकता के कारण अनेक काठी श्रीमतों ने अपने खजाने भूमि में छिपा दिए थे। उधर सिंध में भी समा सरदारों और सूमराओं के बीच लड़ाई छिड़ गई थी। अनेक समा सरदार सिंध छोड़कर कच्छ और पश्चिम क्षेत्रों में आ बसे थे।]

विक्रम की दसवीं शती की बात है। सूमराओं के साथ निरंतर संघर्ष चलते रहने के कारण नारायण समा नामक सरदार सिंध छोड़कर कच्छ प्रदेश के कुनरीया गांव में आ बसा था।

नारायण समा को सभी सुख प्राप्त थे, दुख था तो केवल यही कि उसके कोई पुत्र न था। पुत्र न होने के कारण नौकर-चाकर भी प्रातः उठकर उसका मुख देखना पसंद नहीं करते थे। नारायण ने अनेक उपाय किए, किन्तु उनका कोई फल नहीं निकला। तभी उसे चित्राणा पहाड़ी पर तप कर रहे एक योगी चित्रनाथ के बारे में जानकारी मिली। वह भागा-भागा योगी के पास गया और उससे अपना दुख कह सुनाया।

योगी को नारायण की दशा पर दया आ गई। उसने उससे सामने के आम्रवृक्ष पर से एक फल तोड़कर लाने को कहा। नारायण जब उक्त वृक्ष के पास पहुंचा तो उसके मनमें विचार आया कि क्यों न एक के बजाय दो आम तोड़ लूं। उसने ऐसा ही किया। एक आम अपनी झोली में रख लिया और दूसरा हाथ में लेकर योगी के पास पहुंचा।

चित्रनाथ से उसकी यह चालाकी छिपी न रह सकी। उसने कहा—"सभा सरदार, अपने हाथ का यह फल ले जाकर अपनी पत्नी को खिला दे। तेरी इच्छा पूर्ण होगी। लेकिन आम तोड़ते हुए तेरे मन में चोरी का विचार आया था इसलिए तेरा बेटा लूटमार कर अपना जीवन यापन करेगा।"

नारायण ने हाथ जोड़कर अपने कृत्य के लिए छमा मांगी और बोला—"महाराज; यह दोष मेरा है। लेकिन फिर भी मेरी बगिया फलेगी वह भी मेरा अहोभाग्य होगा।" वह ऐसा कहकर अपने घर को लौट गया।

योगी के वचनों के अनुसार कुछ समय बाद नारायण के घर पुत्र ने जन्म लिया। पूत के पांव पालने में ही दिखाई दे जाते हैं। कुमार ने भी अपने गुणों को बचपन से ही प्रकट करना प्रारम्भ कर दिया। वह न केवल सुंदर ही था, वरन् उसमें उदारता के गुण भी भरपूर थे। पिता ने उसका नाम कारायल रखा।

धीरे-धीरे कारायल बड़ा हुआ। उसका हाथ बचपन से ही खुला हुआ था, अतः दान-पुण्य में सारी सम्पत्ति स्वाहा हो जाने से परिवार के सामने भारी आर्थिक कठिनाई आ खड़ी हुई। इससे पार पाने के लिए कारायल ने एक नया मार्ग अपनाया। जब भी अवसर मिलता, वह सिंध प्रदेश के सूमरा क्षेत्र में डाका मार आता। साथ ही कुमार ने दोनों हाथों से सम्पत्ति लुटाने की अपनी परम्परा कायम रखी।

क्रमशः कारायल का साहस इतना बढ़ गया कि उसने सिंध के बांभणासर राज्य के बादशाह का खजाना लूट लिया। बादशाह को अपना खजाना लुटने पर भारी क्रोध आया और उसने लुटेरे को पकड़ने के लिए अपने सिपाही दौड़ाए। पैरों के निशानों का अनुगमन करते हुए वे नारायण सभा के घर तक जा पहुंचे। वे कारायल की वीरता के कारनामे सुन चुके थे। अतः उनकी हिम्मत न तो कारायल को पकड़ने की हुई और न नारायण से उसकी शिकायत करने की। पीछे लौटकर उन्होंने बादशाह को उसके चोर के बारे में जानकारी दे दी। बादशाह ने तत्काल नारायण को आदेश भिजवाया कि वह अपने डाकू पुत्र को देश से बाहर निकाल दे।

नारायण स्वयं अपने पुत्र के कारनामों से बहुत परेशान था। उसके बार-बार समझाने का भी कोई परिणाम नहीं हो रहा था। बादशाह का आदेश उसके काम आया।

उसने कारायल को उसके बारे में बताया। कारायल उसे सुनकर जरा भी विचलित नहीं हुआ और अपने कुछ चुने हुए संगी-साथियों को लेकर उसी समय घर से निकल पड़ा।

कारायल सबसे पहले चित्राणा पहाड़ी पर योगी चित्रनाथ के पास पहुंचा जिसके आशीर्वाद से उसका जन्म हुआ था। योगी उसे देखते ही पहचान गया। कुमार ने उससे आशीर्वाद मांगा। योगी ने उसे एक कवच दिया और कहा कि जब तक यह यंत्र तुम्हारे पास रहेगा तब तक कोई तुम्हारा बाल-बांका नहीं कर सकेगा।

वहां से चलकर कारायल ने कच्छ के रण के किनारे लखगुय की पहाड़ी पर डेरा डाला। यह स्थान हर दृष्टि से उसे अपने निवास के लिए उचित लगा। यहां से लूटमार के अभियान आयोजित कर उसने सिंध और कच्छ दोनों में आतंक फैला दिया। लेकिन उसका नियम था कि उसका कोई साथी किसी अबला की ओर कुदृष्टि न डाले, साथ ही केवल अमीर को ही लूटा या मारा जाए, गरीब की ओर उंगली भी न उठाई जाए।

कारायल के निवास-स्थान के पास ही भांजड़ी पहाड़ी थी जहां अजरराम नामक प्रख्यात लुटेरा रहता था। आस-पास के पूरे क्षेत्र में उसका आतंक था। एक बार वह थार प्रदेश में लूटमार कर लौट रहा था। ज्येष्ठ की दोपहरी थी। प्यास से उसके और उसके साथियों के गले सूख रहे थे। मार्ग में एक चरागाह देखकर वह ठहर गया। उक्त चरागाह साओ संधार नामक एक धनी व्यक्ति का था। साओ संधार के पास अपार पशु-सम्पत्ति थी और उस काल में इस क्षेत्र में पशुधन ही सबसे बड़ा धन समझा जाता।

संतान के नाम पर साओ संधार के एक ही कन्या थी, जिसका नाम कपूरी था। उसने अपने पिता के पशुओं को खिलाने-पिलाने का काम अपने कंधे पर उठा रखा था। वह अनिंद्य सुंदरी थी। उसकी आयु केवल सोलह-सत्रह वर्ष की रही होगी किन्तु अच्छा खाने-पीने और कठोर परिश्रम करने के फलस्वरूप वह बीस वर्ष की पूर्ण युवती जैसी लगती थी।

जिस समय अजरराम वहां पहुंचा, कपूरी कुंए पर ही खड़ी पशुओं को पानी पिलाने के लिए चरस द्वारा पानी खींच रही थी। चरस भी छोटा-मोटा न था, उसे कुंए में से खींच पाना अच्छे-अच्छे जवानों के बस की बात नहीं थी। कपूरी के लिए यह एक खेल जैसा था। अजरराम ने उसे इस मुद्रा में देखा तो ठगा-सा खड़ा रह गया। कुछ समय के लिए वह अपनी प्यास तक को भूल गया।

वहीं पास में एक जंगली घोड़ी छाया में विश्राम कर रही थी। अजरराम की दृष्टि उस पर पड़ी। कपूरी पर अपने बल का सिक्का जमाने के लिए उसने अपने तरकस से एक तीर निकालकर कमान पर चढ़ाया और घोड़ी को उसका निशाना बनाकर ढेर कर

दिया। कपूरी उसके इस कार्य से जरा भी प्रभावित नहीं हुई। उलटे उसे इससे चिढ़ हो लगी, हालांकि उसने अजरराम से कुछ कहा नहीं और शांतिपूर्वक अपना कार्य करती रही।

घोड़ी पर अपना बल आजमाने के बाद अजरराम कपूरी के पास पहुंचा और उससे पानी पिला देने को कहा :

कुंजलड़ी कपूरी नजर करेनेन्यार
थरतु थकी आवेआ पाजी मिठो पियार

ओ कुंजकली जैसी कपूरी, तू जरा इधर तो देख। थार प्रदेश मे थककर लौटे पथिक को मीठा पानी पिला दे।

कपूरी ने उसे दो टूक जवाब दिया—"पाणी पातारा सिजे कढ़े से पीए (इस कुंए का पानी जो खींचकर बाहर निकालेगा, वही उसे पी सकता है) पानी पीना है तो यह ढोरों के लिए कुंडी में भरा रखा है, इसे खुशी से पीले। कुंए का पानी चाहिए तो उसे तो खींचकर निकालने पर ही पिया जा सकता है।"

कपूरी के व्यंग्य वाक्यों को सुनकर अजरराम का स्वाभिमान जाग उठा। वह उसी क्षण कुएं के जगत पर चढ़ गया और चरस हाथ में लेकर उसे कुएं में नीचे उतारने लगा। उल्लेखनीय है कि कपूरी ने उसी व्यक्ति से विवाह करने की प्रतिज्ञा की थी जो चरस में पानी भरकर कुएं से बाहर खींच सके।

चरस में पानी भर जाने पर अजरराम ने बल लगाकर उसे कुएं से बाहर निकालने का प्रयास किया, वह उससे एक हाथ ऊपर भी न खिंच सका। अजरराम पसीने से लथपथ हो गया। अवसर देख कपूरी ने उस पर व्यंग्य कसा :

ऊजर तुं अनोट, पुर पछाड़े रोझड़ी
डई चडे को चोट, बार कटीने न्यार तुं

हे अजर, तूने उस गरीब घोड़ी को जमीन पर पटक दिया लेकिन अब अगर इस चरस को कुएं से बाहर निकालकर दिखाओ तो हम तेरी वीरता को देखे।

कपूरी का यह व्यंग्य अजरराम के अंतर में तीर की भाँति चुभ गया। उसने एड़ी-चोटी का बल लगाया लेकिन चरस कुएं से न निकला। लाचार होकर वह कुएं से नीचे उतर आया। वीर की तरह अकड़कर वह कुएं पर चढ़ा था और बिल्ली की तरह दुम दबाकर पीछे आ गया।

अजरराम की भाँति अन्य अनेक युवक भी कपूरी को पाने के लिए अपने भाग्य को आजमा चुके थे लेकिन अब तक सभी के हाथ निराशा ही लगी थी।

कारायल सभा के पास भी इसकी खबर पहुंची। उसके मन में कपूरी संधार को देखने की उत्सुकता जाग उठी। एक दिन अपने कुछ साथियो को लेकर वह साओ संधार के चरागाह में जा ही पहुंचा। दोपहर का समय था। कड़ाके की गरमी पड़ रही थी। प्यास के मारे सभी लोगों के मुख सूख रहे थे। ऐसे में भी वीरबाला कपूरी अपने पशुओं के बीच खड़ी कुएं पर पानी भरने में व्यस्त थी। कारायल ने उसे इस अवस्था में देखा तो देखता ही रह गया।

बड़ी देर से उसके मुंह से निकला—"वीर कुमारी, क्या प्यासे की प्यास नहीं बुझ सकती।"

कपूरी ने आंख ऊपर उठाकर देखा। सामने एक सुदर युवा खड़ा पानी मांग रहा था। क्षण भर को वह भी ठगी-सी रह गई। फिर बोली—"राजपूत वीर, यहाँ तो जो पानी को खींच सकता है, वही पानी पी सकता है। नहीं तो यह पशुओं के लिए यह कुंडी भरी हुई है। इसमें से पानी पीने की सभी को छूट है।"

कपूरी का ऐसा उत्तर सुन कारायल सोच में पड़ गया। फिर तेजी से कुएं की जगत पर चढ़ गया। उसने चरस हाथ में लेकर गुरू चित्रनाथ का स्मरण किया। अगले ही क्षण चरस कुएं के अन्दर था। उसमें पानी भरने की तीव्र ध्वनि हुई और कारायल की बलिष्ठ बाहें उसे धीरे-धीरे कुएं से बाहर खींचने लगीं। कपूरी मंत्रमुग्ध-सी खड़ी कारायल का यह साहसपूर्ण कार्य देखती रही।

संयोग से कपूरी का पिता भी वहीं खड़ा था। यह सब देखकर उसका हृदय आनद से भर उठा। चरस बाहर आते ही दौड़कर उसने कारायल को अंक में भर लिया। उसका नाम-गोत्र आदि पूछा। उसे कपूरी की प्रतिज्ञा बताकर प्रार्थना की कि अब वह कपूरी का हाथ स्वीकार करे। उस रात कारायल और उसके साथी साओ संधार के ही अतिथि बने। कुछ ही दिनों बाद दोनों का विधिपूर्वक विवाह हो गया। साओ संधार ने ढेर सारा धन-सम्पत्ति देकर पुत्री तथा जामातृ को विदा किया।

कारायल कपूरी को साथ ले पच्छभाई पहाड़ी पर अपने निवास-स्थान पर पहुंचा। किन्तु वह उसे उसके रहने योग्य नहीं लगा। अतः उसने 'पोलडिया टकरा गांव में अपना नया निवास बनाया। इस गांव में उसके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं।

पोलडिये टंकार मणधर मेडी अडई
जित हींडोरा खाट ते झुले लाल संघार

पोलडिया टंकारा में मणिधर की भाँति सभा सरदार ने अपना महल तैयार कराया। वहां कपूरी संधार हिंडोले पर झूला झूलने लगी।

कुछ समय बाद कपूरी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम वींझार रखा गया। उसमें अपनी माता का रूप और पिता का शौर्य तथा उदारता दोनों थे। बचपन से ही उसे तीर-तलवार चलाने का शोक था और शस्त्र-विद्या में उसने विशेष कुशलता प्राप्त कर ली।

कारायल उसमें कुछ और भी गुणों का समावेश चाहता था। वह चाहता था कि अपनी ही तरह चोरी की कला में भी कुमार निपुड़ता प्राप्त करे। एक दिन उसने वींझार को बुलाकर कहा—"बेटे, सामने खड़े इस नीम के पेड़ पर कौठो ने अपने घोंसले में कुछ अंडे दे रखे हैं। कौठा दिन-रात उनकी खबर रखती है। मैं चाहता हूं कि तुम उन अंडों को उठा लाओ। लेकिन यह काम इस प्रकार से करना कि कौठो को कानोंकान खबर न हो।"

वींझार बोला—"पिताजी, यह कला तो आपने मुझे सिखाई ही नहीं।"

कारायल हंसा। कहने लगा—"चूहे के बच्चों को भी कोई मिट्टी खोदना सिखाता है ? यह कला तो तुम्हें स्वय आ जानी चाहिए।"

वींझार बोला—"आपको आती है यह कला ?"

"क्यों नहीं ?"

"आप जरा मुझे भी दिखाइए।"

"अच्छा देखो," कहकर कारायल पेड़ पर चढ़ गया। उसने अत्यंत चतुराई से घोंसले में से अंडे उठाकर अपनी झोली में रख लिए और नीचे उतर आया। लेकिन यह क्या ? वींझार को अंडे दिखाने के लिए जैसे ही उसने हाथ डाला, अंडे गायब थे। वह बड़ा हैरान हुआ, अंडे गए तो कहां गए। उन्हें इधर-उधर खोजने लगा। तभी कपूरी के मुंह से बरबस हंसी निकल पड़ा। वह वहीं खड़ी बाप-बेटे के इस खेल को देख रही थी।

बाद मे सारा भेद खुला, बात ऐसी हुई कि कारायल पेड पर चढ़ा तो वींझार भी उसके पीछे-पाछे चढ़ गया लेकिन उसने कारायल को इसकी तनिक भी खबर न होने दी। फिर जब कारायल अंडे उठाकर झोली में रखता था तो कुमार उन्हें उसकी झोली से निकालकर अपनी जेब में रखता जाता था। यह सब कर कुमार जैसे चोरी से पेड़ पर चढ़ा था वैसे ही कारायल से पहले ही उतर भी आया और चुपचाप भोली-सी सूरत बना मां से चिपककर बैठ गया।

कुमार अपने पिता की कसौटी पर चौर्यकला में खरा उतरा था।

उन्हीं दिनों कच्छ में भीषण अकाल पड़ा। चारों ओर भूख और प्यास से मनुष्य और पशु-पक्षी मरने लगे। बड़ी संख्या में लोग भोजन और चारे की खोज में कच्छ छोड़कर सिंध, हालार तथा गुजरात के अन्य क्षेत्रों में चले गए। कारायल की उदारता की कहानियां चारों ओर फैलने लगीं। कारायल भी यथा सम्भव याचकों की सहायता करता। किन्तु उसके भी साधन सीमित थे। शीघ्र ही उसका सारा खजाना खाली हो गया और वह भारी आर्थिक संकट का सामना करने लगा।

पोलडिया टंकारा के निकट ही धारानगर नाम का एक बड़ा शहर था। वहां उस समय वीसलदेव बाघेला का शासन था। वीसलदेव के पास एक बड़ा खजाना था किन्तु अपनी प्रजा की भलाई के लिए वह उसमें से एक कानी कौड़ी भी खर्च नहीं करता था। उसकी इस अनुदारता के कारण धारानगर के बहुत-से लोग अन्य स्थानों पर चले गए थे। और नगर प्रायः वीरान हो गया था।

कारायल ने बीसलदेव का खजाना लूटने का निश्चय किया। जिससे अकाल पीड़ितों की सहायता की जा सके। उसने वीसलदेव के दरबार में जाना प्रारम्भ कर दिया और कुछ दिनों में ही उसके खजाने का सारा भेद प्राप्त कर लिया। फिर एक दिन अवसर पाकर उस पर छापा मारा और ढेर-सारे रत्न और द्रव्य लूट लिए। थोड़े दिन बाद उसने दुबारा फिर वहां से भारी लूट की।

खजाने में लूट पड़ने से वीसलदेव को भारी क्रोध आया। उसने पहरा और कड़ा कर दिया तथा अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि वे किसी भी प्रकार चोर को पकड़कर उसके सामने उपस्थित करें। वीसलदेव के मंत्री का नाम ऊधव था। वह चतुर तथा स्वामि-भक्त दोनों था। वह जानता था कि चोर के पांव लग गए हैं, अतः वह चोरी करने फिर आएगा।

उसका संदेह पहले से ही कारायल सभा पर था। अतः उसे फंसाने के लिए उसने पूरे प्रबंध किए। जिस किले में खजाना रखा हुआ था, उसके चारों ओर खाई खुदवाकर भूमि पर कीलों का जाल बिछवा दिया। कारायल को इसकी खबर न हो गई हो, ऐसी बात नहीं थी। किन्तु वह भी अपनी धुन का पक्का था। वह ऐसी खाइयों से रुकने वाला नहीं था। उसमें ऐसी कई खाइयों को कूदकर पार कर जाने की क्षमता थी।

तीसरी बार जब कारायल बीसलदेव का खजाना लूटने निकला तो कुमार वींझार भी उसके साथ था। वह पिता से चोरी की कला का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना चाहता था।

पे ने पुतर पाण में पूरो केआं परियाण
माणक सुर्जे मोल में से पिट अखों पाण
पोय रातोय डीं रेआण, जाचक जकोरूं करी

पिता और पुत्र ने विचार किया कि यदि हमें राजमहल के रत्न मिल जाएं तो याचकों का भारी आनंद मंगल हो।

वारी वीसल वीरजी धारानगरी धाम
पोत्रों वांगड जखरे बाप नारायण नाम
वांभण वर विश्राम कारायल कोटे चढे

वीसल बाघेला के समय में पुत्रहीन माताओं का सहारा, जखरा जाम का पौत्र तथा नारायण सभा का पुत्र कारायल धारानगरी के किले पर छापा मार रहा है।

पिता-पुत्र अस्त्र-शस्त्रों से लैस होकर किले पर पहुंचे और कूदकर खाई को पार किया। इसके बाद पिछली दीवार पर कमंद लगाकर वे किले में दाखिल हो गए। हीरे-जवाहरात आदि एक गठरी में बटोरकर, जिस प्रकार वे अंदर घुसे थे उसी प्रकार किले से बाहर निकल आए। अब उन्होंने कूदकर खाई पार करने का विचार किया। किन्तु उनके सामने एक कठिनाई आई। आते समय वे दौड़ते हुए छलांग लगा सकते थे और इस प्रकार उन्हें खाई पार करने में कठिनाई नहीं हुई। लौटते हुए दौड़ने के लिए कोई स्थान नहीं था। और वे उतनी ही शक्ति से छलांग नहीं लगा सकते थे।

कारायल को अपने से अधिक चिन्ता पुत्र की थी इसलिए उसने चित्रनाथ बाबा का दिया हुआ कवच अपनी बांह से खोलकर वींझार की बांह पर बांध दिया और उससे कूद जाने को कहा। कुमार एक ही छलांग में खाई के पार हो गया। इसके बाद कारायल ने स्वयं छलांग लगाई, किन्तु दुर्भाग्य से उसका पांव किनारे से एक हाथ पीछे रह गया और खाई में गिरकर ऊधव मंत्री के फैलाए जाल में फंस गया। उससे निकलने का उसने जितना प्रयत्न किया, उतना ही उसमें फंसता गया। वींझार ने भी उसे बाहर खींचने का काफी प्रयास किया किन्तु वह भी असफल रहा।

जब खाई से बच निकलने का कोई मार्ग नहीं रह गया तो अपनी सम्मान रक्षा के लिए कारायल ने एक नया उपाय अपनाने का निश्चय किया। उसने पुत्र को आदेश दिया कि वह उसका सिर काट ले।

पुत्र पिता का यह आदेश सुनकर स्तब्ध रह गया। उसे झिझकता देख पिता ने उसे फिर समझाया कि यह समय सोच-विचार करने का नहीं है। जरा-सी देर होते ही उनका सारा भेद खुल जाएगा और जीती बाजी हाथ से निकल जाएगी। इसलिए वह देर न करे। सिर काटकर सम्हालकर ले जाए और उसे अपनी मां कपूरी को सौंपकर उसे दिलासा दे।

सारे डीज संधार के बढ़ सर वींझार
कोडे कारायल के, लोहे लाल संधार

वींझार मेरे सिर को सम्हालकर लेजा और कपूरो संधार को सौंप दे। वह इसे गोद में लेकर सुलाएगी।

अंत में मन में साहस जुटाकर वींझार ने वैसा ही किया, जैसा पिता ने उसे आदेश दिया था। उसने पिता का सिर काटकर एक गठरी में सम्हालकर रख लिया। फिर रवाना होने से पहले वह फिर धारा नगरी के अंदर पहुंचा और ऊधत्र के निवास पर पहुंचकर उसका द्वार खटखटाया। कौन है, यह जानने के लिए मंत्री घर से बाहर निकला। वींझार ने तलवार के एक वार से ही उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। धड़ को कुएं में फेंक और सिर को हाथ में लेकर वह खाई पर आया और उसे अपने पिता के धड़ पर जमा दिया।

पिता का कटा सिर लेकर वींझार माता के पास पहुंचा। उस रात कपूरी को प्रारम्भ से ही दुःस्वप्न आ रहे थे। पिता पुत्र के कल्याण की चिन्ता करते हुए वह बार-बार प्रभु से प्रार्थना कर रही थी। पति का कटा सिर देखकर वह हक्की-बक्की रह गई और भांति-भांति से विलाप करने लगी।

खातर डींघे खोरडें खभा खे मर्या
सिर कढींघे पेजो हथडां की वर्या

वींझार ने सारी स्थिति बयान कर कपूरी को हर प्रकार से दिलासा देने का प्रयास किया। फिर भी उसका मन किसी प्रकार शांत ही नहीं हो पा रहा था। पति के सिर को गोद में लेकर वह उसे झुलाने लगती और विरह के गीत गाने लगती। कुछ दिनों बाद वह उस सिर को लेकर अपने देश पच्छम प्रदेश में जा पहुंची और वहां उसे गोद में रखकर सती हो गई।

इधर वींधार ने युक्तिपूर्वक धारानगरी के सिपाहियों के पहरे से अपने पिता के धड़ को उड़ा लिया और सम्मानपूर्वक उसका संस्कार किया। कारायल और कपूरो की वीरता की गाथा कच्छ में आज भी जगह-जगह गाई जाती है।

बाजीप्रभु देशपांडे

[ब्रज, हरियाणवी, बैसवाड़ी, गढ़वाली आदि उत्तर भारत की अनेक भाषाओं, बोलियों की भांति मराठी में भी गेय लोकगाथाओं के लिए 'पवाड़ा' या 'पोवाड़ा' का शब्द का ही प्रचलन है। इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत के 'प्रवाद' शब्द से कही जाती है। मराठी में पवाड़ा शब्द का प्रयोग संत ज्ञानेश्वर के काल में ही हो चुका था।

वर्तमान रूप में पवाड़ों की रचना का प्रारम्भ सत्रहवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ। इस समय शिवाजी के काल से पूर्व का कोई पवाड़ा मराठी भाषा में उपलब्ध नहीं है किन्तु उनके काल में रचे गए दो-तीन पवाड़े अवश्य मिलते हैं। इनका विषय अफजल खां बध, सिंह गढ़-विजय आदि थे। गत दो से तीन सौ वर्षों में लोक परम्परा के रूप में ये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चलते आए हैं।

शिवाजी वीर नायक के रूप में महाराष्ट्र में जन-जन के मानस पर छाए हुए हैं। कोई आश्चर्य नहीं किमराठी के अधिकांश पवाड़े उनके अथवा उनके साथियों के वीर कृत्यों की यशगाथाएं हैं। प्रस्तुत पवाड़े के नायक बाजीप्रभु देशपांडे भी शिवाजी के प्रमुख सेनानायकों में एक थे। एक बार बीजापुर की सेनाओं से शिवाजी को बचाने के लिए उन्होंने कुछ चुने हुए साथियों को लेकर शत्रुओं को रोक लिया और तब तक रोके रखा जब तक शिवाजी सकुशल विशालगढ़ नहीं पहुंच गए। स्वामिभक्ति के इस साहसपूर्ण कार्य में उन्हें अपने प्राणों का भी उत्सर्ग करना पड़ा, किन्तु ऐसे ही कार्यों से इतिहास का निर्माण होता है। यदि बाजीप्रभु ने उस समय ऐसे साहस का परिचय न दिया होता तो शिवाजी का शत्रुओं से बच पाना कठिन होता।]

शिवाजी की छापामार कार्रवाइयों से त्रस्त होकर बीजपुर के आदिलशाही सुल्तान ने अपने सेनापति अफजल खां को एक बड़ी सेना के साथ उन्हें जीवित या मृत पकड़कर लाने के लिए भेजा। अफजल खां भारी डीलडौल वाला व्यक्ति था जबकि शिवाजी उसकी तुलना में बहुत ठिगने थे। उसके साथ सेना भी बहुत बड़ी थी। अत: शिवाजी ने आमने-सामने की लड़ाई लड़ना उचित नहीं समझा और रणनीति से काम लेने का निश्चय किया। प्रकटत: वह बीजापुर जाने के लिए तैयार हो गए और किसी एकांत स्थान पर अफजल खां से मिलने की इच्छा प्रकट की। अफजल खां को अपनी शक्ति पर बड़ा गर्व था। साथ ही उसके मन में यह दुर्भावना भी छिपी थी कि इस अवसर का लाभ उठाकर शिवाजी को सदा के लिए ठिकाने लगा दिया जाए। उसने शिवाजी से मिलना स्वीकार कर लिया।

शिवाजी को शत्रु के मन के इन भावों का पहले से अनुमान था। अत: वह पूरी सावधानी के साथ अफजल खां से मिलने को पहुंचे। पगड़ी के नीचे उन्होंने लोहे का टोप पहन रखा था। हाथ में बघनखा धारण कर उसे दस्ताने के नीचे छिपा लिया था। जैसे ही दोनों ने एक-दूसरे का आलिंगन करने का नाटक किया, अफजल खां ने म्यान से तलवार खींचकर शिवाजी पर वार किया। तलवार लोहे के टोप से जा टकराई और वार खाली गया। इधर अवसर पाकर शिवाजी ने बघनखा अफजल खां के पेट में घुसेड़ दिया। उसकी आंतें बाहर निकल आईं। और कुछ ही देर में वह मृत होकर भूमि पर गिर पड़ा।

अफजल खां की मृत्यु का समाचार पाकर बीजापुर के शासक वर्ग में भारी आतंक फैल गया। सुल्तान और अमीर-उमराव सभी को भय सताने लगा कि न जाने कब शिवाजी बीजापुर में भी आ धमके और उनके सिर काल बन जाए। वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे कि इस सम्भावना को किस प्रकार रोका जाए।

अफझुल्लाचा मुलगा फाजल खान
झाला हैराण
सुचेना च्याला खान
सुडान पेरलं त्याच्या दह्यास
येईना झोंप, झाला कडु घांस
अंगाचं आटलं त्याच्या लहमांस
सदा झाला शिवराया काल
लावली तलमल
परि तो दुर्बल
एकता काय शिवाला करणार
सिंहाला कोल्हं कसं हो धरणार
मुंगसाला साप काय करणार। टेक

अफजल खां के पुत्र फाजल खां की दशा तो सबसे अधिक दयनीय थी। उसे कुछ सूझता ही नहीं था। उसके हृदय में प्रतिशोध की ज्वाला जल रही थी। नींद हराम हो गई थी। खाना अच्छा नहीं लगता था। शरीर सूखकर कांटा होता जा रहा था। उसे हर समय शिवाजी काल के रूप में दिखाई देते थे। उसे चिन्ता सता रही थी कि वह दुर्बल व्यक्ति अकेले शिवाजी का क्या कर सकता है? गीदड़ सिंह को कैसे पकड़ सकता है? सांप नेवले का क्या बिगाड़ सकता है?

एक बार फाजल खां को स्वप्न में अपना पिता अफजल खां दिखाई दिया। अफजल खां उसे झकझोरते हुए कह रहा था—कमीने, कायर उठ! सो क्यों रहा है? क्या तुझे घास

खाना अच्छा लगता है ? कुल कलंको बहुत हो चुका । शत्रु का सिर काटकर किले में टांग । शीघ्र सेना लेकर तैयार हो जा। मूर्ख क्या भागकर प्राण बचाना चाहता है । मरने से डरता है ? चल शीघ्र उसके सिर को लाकर किले के मुख्य द्वार पर टांग ।

फाजल खां की आंख खुल गई, उसे अपने तन की भी सुध-बुध नहीं रही । एकदम उठकर उसने कमर में तलवार कसी और द्वार खोलकर उसी समय किले की ओर चल दिया ।

बेशीच्या वरच्या वाक्षास
टांगलेलं होतं लई दीस
मामरायाचं मुंडकं: मग त्यास
तलवार मारून बोलला तंवा कंवटीस|
झालं सरल आतां तुप दीस
तू पड आतां धरणीस
टांगीन इथं शिव्याचं मुंडकं भी खास । (टेक)

(किले के द्वार के ऊपर बहुत समय से विजयनगर के राजा रामराय का सिर टंगा हुआ था । फाजल खां ने अपनी तलवार मारकर उसे नीचे गिरा दिया बोला—तेरे दिन पूरे हो गए हैं, अब तेरी जगह मैं शिवाजी का सिर टागूंगा ।)

ऐसा कहकर वह वापस अपने घर आ गया । उसे प्रतिशोध लेने का मार्ग मिल गया था । शेष रात उसने करवटें बदलते विताई ।

अगले दिन वह दरबार में गया । आदिलशाह से बोला—

मप्प काय वसला
आला सैतान बिजापुरला
समजावा नाश संकल झाला
ब्याचा काय बंदोबस्त केला
पाबोला जसा वाघ्याला
रान कणब्याला
दिवदी सूर्याला
अदिलशाहा तसा शिवाजीला
शत्रुवा करा आज सरकार
नाहीतर आपला नाश होणार
शाहिचं
चांगलं दिवस सरणा

आलीजाह, आप चुप क्यों बैठे हैं ? यदि वह शैतान बीजापुर आ गया तो समझ लीजिए कि हम सबका सर्वनाश निश्चित है। उसका आपने क्या उपाय किया है। आंधी के लिए जैसे सूखे पत्ते हैं, दावाग्नि के लिए जैसे वन हैं, सूर्य के लिए जैसे दीपक है, वैसे ही शिवाजी के लिए आदिलशाह है। अतः शत्रु को समाप्त करने के लिए शीघ्र सेना भेजिए नहीं तो आपका ही नाश होगा। आदिलशाही के दिन अच्छे नहीं दिखाई देते।

फाजल खां की बात सुनकर आदिलशाह घबरा उठा। बोला—शिद्दी जोहार को साथ ले जाकर तुम उस शत्रु को ठिकाने लगा दो। जब तुम ऐसाकर लौटोगे तो मैं एक बड़े दरबार का आयोजन कर उसमें तुमको अपने हाथ से तलवार भेंट करूंगा।

फाजल खां और शिद्दी जोहार दोनों शिवाजी को समाप्त करने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने एक बड़ी सेना एकत्र की। उसके लिए गोला-बारूद जुटाया। घोड़ों की तो कोई गिनती ही नहीं थी। उनको गहने पहनाए गए, पांवों में घुंघरू बांधे गए। सिरों पर कलगियां लगाई गईं। फिर उन पर जीन कसकर अमीर उमराव तथा बड़े-बड़े शूरवीर हाथों में नंगी तलवारें लिए बैठे। इस प्रकार यह विशाल वाहिनी शत्रु को मारने की इच्छा से उसके प्रदेश की ओर बढ़ी।

रात होने पर डेरा डाल लिया जाता। बड़े-बड़े तम्बू लगते। गांजा-अफीम के सुटके लगते। शराब पीकर मदमस्त होने लगते। नाच और रंग की महफिलें जमतीं। इसका जितना वर्णन किया जाए, कम है। कहीं किसी प्रकार की कमी नहीं थी। सैनिक गांवों में घुसकर वहां के निवासियों को तरह-तरह से सताते। उनका चारा अपने घोड़ों के लिए ले जाते। जो न ले जा पाते उसमें आग लगा देते। घरों से महिलाओं का अपहरण कर ले जाते। पशुओं को ले जाकर अपना भोजन बना लेते। घरों को लूटते, जलाते। ग्रामीणों के साथ भद्दा मजाक करते, उनके मुंह पर धूल फेंकते, उन्हें गालियां देते। यदि कोई विरोध करने का साहस करता तो रस्सियों से बांधकर उसके नाक-कान काट देते, उसकी आंखों में गरम सलाखें घुसेड़ देते, उसके हाथ-पांव तोड़ देते। उनका बलात् धर्म-परिवर्तन करते।

बीजापुर की सेना के आक्रमण की सूचना पाकर शिवाजी सावधान हो गए। उन्होंने पन्हालागढ़ में अपना मोर्चा सम्हाला। रक्षा की सभी व्यवस्था की गई। गोला-बारूद यथा-स्थान सजा दिया गया। वीरों के हाथ म्यान से तलवारें बाहर निकालने के लिए मचलने लगे। भाले सूर्य की किरणों में चमचमाने लगे। सिरों पर शिरस्त्राण पहन लिए गए। धनुष-बाणों की टंकार सुनाई देने लगी। गोदामों में अनाज भर दिया गया।

शीघ्र ही फाजल खां और शिद्दी जोहार की सेनाओं ने आगे बढ़कर पन्हालागढ़ को चारों ओर से घेर लिया। थोड़ी-थोड़ी दूर पर पहरे के लिए चौकियां बैठा दी गईं। गुप्तचरों का जाल बिछा दिया गया। जिससे शिवाजी की एक-एक क्षण की गतिविधियों की सूचना मिलती रहे और वह घेरा तोड़कर निकल न पाए। यह घेराबंदी चार महीने तक जारी रही। इससे पूर्व एक बार शिवाजी के घुड़सवार दल के अध्यक्ष नेताजी पालकर शिद्दी जोहार को काफी धूल चटा चुके थे, किन्तु इस बार शिद्दी जोहार बहुत बड़ी सेना लेकर आया था। आमने-सामने की लड़ाई में उससे टकराना बुद्धिमत्ता की बात न थी। उधर किले में केवल एक वर्ष के लिए ही दाना-पानी था। जबकि शत्रु सेना कितने ही समय तक अपनी घेराबंदी जारी रख सकती थी।

ऐसी स्थिति में शिवाजी ने नेताजी पालकर, बाजीप्रभु देशपांडे तथा अपने अन्य वरिष्ठ सेनापतियों के साथ मंत्रणा की। उन्होंने यही परामर्श दिया कि चुपचाप बैठे रहने की अपेक्षा नीति से काम लेना अधिक उपयुक्त होगा। अतः शिवाजी ने शत्रु को धोखे में डालने के लिए एक योजना बनाई। उन्होंने गुप्त रूप से शिद्दी जौहार से भेंट की और उसके सामने ऐसा अभिनय किया मानो उससे बहुत भयभीत हों। बोले—सरदार, आप तो महान वीर हैं, आपके भय से मैं थर-थर कांपता रहता हूं। मुझमें इतना साहस कहां जो आपका सामना कर सकूं। अतः आपकी शरण में आया हूं, आप मुझे जीवन दान दीजिए। बच्चों सहित मुझे अपनी शरण में लीजिए। मैं सुलतान का अपराधी हूं, इसका प्रायश्चित करना चाहता हूं। आपके सभी क्षेत्र मैं खाली कर दूंगा, केवल यह किला मेरे पास रहने दीजिए।

शिद्दी जोहार को शिवाजी की चाल समझ में न आ सकी। अपनी प्रशंसा सुनकर वह मन-ही-मन फूलकर कुप्पा हो गया। कहने लगा—तुम्हें जीवन-दान देने में तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु यह किला तुम्हें नहीं मिलेगा।

शिवाजी ने फिर कहा—सूबेदार ! आप इतने बड़े वीर हैं, फिर भी मुझे एक किला देने से इंकार कर रहे हैं। अपना बेटा समझकर ही मुझे यह किला दे दीजिए। आप अपने फैसले पर फिर से विचार करें। कल मैं आपसे मिलने फिर आऊंगा। उस समय आपका जो भी निर्णय हो मुझे बता दीजिए।

ऐसा कहकर शिवाजी अपने गढ़ को लौट गए। इधर शिद्दी ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा—या अल्लाह, तूने भी यह कैसा खेल खेला। काफिर अपने-आप मेरी पकड़ में आ गया।

शिविर में शीघ्र बिजली की तरह यह समाचार फैल गया कि शिवाजी ने आत्म-समर्पण करना स्वीकार कर लिया है। बस फिर क्या था। उनका सारा पहरा ढीला पड़ गया। शराब के दौर चल पड़े और अमीर-उमराव नशे में धुत्त हो गए। शिद्दी जोहार और फाजल खां तो एक प्रकार से पागल ही हो गए। उन्हें तरह-तरह के सुनहरे सपने दिखाई देने लगे।

शिवाजी को शत्रु की हलचलों के एक-एक क्षण का समाचार मिल रहा था। अवसर का लाभ उठाकर वह अपने कुछ चुने हुए साथियों को साथ घेरा तोड़कर भाग निकले। अधिकांश पहरेदार सोए हुए मिले। जो जाग रहे थे, उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। रात के अंधेरे में किसी को पता नहीं चला कि क्या हो रहा है। दो पहर रात्रि तक सारी छावनी में खलबली मची हुई थी। चारों ओर यही सुनाई पड़ रहा था—"हाय अल्लाह, सारा पहरा बेकार गया। शैतान निकल भागा।" सारे रास्ते खून से सन गए।

शिद्दी जोहार क्रोध से आग-बबूला था। वह हवा में अपनी तलवार चमका रहा था। फाजल खां को पसीने छूट रहे थे। कह रहा था—अल्लाह, यह क्या हुआ ? वह निकल गया। अल्लाह तुझे क्या कहें, तुझे भी उसकी चालाकी का पता नहीं चला।

सेना को तत्काल तैयार होने का आदेश दिया गया। गढ़ का घेरा छोड़कर बारह हजार घुड़सवार शिवाजी का पीछा करने के लिए दौड़ पड़े। उनका नेतृत्व शिद्दी जोहार और फाजल खां ही कर रहे थे।

पुढं धावे सूर्य, पाठी मांगे केतु असुर
पुढं धावे चन्द्र मांग लागला जणूं राहु चोर
पुढं धर्म, मांग अधर्म धावतो खेर
पुढं नीति, मांग अनीतीचा लागला विचार
स्वातंत्र्य पुढे, मांग लागे दास्य चिरकाल

उस समय ऐसा लग रहा था जैसे आगे-आगे सूर्य हो और उसके पीछे असुर केतु भाग रहा हो। जैसे आगे चन्द्रमा हो और राहु उसका पीछा कर रहा हो। जैसे आगे धर्म हो और उसके पीछे स्वेच्छाचारी अधर्म भाग रहा हो। जैसे आगे-आगे नीति हो, और पीछे-पीछे अनीति का विचार। जैसे स्वतंत्रता के पीछे चिरस्थाई दास्य भाग रहा हो।

शिवाजी घोड़ा दौड़ाते हुए विशालगढ़ की ओर जा रहे थे। चार घंटे बाद आकाश में ऊषा की लाली छा गई। लगभग तीन कोस दूर से विशालगढ़ का किला दिखाई देने लगा।

शिवाजी के साथियों ने चेन की सांस ली और कहने लगे। मां भवानी ने हम पर कृपा की है, अब किसी का भय नहीं है।

किन्तु उन्हें क्या पता था कि शत्रु भी पीछे-पीछे ही आ रहा है। उन्हें घोड़ों की टापें सुनाई दीं। पीछे दृष्टि घुमाई तो देखा, फाजल खां अपनी सेना के साथ चला आ रहा है। वे लोग काफी निकट आ पहुंचे थे। शिवाजी तनिक नहीं घबराये और घोड़ी रोककर लड़ने के लिए तैयार हो गए। उन्हें किंचित मृत्यु-भय नहीं था। वीरों को प्राणों का मोह नहीं होता। किन्तु शिवाजी के साथी नहीं चाहते थे कि वह इस प्रकार अपने प्राणों को संकट में डालें। वही तो मराठा राज्य के आधार थे, भवानी के कंठहार थे। अतः स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए बाजीप्रभु देशपांडे ने शिवाजी के सामने आकर कहा—महाराज, मेरी प्रार्थना सुनिए। शत्रु का आक्रमण सन्निकट है। मैं इसी खिंड गांव में रुककर शत्रु को रोकता हूं। यहां वीर हजार व्यक्तियों को भी रोक सकते हैं। मुझ दास को यह चमत्कार करके दिखाने का अवसर दीजिए। तब तक आप विशालगढ़ पहुंच जाइए। सेना को भी अपने साथ ले जाइए। केवल पांच-पचास सैनिक मेरे साथ रहने दीजिए। मेरे प्राण आपके चरणों हैं। जब तक मेरे प्राण हैं, आपको किसी प्रकार का संकट नहीं होगा। आप घोड़ी दौड़ाइए। बात करने में मूल्यवान समय बीता जा रहा है। आप ही हमारे भगवान हैं, हमारा दूसरा और कोई भगवान नहीं है।

बाजीप्रभु के वचन सुनकर शिवाजी का गला रुंध गया। उनका हृदय आवेग से उसी प्रकार गद्‌गद् हो गया जिस प्रकार चन्द्रमा को देखकर समुद्र का जल विभोर हो उठता है। उन्होंने कहा—यदि मैं तुम्हें छोड़कर चला गया तो लोग क्या कहेंगे ? यही न कि बाजी को मौत के मुंह में डालकर मैं निष्ठुर भाग गया। जिस प्रकार प्राण तुम्हें प्रिय हैं, उस प्रकार मुझे भी हैं, फिर प्राणों को देने की बात कैसे कहूं ? शत्रु की दावाग्नि आ रही है। तो आने दो। यदि जलना है तो मैं भी जलूंगा। देह का धर्म मृत्यु है, इसे कब तक सम्हालकर रख सकते हैं ?

शिवाजी के वचनों से बाजीप्रभु को भारी दुख हुआ। बोले—महाराज, यदि मुझे मेरे प्राण प्रिय हैं तो इसीलिए मैं अपने शरीर को छोड़कर स्वर्ग जाना चाहता हूं। दास को यह सुअवसर दीजिए। जिनको मृत्यु समरांगण में धर्म पालन के लिए वरमाला डालती है, उनका जन्म धन्य है। मैं पहले बीजापुर का सेवक था। तब मैंने बहुत पाप किए। पर मेरे भाग्य में पुण्य लिखे थे जो विशालगढ़ में आपसे भेंट हो गई। मैं अपने पुराने कलंक को धो देना चाहता हूं। अतः आप शीघ्र प्रस्थान कीजिए।

शिवाजी ने उन्हें गले लगाकर कहा—तुम्हारे लिए मैं जा रहा हूं। विशालगढ़ मे पांच तोपें दागे जाने पर समझना कि मैं सुरक्षित पहुंच गया।

शिवाजी चले गए। इधर बाजीप्रभु ने मोर्चा बंदी कर शत्रु को रोकने की तैयारी की। दोनों ओर ऊंची पहाड़ियां थीं और उनके बीच से संकरे मार्ग से होकर ही शत्रु आगे बढ़ सकता था। इस स्थल पर उसे रोकना सरल था। उस समय हाथ में नंगी तलवार लिए बाजी प्रभु रुद्र के अवतार दिखाई दे रहे थे। यवनों ने जब शिवाजी की कल्याणी घोड़ी को सरपट विशालगढ़ की ओर भागते देखा तो वे चिल्लाए—पकड़ो, पकड़ो। इसे भागने मत दो। उन्होंने अपने घोड़ों की चाल तेज की। तभी पहाड़ी की दूसरी ओर से बाणों की वर्षा शुरू हो गई। घोड़े और घुड़सवार एक-एक कर भूमि पर गिरने लगे। किसी की समझ में ही नहीं आता था कि बाण कहां से आ रहे हैं। यवन सेना धक्क रह गई। उसकी गति रुक गई। बड़ी संख्या में सैनिक हताहत हुए, सो अलग।

यवन अब शिवाजी का पीछा छोड़ बाण बरसाने वालों को मजा चखाने के लिए खिड गांव की ओर बढ़े। वहां बाजीप्रभु और उनके साथी तीस वीर सैनिकों ने पूरा मार्ग रोक रखा था। फाजल खां ने उन पर हल्ला बोल दिया। बाजीप्रभु भी तैयार थे। दोनों पक्षों में घमासान छिड़ गया। एक ओर बारह हजार यवन थे और दूसरी ओर तीस मराठा वीर।

फाजलानं केला मग हल्ला
बाजी हि तय्यार झाला
रणरंग खिडीला आला
कबटाली वीर मरणाला

फाजल खां ने हल्ला बोला। बाजीप्रभु भी तैयार थे। खिड गांव में घोर संग्राम मच गया। अनेक वीर मृत्यु को प्राप्त होने लगे।

आली झुंज हतिघाईवर
झुलती तलवार
एकमेकां मार
देती: घुमाकुल झाला अनिवार
शत्रुवर करती जोराचे वार
जिकंड तिकंड झाला एक प्रकार
किता होते मिसलुले नाद
ढेऊ कमी याद
उठति पडसाद

सिडीतून दाद नाहि कवणा
तय्यार सारे वीर मरणा
ठेवील कोण त्यांची गणना

(दोनों पक्षों में घमासान छिड़ गया। सैनिक एक-दूसरे से जूझने लगे। तलवारें खन-कने लगीं। जिधर देखो उधर ही मारकाट मची हुई थी। तरह-तरह से शोर हो रहा था। किसी को अपने तन की सुध नहीं थी। सभी वीर जैसे मरने को तैयार थे। उनकी गणन करना असम्भव था।)

कोण राम-राम बोलती
देवांना हांका मारती
कोण धाय-धाय दडताती
तलमलुन देहांतून कोण प्राण सोडती
कोणांची नांक ठेंचती
डोल्यालं बुबल लोंबती
छातिलं भाले खुपसती
जसे मासे जली चमकती

(कोई राम-राम कहकर अपने देवता को याद कर रहा था, कोई धाड़ मार रहा था; कुछ छटपटाकर अपने प्राण छोड़ रहे थे। किसी की नाक कट गई, किसी की आंखें बाहर निकल आई थीं, किसी की छाती में, पानी में मछली की भांति, भाला धंस गया था।)

आकाशीं विजा तलपती
तलवारी तशा लखलखती
रक्ताचे पाट बाहती
डोक्यांची कपड्या उडती
कोणाचे हात तूटंती
बेशुद्ध कैक रक्ताच्या पाराम वं पडती

(आकाश में बिजली की भांति तलवारें चमक रही थीं। वे रक्त से सन गई थीं। किसी का हाथ टूटकर गिर रहा था। कहीं खोपड़ियां कट-कटकर गिर रही थीं।)

निकराचे हल्ले चटविती
'हर हर महादेव' असें कैक बोलती
'दीन-दीन' यवन बोलतो
किती अर्धमेले बरलुती
हाणा मारा कापांचा भरला नादव हो अती

('हर हर महादेव' और 'दीन-दीन' की आवाजें गूंज रही थीं। चारों ओर से मारो-काटो की ध्वनि आ रही थी।)

शिरकमल अंबेच्या पायि वीर वाहती
दशदिशा दणाणन जाती
तलवारी भाले चमकती
एकमेकां वासुन ठिणगया लाल निघताती
वर मुंडकीं उच उड़ताती
जणू अंबाबाई चेंडवांघा खेलखेलती

(भवानी के चरणों में वीर अपने सिरकमल चढ़ा रहे थे। तलवारों और भालों के परस्पर टकराने से चिनगारियां निकल रही थीं। आकाश में उड़ते हुए मस्तकों को देखकर ऐसा लगता था मानो अम्बा गेंद खेल रही हो।)

ऐसे घमासान की वेला में हाथ में वरमाला लिए विजयश्रीरणक्षेत्र में पहुंच गई और सोचने लगी, किसके गले में डालूं। जगदम्बा ने मृत्यु से कहा कि देखो विजयश्री वरमाला पहनाने आई है। तुम बाजोप्रभु के लिएशानदार व्यवस्था करो। मृत्यु ने उत्तर दिया ठीक है, ऐसा ही करूंगी।

थोड़ी देर में ही खिड की धरती रक्त से लाल हो गई। सर्वत्र खून का छिड़काव हो हो गया। लोथों के गलीचे बिछ गए। हड्डियों से चित्रकारी की गई। दातों के मोती बिखेर दिए गए। नरमुंडों की माला बनाई गई। यह रूप तो अम्बा भवानी का है।

बाजीप्रभु जहां चाहते लपककर पहुंच जाते। जिस प्रकार आंधी भूसे को उड़ा ले ले जाती है, उसी प्रकार वह शत्रुओं के सिरों को उड़ा रहे थे। उनके अपने शरीर से भी रक्त की धारा बह रही थी, किन्तु उन्हें इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। ऐसा लग रहा था जैसे फूलों से लदा पलाश तरु हो। उन्होंने यवन सेना की कमर तोड़ दी, किन्तु उसी समय उनकी नई सेना आ पहुंची। फजल खां का हौसला बढ़ा और उसने फिर जोरदार हमला बोल दिया। बाजीपुर की पैदल सेना भी रणक्षेत्र में पहुंच गई थी। यह देखकर भागती घुड़सवार सेना भी लौट आई। बाजीप्रभु ने एक बार फिर धनुर्धारियों को अपना पराक्रम दिखाने के लिए ललकारा।

आयु एक-एक क्षण कर बीतती है। काल किसी की प्रतीक्षा नहीं करता पर जिनकी मृत्यु विशेष रूप से होती है, वे मरकर भी मरते नहीं हैं। जो वीर रणांगण में प्राण छोड़ते हैं, उन्हें कीर्ति वरमाला पहनाती है। बाजोप्रभु ने एक बार फिर पूरी शक्ति से शत्रु पर आक्रमण किया। यवन ठंडे पड़ गए। एक बार फिर मुंड मालों की वर्षा होने लगी।

इतना होने पर भी बाजीप्रभु के मुखमंडल पर विजय का उल्लास नहीं था। वह बार-बार चिन्तित भाव से विशालगढ़ की ओर देख रहे थे। उन्हें प्रतीक्षा तोप के उन पांच गोलों की आवाज की थी जो शिवाजी के सकुशल विशालगढ़ पहुंचने की सूचना देने वाले थे।

इसी समय एक गोली आकर बाजीप्रभु को लगी और वह कटे पेड़ की भांति भूमि पर गिर पड़े। उनके सैनिक भी इधर-उधर भागने लगे। यह देखकर बाजीप्रभु ने ललकारा—मैं अभी मरा नहीं हूं वापस मुड़ो और शत्रु पर हमला बोलो। यदि मर गए तो स्वर्ग जाओगे, यदि जीवित रहे तो पृथ्वी पर सुख भोगोगे। लेकिन यदि भागे तो नरक में जाओगे। उनकी ललकार सुनकर वीर मराठा सैनिकों के भाले पुनः शत्रुओं के वक्षस्थलों को बेधने लगे। नए संकल्प के साथ किए गए इस प्रत्याक्रमण से यवन सैनिक भौंचक्के रह गए।

बाजीप्रभु के जीवन की अंतिम किरण टिमटिमा रही थी, वह उद्विग्न होकर बैठ गए। उनका सारा ध्यान विशालगढ़ की ओर लगा था। उस समय उनकी दशा मृत्यु शैया पर लेटे भीष्म पितामह जैसी थी। उनके प्राण तोप के गोलों की आवाज में अटके हुए थे।

और तभी धूम धड़ाधड़, धूम धड़ाधड़ के साथ तोप के पांच गोले छूटने की आवाज उनके कानों में पड़ी। अपनी बची-खुची शक्ति बटोरकर वह बोल उठे—भगवान मैं धन्य हो गया। इसके साथ ही उनके प्राण पखेरू उनके नश्वर शरीर को छोड़कर उड़ गए।

धन्य धन्य बाजी रणवीर
धन्य अवतार
धन्य तो शूर
धर्माच्या कामीं जो जो मरणार
त्याचा जयनाद जो जो होणार
शाहीर 'पांडुरंग' गरणार

अपने इस महान बलिदान से बाजीप्रभु देशपांडे ने खिंड गांव को पावन खिंड बना दिया।

मदुरै वीरन

[मध्यकाल में हमारा देश जहां अनेक छोटी-छोटी राजनीतिक इकाइयों में बंटा हुआ था, वहीं हमें सांस्कृतिक विकेन्द्रीकरण के भी दर्शन होते हैं। तीर्थों के सम्बंध में यह बात विशेष रूप से सही है। उदाहरण के लिए बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी के तीन दावेदार हैं। देश के उत्तर में होने के कारण गढ़वाल स्थित काशी को उत्तर काशी कहा जाता है। वाराणसी वाली काशी तो है ही। दक्षिण में तमिलनाडु में भी एक काशी है जिसे तेंकाशी या दक्षिण काशी के नाम से पुकारते हैं। इसी प्रकार जहां उत्तर में प्रयाग में त्रिवेणी है, उसी प्रकार दक्षिण श्री शैल के निकट हमें त्रिवेणी के दर्शन होते हैं। यह उल्लेखनीय है कि श्री शैली पर स्थित मल्लिकार्जुन मंदिर के पूर्वी द्वार से कृष्णा नदी तक जाने वाले एक दुर्गम मार्ग को पाताल गंगा कहते हैं। तमिलनाडु में भी एक गंगा (नूपुर गंगा) है जिसके जल को भागीरथी गंगा के समान ही पवित्र और पापनाशक माना जाता है।

इस सांस्कृतिक विकेन्द्रीकरण से यह नहीं समझना चाहिए कि उस समय उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सांस्कृतिक अलगाव था। वास्तव में हमारी सांस्कृतिक एकता का ही प्रमाण है तत्कालीन तीर्थ यात्रा के महत्व और आवागमन के दुर्गम मार्गों तथा साधनों को देखते हुए जनसाधारण के लिए तीर्थों के विकेन्द्रीकरण की यह बात समझी जा सकती है।

प्रस्तुत वीरगाथा के नायक मदुरै वीरन का जन्म दक्षिण काशी अथवा तेंकाशी में हुआ था। उसके जीवन का बड़ा भाग डाकुओं से लड़ने अथवा स्वयं अत्याचारी शासकों के विरुद्ध डाकू जैसी वृत्ति अपनाते हुए बीता। उसमें मध्यकालीन उदात्त वीर नायक के सभी गुण विद्यमान हैं। उनका जीवन चमत्कारों से पूर्ण है, देवी शक्ति उसकी सहायता को उद्यत रहती है, वह वीर है, सुंदरियां सहज ही इसके गुणों पर रीझ जाती है, उसमें स्वयं सौंदर्य के प्रति आसक्ति है, उसमें राजभक्ति है, जन-कल्याण की भावना है, और इसके लिए वह अपने प्राणों को भी संकट में डालने के लिए तैयार रहता है, और सबसे अधिक उसमें आत्मोत्सर्ग की भावना है।]

तेंकाशी में उस समय तुलसी नाम का राजा राज्य करता था। राजा बड़ा दयालु और वीर था। वह सदा अपनी प्रजा के कल्याण की बात सोचता। प्रजा भी उसे बहुत चाहती थी। राजा को दुख था तो केवल एक; उसके कोई संतान नहीं थी। वह दिन-रात इसी सोच में डूबा रहता कि उसके बाद उसके राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा।

एक बार राजा तुलसी ने अपने राज्य के बड़े-बड़े पंडितों और ज्योतिषियों को अपने दरबार में बुलाया तथा उनके सामने अपने मन की चिन्ता प्रकट की। उसने उनसे कोई जप-तप, पूजा-पाठ या अन्य कोई उपाय सुझाने को कहा, जिससे उसे संतान की प्राप्ति हो सके। ज्योतिषियों ने ग्रहों की गणना करने के बाद राजा से कहा—

पहन तनक पिल्लै
पनपाक तेंडु मिड़ाल
काशि नदि आदि
करुद मुन्कालैयिलुक ईरान विश्वनाथन
इमचिलान संत्रश्किुल्लफ
वेन्डु अभिषेक मुदल
शत्त वित्त पिन्न शिवनाई
यैलंडू वर्नीम यरिक्रम
यैंत्राग धर्मन वैइल
आवनि डर कडं कील
आग मगन पिरपान

[हे राजा, यदि आप अपने राज्य का उत्तराधिकारी चाहते हैं तो आप बाबा विश्वनाथ की पूजा करें, आपको अवश्य संतान की प्राप्ति होगी।]

राजा ने ऐसा ही किया। यथासमय बाबा विश्वनाथ की कृपा से रानी गर्भवती हुई और उसने पुत्र को जन्म दिया। पुत्र जन्म का समाचार पाकर राजा फूला न समाया और उसने जी-भरकर दान-पुण्य किया। किन्तु कुछ ऐसी अनहोनी हुई कि जन्म के समय बच्चे की नाल उसकी गर्दन के चारों ओर लिपटी हुई प्राप्त हुई। राजा ने पुनः ज्योतिषियों को बुलाया और इसके उपाय के साथ-साथ बच्चे का भविष्य भी पूछा।

ज्योतिषियों ने बच्चे के ग्रह-नक्षत्र देखे और कुछ क्षण को चिन्ता में पड़ गए। फिर सोच-विचार कर बोले—हे राजन, यह देश के लिए संकट का कारण हो सकता है।

इंदमकतई इन्नी
इंग वेकलल आकद
अंद विदम्य पिररक
इंड्डितल उत्तम भाई
अंदविदम मंडिर
काट्टकातिल विडमलिपमाय

[अतः हमारे विचार से आप इस बालक को घर में न रखकर जंगल में छुड़वा दें।]

राजा को यह सुनकर भारी दुख हुआ। कितनी पूजा-पाठ के बाद संतान का मुंह देखा। किन्तु ज्योतिषियों की बात की अवहेलना भी नहीं की जा सकती थी। न जाने कौन-सा अनिष्ट हो जाए। अपने से भी अधिक राजा को अपनी प्रजा के कल्याण की चिन्ता थी। अतः हृदय पर भारी पत्थर रखकर उसने अपने सेवकों से बालक को वन में छोड़ आने को कहा। सेवकों को भी राजा की आज्ञा का पालन करना ही था।

संयोग की बात, जैसे ही सेवक बालक को वन में छोड़कर लौटे, एक नाग वहां पहुंच गया और अपने फन से उस पर छाया करने लगा और अन्य पशुओं से उसकी रक्षा करने लगा।

नगर में चित्रा नाम का एक मोची भी रहता था। उसे कोई संतान नहीं थी। वह और उसकी पत्नी दोनों वर्षों से बच्चे के लिए तरस रहे थे। किसी प्रकार उन्हें भनक लग गई कि राजा ने अपनी संतान को वन में छुड़वा दिया है। चित्रा की पत्नी लकड़ी लेने के बहाने वन में गई और बच्चे को ले आई। उन्होंने प्यार से उसका नाम वोरन रखा। राजा का बेटा मोची के घर पलने लगा। लेकिन यह बात अधिक दिन तक छिपी न रह सकी। धीरे-धीरे हवा की भांति यह बात चारों ओर फैल गई, चित्रा के मन को भी चिन्ता ने घेर लिया। वह सोचने लगा—

इपेरिय पहुनविल
इरता मो-यानाकाल
तान आइयत कोंडूवान
कस्तेषम पोई
मंगचेर माम पिडैपों
काडमल्लइ तांडी
कडंकि नट्वल उछार
पोमनन थीमें किम
पोहूनवे बांर्दाक्ट्टल

[यदि राजा को यह पता चल गया कि उसका पुत्र जीवित है तो वह उसे पकड़वा मंगवाएगा और मरवा देगा। इसलिए हमें इस स्थान को छोड़कर अन्यत्र चले जाना चाहिए। यह सोचकर वे काशी से पोमनन को चल दिए।

पोमनन में चित्रा पत्नी और बच्चे के साथ सड़क पर इधर-उधर घूमने लगा। तभी वहां के राजा की दृष्टि उस पर पड़ी। राजा ने अजनबी जानकर उसे अपने पास बुलाया

और इस प्रकार भटकने का कारण पूछा। चित्रा ने बता दिया कि काशी से काम की खोज में आया है। उन्हीं दिनों राजा की बेटी पोम्मी को मासिक धर्म प्रारम्भ हुआ था। उस समय की प्रथा के अनुसार उसे महल से दूर एक झोपड़ी में रख दिया गया था। राजा ने चित्रा को उसकी पहरेदारी पर नियुक्त कर दिया। चित्रा की पत्नी और वीरन अन्य कर्मचारियों के साथ महल में ही ठहर गए। वीरन भी अब युवा होने लगा था।

चित्रा ने अपना काम बड़ी दक्षता से किया, किन्तु रात को भारी वर्षा होने के कारण वह पानी में भीग गया और बीमार पड़ गया। वीरन उसके स्थान पर पहरेदारी के लिए चला गया। पोम्मी ने उसे देखा तो वह उसके आकर्षक रूप पर मोहित हो गई। मासिक धर्म की समाप्ति पर वह झोपड़ी से पुनः महल में चली गई। वहां भी वीरन और वह चोरी-छिपे मिलते रहे।

एक दिन अवसर पाकर दोनों महल से भाग निकले। राजा ने सुना तो वह क्रोध से आग-बबूला हो उठा। वह तत्काल अपने कुछ सैनिकों के साथ उन्हें खोजने निकल पड़ा। उसने उन्हें त्रिचनापल्ली के मार्ग पर जा पकड़ा। वीरन ने बड़ी वीरता से पोम्मन के राजा और उसके सैनिकों का मुकाबला किया तथा उन सभी को मौत के घाट उतार दिया।

आनइ तिरल तंलिल
आली नद पायइ दूतपोल
सैतइ तणोतेल
शिरू वेंगई पाइंद्द पोल
मदु अंद सैनइ कलई
सैनइ कल इल्लाम
विरंड़कल ओडी अंबे
मांडु मडिकिरद
मन्नद सेनई इयलाम

[वीरन पोम्मी के पिता और सैनिकों के बीच इस प्रकार घुस गया जिस प्रकार सिंह हथियों के झुंड में घुस जाता है। अत्यंत वीरता का प्रदर्शन कर उसने उन सबों को मौत के घाट उतार दिया।]

इसके बाद पोम्मी और वीरन त्रिचनापल्ली जा पहुंचे। त्रिचनापल्ली में उस समय विजरंगा चुक्कलिंग नाम का राजा राज्य करता था। वीरन के वहां पहुंचने से पहले ही उसकी वीरता की गाथा उस तक पहुंच चुकी थी। उन दिनों पोम्मलन और त्रिचनापल्ली

के सम्बंधों में खिचाव चल रहा था। अतः त्रिचनापल्ली में वीरन का हार्दिक स्वागत हुआ और राजा ने महल की सुरक्षा का भार उसे सौंप कर उन दोनों को महल में ही रख लिया। वीरन और पोम्पी के दिन बड़े सुख से बीतने लगे।

कुछ दिन बाद पड़ोसी राज्य मदुरै पर चोर-डाकुओं के एक दल ने धावा बोल दिया। उनके आतंक से घबराकर मदुरै के राजा ने अपने मित्र त्रिचनापल्ली के राजा से सहायता मांगी। इस कार्य के लिए बापल्ली के राजा की दृष्टि वीरन की ओर गई। उसने कुछ सैनिकों के साथ उसे मदुरै भेज दिया।

मदुरै पहुंचने पर वहां के राजा और प्रजा दोनों ने वीरन का शानदार स्वागत किया। उनके निवास को सुखद व्यवस्था की गई। शाम को वीरन पूजा के लिए अपने साथियों सहित मंदिर में गया। अचानक आरती करते समय डाकुओं के दल ने मंदिर पर आक्रमण कर दिया। वीरन और उसके साथियों ने जमकर उनका सामना किया।

विघनान कल्लर कदई
वीरादि वीरन तान
मुन्नविचुक आयरम पेरे
मुनई विचिक आयरम पेर
कल्लर पडइ कल यल्लाम
कलंमिये मड्मरंव
भई शोरंद विल्लुदार कल

[वीरन ने असाधारण वीरता दिखाते हुए एक-एक बार में अनेक डाकुओं को धराशायी कर दिया। इस प्रकार थोड़ी देर में ही उसने सभी डाकुओं का सफाया कर डाला।]

वीरन की इस सफलता पर मुग्ध होकर मदुरै के राजा ने महल में उसके सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया। अनेक सुन्दर कन्याओं ने वीरन की आरती उतारी। उनमें एक वयलम्मा थी। वीरन उसे देखते ही उसके रूप पर मोहित हो गया। वह उसके ध्यान पर इतनी छा गई कि रात उसे नींद भी नहीं आई। आधी रात के बाद वह चुपचाप अपनी शैया से उठा और पोम्पी को भी बताए बिना वयलम्मा के घर की ओर चल दिया। दीवार फांदकर वह वयलम्मा के घर के अहाते में कूद गया। लेकिन आवाज होने पर वहां पहरा दे रहे सिपाही चौंक उटे और उन्होंने उसे जा पकड़ा। वे तत्काल वीरन को राजा के पास ले गए। रात के अंधेरे में राजा वीरन को पहचान नहीं पाया और उसे चोर समझकर उसके हाथ-पैर काट देने का आदेश दिया। सैनिकों ने ऐसा ही किया।

जब वयलम्मा को इसका पता चला तो वह बहुत दुखी हुई। भागा-भागी राजा के पास पहुंची और कहने लगी—महाराज आपने यह क्या किया ? मैं तो मन ही मन वीरन को अपना पति मान चुकी थी।

राजा को जल्दबाजी में उठाए गए अपने कदम पर भारी दुख हुआ। वह वीरन से बोला—

वल्लयरेई वेनुमइंडे
विरम्बी यनई केटाल
कोदई महलई
कूंटि बंद—तारेनु
यंदनद पेन्ननई
इष्टमुडन केटालुम
कल्यानम तान मुड़ति
कन्नालम तारेनु

[हे वीर, वयलम्मा की तो बात ही क्या थी, यदि तुम मुझसे मेरी पुत्री मांगते तो मैं उसे भी तुम्हें देने में संकोच नहीं करता। तुम पत्नी के रूप में उसे ग्रहण कर लेते। तुम जैसे वीर को पुत्री देकर मैं गर्व का अनुभव करता।

पोम्पी को जब इस घटना का समाचार मिला तो वह भी रोती हुई वहां पहुंच गई। उसने भी राजा को बुरा-भला कहा। कहने लगी—आपने बिना सोचे-विचारे ही मेरे पति की ऐसी गति कर दी। अब मैं जीकर क्या करूंगी ? मेरे लिए तो सती हो जाना ही उचित है। वीरन ने उसे समझाने का प्रयत्न किया, हमारे भाग्य में ऐसा ही लिखा था, किन्तु पोम्पी नहीं मानी। उसके साथ वयलम्मा ने भी सती होने का निश्चय किया।

वे दोनों देवी के पूजा के लिए मंदिर पहुंची। वीरन भी उसके साथ था। वहां उन्होंने चिता सजाकर अपने प्राण त्याग दिए। तभी एक चमत्कार हुआ। देवी की कृपा से वीरन के हाथ-पांव पुन: जुड़ गए। किन्तु अब देर हो चुकी थी। पोम्पी और वयलम्मा तो जा चुकी थीं। वीरन ने उनका अन्तिम संस्कार किया। फिर यह सोचकर कि अब मैं भी जीवित रहकर क्या करूंगा, उसने तलवार से अपना सिर काटकर देवी को अर्पित कर दिया। फिर स्वयं लुढ़क कर देवी के चरणों में जा गिरा।

वीरन का अंतिम संस्कार करने वाला कोई नहीं था। अत: उसकी आत्मा को मुक्ति न मिल सकी। वह इधर-उधर भटकने लगी। उधर मदुरै में चोर-डाकुओं के उत्पात फिर

बढ़ गए। आम जनता में यह विश्वास पैदा हो गया कि यह सब वीरन की भटकती आत्मा के कारण है।

राजा ने पुनः देवी के मंदिर में पूजा-अर्चना का आयोजन किया। अन्त में देवी ने प्रसन्न होकर राजा को आदेश दिया—

पट्टनम यंगम
पलतिरूवार पूशई शेइय्या
वीरन कुरई तिसद
वेगुवाई मन्नाकल्लिपान

[वीरन की आत्मा को प्रसन्न करने के लिए तुम अपने नगर के हर चौराहे पर वीरन की पूजा का आयोजन करो, तभी तुम्हारे राज्य की जनता को इन आपदाओं से मुक्ति मिलेगी।]

राजा ने वीरन की स्तुति करते हुए कहा—हे वीर, आप एक महान योद्धा थे। हम सब आपके सेवक हैं। आप हमारी रक्षा करें। हमारी सम्पूर्ण प्रजा आपकी पूजा करती है।

नगर के सभी चौराहों पर वीरन की प्रतिमाएं खड़ी कराई गईं। वीरन को एक महान वीर के रूप में पूजा जाने लगा। वीरन ने भी अदृश्य रूप से मदुरै की रक्षा करनी आरम्भ कर दी और कुछ दिन में ही उत्पात समाप्त हो गए।

एक वर्ष बाद मदुरै के राजा के घर पुत्र ने जन्म लिया। राजा ने उसका नाम वीरन ही रखा। इस प्रकार वीरन मदुरै वीरन के नाम से जाना और पूजा जाने लगा।

पुत्तूरघर के चेकोर

उत्तर केरल में कुरड्डोहु नाम का एक धनी परिवार था। वहां के गृहाधिपति कैम्यल जब 60 वर्ष के हुए तो उनकी इच्छा गृह परिवार को त्याग कर तीर्थाटन करने को हुई। उनकी दो बहनें थी। उन दोनों बहनों के दो पुत्र थे। एक का नाम उण्णिक्कोनार और दूसरी का नाम उण्णिचन्द्रोर था। उन दोनों भांजों को बुलाकर कैम्यल ने कहा—

ओन्नुं केलक्कणमुण्णकोन्नारे
नाडतु तेंडानुरच्छु ञानुं
वीट्टिले कार्यवुं नोक्कवेणम

("बेटा उण्णिक्कोनार, मैं अब तीर्थाटन जाना चाहता हूं। घर के सब काम-काज तुम देख लेना।") तल घर, धानघर आदि की चाबियां उसके हाथ में दे दी। दूसरे भांजे को सम्बोधित करके उन्होंने कहा—"बाहर की जमीन-जायदाद आदि को सम्हालने की जिम्मेदारी तुम्हारी है।" उन्होंने फिर आगे कहा, "कि मेरा कोई लड़का नहीं है। दो लड़कियाँ ही हैं। मेरे तुम दो भांजे हो। तुम्हारी अभी शादी नहीं हुई है। तुम दोनों की शादी के लिए मैंने अपनी दोनों बेटियों के बारे में ही सोच रखा था। मेरा धन-सम्पत्ति काफी है। तुम सब प्यार से रहना। व्यर्थ की बातों को लेकर कलह मत करना।"

उन्होंने अपनी बहन कुंकियम्मा को बुलाया। उनसे विदा लेकर अपनी पत्नी के पास गए और कहा कि "मैंने दोनों पुत्रियों की शादी अपने दोनों भांजों से तय कर दी है। तुम भी ऐसा ही करना।" फिर निश्चिंत होकर वह तीर्थाटन को चल दिए।

उन्हें गए कई वर्ष बीत गए। तब एक दिन समाचार आया कि दूर देश के राजमंदिर के सामने कैम्यल बीमार होकर पड़े हैं। इस समाचार को सुनकर उण्णिक्कोनार भागकर मां के पास गया और उनको बताया कि मामा बीमार हैं, चलो हम जाकर ले आएं। तो उण्णिच्चन्द्रोर ने कहा—"घर से निकले सन्यासी बने व्यक्ति को मरने के लिए घर वापस नहीं लाया जा सकता," और चुप हो गया। तब उण्णिक्कोनार अनुचरों को साथ लेकर गया और मामा को डोली में डालकर घर ले आया। उसने अपने घर में बिस्तर बिछाकर उन्हें सुलाया। उनको कस्तूरी स्वर्ण आदि मिलाकर ठंडा पानी पिलाया। जब उन्हें होश आया तो उण्णिक्कोनार से कह कर उन्होंने अपना भंडार खुलवाया। उसमें जो सोने की राशि थी वह पाँच सेर से अधिक थी। उन्होंने उसे भांजे के हाथ में देकर कहा कि "मेरे

मरने के बाद सब क्रिया-कर्म इसी धन से करना और जो बचे उसे आपस में बांट लेना।" इतना कहते ही वृद्ध ने प्राण त्याग दिए।

दोनों भाइयों ने मामा की मृत्यु के बाद विधिवत क्रिया-कर्म किए। चौथे दिन जब फूल उठाने का समय आया तो सब बंधु-बांधव एकत्र हुए। दोनों ही भाई फूल उठाने के लिए आगे बढ़े तो छोटे-बड़े का प्रश्न पहली बार सामने आया। दोनों ने ही बड़े होने का दावा किया।। गांव के मुखिया ने कहा "इन दोनों की माताओं को बुलाकर पूछो।" दोनों की मां ने कहा कि "प्रसव वेदना के कारण उन्हें समय का भान नहीं हुआ।" तब दाई को बुलाया गया। उसने बताया कि उण्णिक्कोनार का जन्म आधी रात को हुआ और उण्णि-चन्द्रोर का जन्म प्रातःकाल में हुआ। पर इतने से भी दोनों संतुष्ट नहीं हुए और मामा के सभी क्रिया-कर्म दोनों ने एक साथ ही किए। इसी बात को लेकर दोनों के बीच में विवाद होने लगा। यद्यपि सब लोगों की बातों से यही माना जा रहा था कि उण्णिक्कोनार ही बड़ा है। पर उण्णिचन्द्रोर अपनी ही जिद् पर अड़ा रहा। अन्त में वहां के राजा ने घोषणा की कि "भगवान के मंदिर में एक पुड़िया में सोना और दूसरी में चांदी बांधकर रखी जाएगी। जो सोना उठाकर लाएगा वह बड़ा और जो चांदी लाएगा वह छोटा समझा जाएगा।

उण्णिचन्द्रोर पहले भाग कर गया और उसने जो पुड़िया उठाई उसमें चांदी निकली। समझौते के अनुसार उण्णिक्कोनार को ही बड़ा माना जाना चाहिए। पर उण्णिचन्द्रोर इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं था। जिद् में आकर उसने कहा—

पोन्नु किट्टियालुं मूप्पेनिक्कु
वेल्लि किट्टियालुं मूप्पेनिक्कु
तृप्पं गोट्टप्पनं पक्षभेदम

(सोना मिले तब भी मैं ही बड़ा हूं। चांदी मिले तब भी मैं ही बड़ा हूं। भगवान ने भी पक्षपात ही दिखाया है।)

इस पर राजा नाराज हो गया और उसने हुक्म दिया कि युद्ध करके ही दोनों निर्णय करें कि कौन बड़ा है। अब दोनों भाई चेकोर की तलाश करने लगे।

उण्णिचन्द्रोर ने अपने लिए देश से अरिङ्डोडर नाम के प्रसिद्ध चेकोर को आमंत्रित किया। वह शक्तिशाली, सब प्रकार के आयुध चलाने में तो दक्ष था ही, विजय पाने के लिए सत्य और नीति के मार्ग से हट कर चलने में भी नहीं हिचकिचाता था।

उण्णिक्कोनार भी चेकोर को ढूंढ़ने निकला पर उसे कोई भी अच्छा चेकोर नहीं मिला। बहुत दूर जाने पर उसे पणा जाति का एक लड़का मिला। उसने बताया कि

करुन्तनार देश में पुतूरां नाम का घर है। वहां तीन चेकोर हैं। पिता, पुत्र और भांजा। पिता बहुत ही प्रसिद्ध है। सात से अधिक युद्ध में विजय प्राप्त कर चुका है, पर अब वृद्ध है। उनके बेटे को चेकोर बनाकर अपने पक्ष में ले आया जाए तो अवश्य हमारी विजय होगी।

उण्णिक्कोनार अपने सेवकों सहित पाणन के बताए रास्ते पर पूछते-पूछते आगे बढ़े। तीन दिन, तीन रात चलने पर वह पतूरांधर के पास पहुंचे। पड़ोस के घर गए। पहले पिता से मिले, उन्हें अपना मंतव्य समझाया, फिर बेटे से सब बातें की। हम आपके पास अपने पक्ष में मदद मांगने आए हैं।

यह सब सुनने के बाद आरोमर चेकोर ने अपने पिता से अंककिषि (वह धनराशि जो पोटल में बांधकर चेकोर को दो जाती है) लेने का अनुरोध किया। पिता ने कहा, "तुम्हें बेचकर हमें जीना नहीं है और वह राशि लेने से इंकार कर दिया। मां से जब उसने अंककिषि लेने को कहा तो मां ने भी मना कर दिया। इसके बाद उसने अपने छोटे भाई को समझाते हुए कहा—

ओन्नुण्टु केलकण नेरनुजा एंटे ओरु के लिक्कु वन्नोरल्ला
अच्छंटे केलिक्कु वन्नोराणु अच्छनु इन्नु वयस्सुकालं
नम्मकिरुवरुमिरिक्कु कालं माट्टाने कोंट्च्छेर कोल्लिच्चूड़ा
अरियुंस्टं कोंटाल किट्टुं नोक्कु बहुमानं कटं कोंटाल -किट्टिलुण्णी
चेकवंमाराय जातिच्चाल पिन्ने वाक्पिटियिल चोल्ले चोको-मार्कु
अंकत्तिन्नारानुं वन्नतेडिकल पोकाते कंटिट्टिरुन्नेकूटा

(मेरे भाई, एक बात सुनो। ये लोग यहां मेरी प्रसिद्धि सुनकर नहीं आए हैं। हम लोगों के रहते हुए उनको शत्रु के आगे मरने के लिए भेजना उचित नहीं है। सम्पत्ति तो उधार ली जा सकती है, पर आदर-सम्मान उधार नहीं लिया जा सकता। चेकोर होकर जिसने जन्म लिया है उसका भोजन आयुध के बल पर है। युद्ध का आमंत्रण आने पर बिना गए चारा नहीं है।)

पिताजी का चौसठवां वर्ष चल रहा है। पिताजी मर जाएं तो उनकी कीर्ति में कलंक लग जाएगा। यह हमारे लिए शर्म की बात होगी। दूसरी बात सुनो—मेरा बाईसवां वर्ष चल रहा है। मेरे आठवें ग्रह में बृहस्पति मारक ग्रह है। प्राचीन समय में बालि की इसी दशा-संधि में मृत्यु हुई थी। वह भी धोखे से मारा गया। मेरी भी मृत्यु कुछ इसी प्रकार होगी। यों मरने से अच्छा है, युद्ध में मैं वीरगति पाऊं। इस प्रकार उसने यह सब कहते हुए अपने छोटे भाई को अनेक प्रकार से समझाया-बुझाया। अपने कुटुम्ब की प्राचीन कथा,

केरल में आने का कारण, केरल में अपने कुल की मान-प्रतिष्ठा प्राप्ति, ऊँचे चरित्र, अपनी काकरि [आयुधाभ्यास कराने की संस्था] संबंधित सब कर्त्तव्य, रीति-रिवाज, आय और खर्च आदि के बारे में विधिवत् बताया। यही नहीं, अपने पारिवारिक सम्बन्ध, मामा, माता-पिता, छोटी बहन आदि के व्यवहार के बारे में भी सब कुछ समझाया। उसने अपनी पत्नी, मामा की बेटी और अपने छोटे पुत्र की पूरी जिम्मेदारियां भी भाई को ही सौंप दी।

यह सब तैयारियां हो रही थी, तब आरोमर की इकलौती बहन उण्णियाची को स्वप्न आया कि उसका भाई पुत्तिरियंक [पहली पहल का द्वंद्व युद्ध] के लिए जा रहा है। उसने जल्दी-जल्दी अपने घर के काम-काज समाप्त किए। सास-ससुर के रोकने पर भी भाई के घर की ओर भाग चली। उसके भाई आरोमर ने उसे अनुनय-विनय से समझाया। अपने हाथ से एक अंगूठी निकालकर बहन के हाथ में दी और कहा, "तुम्हारे गर्भ से जो लड़का हो उसको मेरा नाम ही देना। उसे यह अंगूठी पहनाना और सब प्रकार की युद्ध विधाओं में पारंगत बनाना। उसे प्रथम श्रेणी का चेकोर बनाना। अंक [युद्ध] के लिए आमंत्रण आए तो उसे साहस बंधाकर भेज देना। कभी मत रोकना उसे। हम परम्परा से ही चेकोर परिवार के हैं। जब पिताजी इतने युद्धों पर गए तो क्या हमारी बुआ या दादी रोती थीं ? तुम भी उन जैसी हिम्मत वाली बनो।" इस प्रकार बहन को हिम्मत बंधाकर वह पिता के पास गया और उनसे पूछा कि पुत्तिरियंक के लिए नई छुरिका [छुरी] बनवानी है, किसे कह भेजूं। पिता ने अपनी बहन के लड़के चंतु को भेजने के लिए कहा। उसने जवाब दिया कि चंतु को भेजना ठीक नही है, वह धोखा दे सकता है। पर पिता ने एक न सुनी और अपने भांजे को जिसे वह बेटे से अधिक प्यार करता था, छुरिका बनवाने के लिए भेज दिया। जाते समय उसे दुश्मन के जाल में न फंसने की भली प्रकार चेतावनी दी। लेकिन होनहार को कौन टाल सकता है। छुरिका बनाने वाला अच्छा लुहार उस देश के आस-पास केवल कोलसीरनाडु में ही था। उस ओर जाने वाले चंतु को अरिङ्डोडर चेकोर ने देख लिया। उसने उसे बड़े प्यार से बुलाया, आदर-सत्कार किया। यही नहीं एक दिन के लिए अपने पास रोक भी लिया। उसी बीच चेकोर अरिङ्डोडर, उसकी बेटी और उसकी भांजी ने चंतु को इतना मुग्ध कर लिया कि वह उसके लिए कुछ भी करने को तैयार हो गया। उन लोगों ने चंतु से वायदा करवा लिया कि चारों की चारों छुरिकाओं में वह लोहे की जगह बेंत की कीलें लगवाकर ऊपर से उन कीलों को सोने-चांदी से मढ़वा देगा। चंतु को छुरिका लेकर सीधे युद्धस्थल पर ही पहुंचना था।

अब उधर जब राजा ने यह तय कर दिया कि युद्ध होगा तो यह प्रश्न उठा कि 'अकत्तरड' [युद्धमंच] कहां बनाया जाए ? और इसे कौन बनाएगा ? उण्णिचन्द्रोर ने बताया

कि प्रजापति नाड की सीमा में ही युद्धमंच बनाना चाहिए। उरिड्डोडर ने अपने जान-पहचान वाले को ही मंच बनाने का आदेश दे दिया। साथ-साथ यह भी बता दिया कि उसमें इस प्रकार काम करना चाहिए कि विरोधी चेकोर का पैर जमते ही फलक टूट जाए। इस काम के लिए उसने शिल्पी को अलग से पैसे दिए। इस प्रकार उण्णिच्चन्द्रोर के निरीक्षण में सारी तैयारियां हो गईं।

आरोमर चेकोर तैयार हो कर जैसे ही घर से बाहर निकला। सामने से धोबी अपने कपड़ों की गठरी लेकर निकला। यह अपशकुन टालने को थोड़ी देर बैठकर फिर निकला तो कुल्हाड़ी लिए लकड़हारा उसके सामने पड़ गया। दूसरे अपशकुन को टालने के लिए फिर दूसरे स्थान पर बैठकर चला तो चार-पांच कदम चलने पर ही एक रास्ते के एक ओर से आम के पेड़ की बड़ी शाखा उसके सामने टूट कर गिरी। फिर वहीं बैठकर उसने इस अपशकुन को भी टालने का प्रयत्न किया। चौथी बार फिर से चलना शुरू किया तो पीपल का एक पेड़ ही जड़ से टूट कर गिर पड़ा। फिर भी भगवान का नाम लेकर वह आगे चल पड़ा। दिए हुए वचन और युद्ध के समय को तो टाल नहीं सकते थे।

आरोमर, उण्णिक्कोनार के घर में पहुंचा। खूब धूम-धाम से उसका स्वागत हुआ। लेकिन छुरिका बनवाने गया चंतु अभी तक नहीं आया था। इसी से चिन्तित होकर वह अपने साथियों के साथ लुहार के यहां पहुंचा। चंतु लुहार के यहां ही था। वह बोला, "जब मैं आया था तो लुहार नहीं था। इसीलिए देर हो गई। छुरिका तैयार है।" लुहार की पत्नी जानती थी कि छुरिका में धोखे का काम है, मगर यह बात कैसे कहूं? उसने कहा कि, "तुम मुझे छुरिका चला कर दिखाओ। मैंने कभी देखा नहीं है।" लेकिन बिना युद्ध के छुरिका चलाना धर्मयुद्ध नहीं है। बिना मतलब छुरिका चलाना मना है। ऐसा कहकर चंतु ने लुहार पत्नी का आग्रह टाल दिया। वह साधु स्त्री फिर रो-रो कर अपने कुल देवता से प्रार्थना करने लगी कि इस वीर की रक्षा करना।"

आरोमर चेकोर चंतु और अन्य साथियों के साथ सुनिश्चित युद्धस्थल पर पहुंचा। अब बढ़ई से युद्धमंच लेने की क्रिया का समय हुआ। आरोमर चेकोर युद्धमंच के चारों ओर घूमा। युद्धमंच में धोखा समझ कर उसने शिल्पी को बुलाया। शिल्पी ने अपने साथियों से कहा कि वे छिप जाएं उसे अपने कर्मों की सजा भुगतने दें। मुख्य बढ़ई ने आरोमर से गिड़-गिड़ा कर क्षमा मांगी और खामियों को दूर कर मंच ठीक कर दिया।

आरोमर ने अपनी युद्ध क्रिया का प्रारम्भ किया। उसने मंच के ऊपर एक पटरी रखी। पटरी के ऊपर एक चांदी की थाली भरकर साफ-सुथरा चावल, उसके ऊपर एक नारियल, नारियल के ऊपर एक पक्की सुपारी, उसके ऊपर मुर्गी का एक अण्डा, उसमें एक

सुई लगा दी उस सुई की नोंक पर अपनी छुरिका लगाई और छुरिका की नोंक पर स्वयं खड़े होकर उसने सात प्रकार के नृत्य और तरह-तरह के अभ्यास लोगों को दिखाए। एक-से-एक बढ़कर अभ्यास की चुस्ती, सूक्ष्मता, शीघ्रता आदि से प्रेक्षक मुग्ध हुए। देश के राजा विद्वान और विशिष्ट जनों ने आरोमर को धन की थैलियां, रेशमी वस्त्र और गहने आदि देकर सम्मानित किया। यह सब देखकर अरिड्डोर भय से अन्दर-ही-अन्दर कांपने लगा। अपना अभ्यास प्रदर्शित कर आरोमर नीचे उतरा और पूछा, "अरिड्डोडर भाई, बोलो, पहले मुर्गों का द्वंद्व कराओगे या आदमियों का ?" उसने उत्तर दिया—"पहले मुर्गों का ही हो जाए।"

आरोमर ने उत्तर दिया, "अवस्था और ख्याति दोनों में आप मुझसे बड़े हैं, अतः पहले आप उड़ाएं।" अरिड्डोडर ने अपने मुर्गे, अरक्कन पुल्ली को हाथ में लेकर छाती से लगाया और लड़ाई हेतु विलम्बन न हो, इसलिए जल्दी से उड़ा दिया। मुर्गा उड़कर मंच पर आ गया और जोर-जोर से बांग देने लगा। तब आरोमर ने अपने पक्ष के नेता उण्णिक्कोनार से पूछा कि क्या आप मुर्गा लाए हैं ? उण्णिक्कोनार को इन सब रीति-रिवाजों का पता नहीं था। इसी कारण वह मुर्गा नहीं लाया था। आरोमर ने कहा मेरे पिताजी ने इतने युद्ध किए पर मुर्गा लेकर कभी नहीं गए। मेरे मुर्गे के चोंच के लिए कोक्करि लडाने के लिए अंक-पुष्प, दोनों पंखों में सोने के कवच और दोनों पैरों में चांदी के पायल होंगे। उसने फिर कहा, "मुझे आमंत्रित करने वाले गृहनाथ आप अंक (युद्ध) हेतु कारण सहित सबके सामने सच-सच बोलिए," यह कहते हुए उस वीर ने अपने हाथ में एक मुर्गी का अण्डा लेकर छाती से लगाया और आंखें बंद कर ध्यान-मग्न हो गया। उण्णिक्कोनार ने अपने मामा को तीर्थ-यात्रा से लेकर सब बातें सच-सच लोगों को बताई और अन्त में कहा, इस तरह हम दोनों भाईयों में कौन बड़ा है कौन छोटा, इस तथ्य का द्वंद्व युद्ध से निर्णय करने लिए ही आप सबको यहां आने का आमंत्रण दिया गया है। यही सत्य है। सत्य के अलावा मैंने कुछ नहीं कहा।

जैसे ही उण्णिक्कोनार ने अपना कथन समाप्त किया। उसी क्षण आरोमर के हाथ से अण्डा दो टुकड़े होकर गिरा और समस्त युद्ध अलंकारों से सजा मुर्गा शत्रु पक्ष के मुर्गे के सामने खड़ा होकर बांग देने लगा। थोड़ी देर लड़ने के बाद ऐसा लगा कि आरोमर का मुर्गा थकने लगा है, यह देखकर आरोमर ने तुरन्त कुक्कटमंत्र का ध्यान लगाया। इससे आरोमर का मुर्गा नए तेज और उत्साह से लड़ने लगा और थोड़ी ही देर में शत्रु के अरक्कन पुल्लि नामक मुर्गे को चोंच से मार-मार कर, नाखुनों से चीरकर मार दिया।

विजय निश्चित आरोमर की ही थी पर यह बात सबको विदित हो उससे पहले ही अरिड्डोडर ने आगे बढ़कर मंच की तीन प्रदक्षिणा की और सूर्य को प्रणाम कर सीढ़ी लगा-कर मंच पर चढ़ गया। वहीं से प्रतिपक्षी आरोमर को बुलाने लगा। इस पर आरोमर ने अपने पति गृहपति से पूछा कि क्या वह सीढ़ी लेकर आए हैं ? पर उण्णिक्कोनार ने कहा कि उसने इसका प्रबंध नहीं किया है। तब उसने शत्रु पक्ष से सीढ़ी मांगी। उन्होंने उत्तर दिया कि सीढ़ी हमारे लिए है, तुम्हारे लिए नहीं। तब आरोमर ने जोर से सबको सुनाकर कहा, "मेरे पिता ने सात युद्धों में शत्रु का मर्दन किया। बारह युद्धों में प्रतिपक्षी को पराजित किया पर मंच पर चढ़ने के लिए कभी सीढ़ी नहीं ले गए। उस पिता का मैं पुत्र हूं। मैं बिना सीढ़ी के ही मंच पर चढ़ूंगा। चंतु। तुम भी मेरे समान वीर हो। उड़कर मंच पर चढ़ो। बातों-बातों में उसने मंच की तीन प्रदीक्षणा की, सूर्य को प्रणाम किया, अपने कुल देवता और पूर्वजों तथा पिता का ध्यान किया, सात पग पीछे लिए, तीन पग आगे चला और कूद कर मंच पहुंच गया। चंतू भी साथ हो लिया।

आरोमर ने रीति का ध्यान करके कहा, "अरिड्डोडर, आप मुझसे ख्याति और उम्र में बड़े हैं। आप ही पहले वार करें, आप केवल काष्चयंक ही करेंगे। लेकिन धोखे का प्रयोग नहीं करेंगे।" काष्चयंक शुरू हुआ। अरिड्डोडर ने धोखे से अन्य आयुधों का भी प्रयोग किया। आरोमर समझ गया। उसने लोगों के सामने इस धोखेबाजी को सप्रमाण प्रकट कर दिया। जब लड़ाई अपने पूरे यौवन पर आई, तो एकाएक आरोमर की छुरिका टूट गई। उसने चंतु से दूसरी छुरिका मांगी तो उसने कहा कि दूसरी छुरिका लेकर नहीं आया है। जब आरोमर ने उसकी छुरिका मांगी, तो उसने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे समान ही वीर हूं, अपनी छुरिका कैसे दे दूं ? चंतु की बात सुनकर आरोमर समझ गया कि उसे लुहार ने नहीं चंतु ने ही धोखा दिया है। अन्ततः उसने टूटी हुई छुरिका से ही लड़ने की ठानी। अरिड्डोडर की छुरिका से आरोमर की नाभि के पास तिल के बराबर रेखा खिंच गई। उसने उस घाव को वस्त्र के नीचे छिपा लिया। इसी समय आवेश में आकर उसने टूटी छुरिका से ही वार किया। अरिड्डोडर का सर धड़ से अलग हो गया। इस प्रकार आरोमर विजयी घोषित किया गया। थकावट और लड़ाई के घाव के कारण वह मंच पर ही चंतु की गोद में सर रखकर लेट गया। मौका पाकर चंतु ने पास रखे दीपक की नोक से उसके घाव को चीरकर और बढ़ा दिया और कूदकर अरिड्डोडर के साथियों के बीच जा छिपा। आरोमर छिटक कर उठ बैठा और अपने गृहपति को बुलाकर कहा—

एन्ने कोडन्नोरे वाषुन्नोरे ! कीषूरिड्त्तिले उण्णिकोन्नारे !
नम्मुटेयंकं जयिच्चितल्लो। मून्क्ट्यार्त्तवेडियं वेप्पिन्
अरियिट्टु वाष्च कषिप्पिक्केणं तंटेट्ट कूडि कषिप्पिक्केणम्।

(मुझे ले आने वाले कीषुरिटत्तं निवासी उणिक्कोन्नार ! हमारे पक्ष की जीत हुई। आप विजय चिन्ह के रूप में तीन बार जय-जयकार कराके इक्कीस तोप चलवाइए। अपने आधिपत्य ग्रहण और पालकी आरोहण की क्रिया भी अभी कराइए।)

आरोमर के कहे अनुसार उणिक्कोनार ने अग्रजत्व स्थापित कर सब कार्य विधिवत-पूर्ण किए। आरोमर ने ताड़पत्र और नाराज [कलम] मगवाई और सब बातें विस्तार से लिखी और उणिक्कोनार से कहा कि वह पत्र उसकी बहन उण्णियाची को भिजवा दें। घाव ठीक होने वाला नहीं है। उसे जल्दी ही अपने घर पहुंचा दिया जाए।

तुरंत सोने की पालकी मंगाई गई। उसी पर चढ़कर वह अपने घर चल पड़ा। पालकी को अपने घर से थोड़ी दूर रुकवाकर वह उतर गया। उसने सोचा मेरे माता-पिता मुझे पालकी में आता देखेंगे तो सिर पटक कर मर जाएंगे। पैदल चलने पर मुझे वह दूर से देख लेंगे कि मैं जिन्दा हूं। पिता सामने ही बैठे थे। उनके चरण छूकर उसने प्रणाम किया। पिता ने कहा, "तुमको बहुत कष्ट हो रहा है। घाव कहां है," उसने उत्तर दिया कि युद्ध में तो तिल बराबर खरोंच लगी थी। युद्ध जीतने के बाद में चंतु की गोद में वह क्षणभर को सर रख कर लेट गया। उसने दीपक के नुकीले भाग से घाव खींच बड़ा कर दिया। इसी से घाव मारक बन गया है। मैंने शुरू में ही कहा था कि यह चंतू धोखेबाज है पर आप ने नहीं माना। सब विधि का विधान है। फिर उसने मामा के घर से अपनी पत्नी और बेटे को बुलवाया, दोनों की देख-भाल का भार अपने भाई को सौंपा, एकत्रित जन-समुदाय और देश के राजा को प्रणाम किया और कहा कि अब हम कभी नहीं मिलेंगे। पर मैंने देश, मां-बाप, अपने मामा, कुल देवता और पुरखों की शान को ऊंचा किया, उनका नाम रखा है। अब मुझे 'कुत्ता' [युद्ध वस्त्र] खोलने की आज्ञा दीजिए। सबकी आँखों में आंसू आ गए। आरोमर ने जैसे ही अपने वस्त्र का बंधन खोला उनके प्राण-पखेरू उड़ गए।

दिन-महीने बीतते गए। आरोमर जब युद्ध के लिए गया था, तब उसकी बहन उण्णियाची गर्भवती थी। उसको लड़का हुआ। अपने भाई के नाम पर उसने उसका नाम आरोमरूण्णि ही रखा। तीन वर्ष की उम्र में उसका मुंडन कराया गया। पांचवें साल में कान छिदवाए गए और सातवें वर्ष में लिखना-पढ़ना सिखाने के साथ-साथ शस्त्र विद्या में भी उसे पारंगत बनाया गया। छोटी-सी उम्र में ही वह बहुत ही समर्थ और शक्तिशाली योद्धा बन गया।

जब वह सोलह-सत्रह वर्ष का हुआ तो एक बार अपने मित्र के साथ कारा [खो-खो जैसा एक खेल] देखने गया। वहां उसका किसी से कहना-सुनना हो गया। उसने ताना देते

हुए कहा—बड़ा रौब जमा रहा है। ऐसा ही घमंड है तो अपने मामा के हत्यारे से बदला क्यों नहीं लेता। यह सुनकर आरोमरूण्णि हक्का-बक्का रह गया। मुंह लटकाए वह अपने घर आ गया और कमरे में लेट कर रोने लगा। मां उण्णियाची ने प्यार से इसका कारण पूछा। उसने सारी बात बताई और पूछा, "मां मेरे मामा की हत्या किसने की। पहले तो मां सकपकाई, पर मन कड़ा करके उसने सारी बातें बता दीं। साथ ही, वह पत्र भी लाकर दे दिया जो मामा ने उसके जन्म से पूर्व उसकी मां को लिखा था। आरेमरूण्णि की आंखों में खून उतर आया। वह मां से तेल लेकर नहाने चल पड़ा। स्नान-ध्यान कर आने के बाद अपने कमरे में जाकर युद्ध के वस्त्र आभूषण आदि पहने। मां ने पूछा, "बेटा कहां की तैयारी है ?"

"मैं चंतू से अपने मामा का बदला लेने उसके देश जा रहा हूं।"

"बेटा चंतू बड़ा धोखेबाज है, बिना कारण तुम्हारे मामा को मारा। अब कारण बताकर तुम्हें मारेगा। बेकार मरने मत जाओ।"

पर आरोमरूण्णि नहीं माना और पूरी तैयारी कर कड़री में खड़ा हो गया। मां की आंखों में आंसू आ गए। वह बोली—

पुत्ररिल्लाते कोतिक्च कालं कांमान् कोतिच्च मकनल्लो नी मून्नु
वयस्सिलमुटि थिरक्कि अंजु वयस्सिलु कांतु कुत्ति एषु वयास्सिलेषुत्ति
नाक अधरविद्यग्र हिप्पिच्चु ज्ञान् वेट्टु पययं पठिप्पिच्चु ज्ञान्
अतुकोंटुमम्यासं तिकयञ्जिट्टु।

"बाल-बच्चे न होने से कितने ही बरसों तक राह देखती रही मैं। तरस-तरस कर अंत में देव कृपा से मिले हो तुम बेटे। तीन साल की आयु में मुंडन कराया, पांच साल में कान छिदवाया, सातवें साल में विद्यारम्भ कराया और लिखना-पढ़ना सिखाया, शस्त्र प्रयोग, तरह-तरह के आयुध प्रयोग सिखाए मैंने। इतने में संतोष न पाने पर तुलु देश के विख्यात गुरु को बुलाया और तीन साल तक यहीं गुरुकुल बनाकर अभ्यास कराया। अपने देश के और तुलु देश के सब प्रकार के आयुधों का अभ्यास तुमने पाया है। अब अगर तुम वहां जाकर मारे गए तो मैं किसको देखकर जीऊंगी ?"

आरोमुण्णि ने उत्तर दिया—"मां, इस तरह सोचकर दुखी मत हो। मेरे मामाजी की कृपा रही तो मैं अवश्य ही चंतु से बदला लूंगा। उसका सिर लेकर ही मैं लौटूंगा।"

तब उण्णियाची ने कहा—"बेटे, तुम पहले पुत्तर घर में जाओ। बड़े दादाजी कलरी के अंदर है। उनसे विदा लेकर ही जाना। और एक बात सुनो मेरे मुन्ने—अपने मामा के बेटे कण्णप्पुण्णि को तुम साथ ले जाना। मामा की चारों छुरिका सम्भालकर तलघर में रखो

हैं। मामा के रक्त से सना हुआ वस्त्र भी वहां है। वह तुम साथ ले जाना। आज और कल मैं तुम्हारी राह देखूंगी।

"परसों भी नहीं आए, तो मैं पूछ-पूछ कर वहां पहुंचूंगी। याद रखो, युद्ध में लड़ते-लड़ते वीरगति पा भी गए, तो धूम-धाम के साथ रेशम के कपड़े में लिपटवा कर सब क्रियाएं करवाऊंगी। यदि धोखा खाकर मरे, तो मैं कच्चे नारियल के पत्त में बंधवा कर फिकवा दूंगी। अशोच भी नहीं मानूंगी।" आरोमरूण्णि ने कहा—"जो भाग्य में है, वही होगा। आप मुझे आशीर्वाद तो दीजिए।" मां के चरणों में प्रणाम करके वह वीर चल पड़ा।

उसने सब देवताओं के मंदिर में दर्शन किए, पूजा करवाई, मनोतियां मानी। यह सब करके सीधा वह मामा के घर पहुंचा। कलरी में पहुंचते ही उसकी मामी कुंचुण्णूलि भांजे को देखकर बहुत खुश हुई, प्यार से बिठाया और पूछा—"पर मेरे बेटे, यह वेष-भूषा कैसी है? तुम्हें क्या चाहिए? ऐसी वेष-भूषा, ऐसा बनाव-शृंगार तुम्हारे मामा के गुजरने के बाद मैंने नहीं देखा।" वह जोर-जोर से रोने लगी। इस वेष-भूषा में तुम कहां जा रहे हो। मामी को धीरज बंधाकर वह बोला, "मेरा भाई कण्णप्पुण्णि कहां है? फुफेरे भाई का आगमन सुन कण्णप्पुण्णि पूजा समाप्त कर बाहर आया और भाई से प्यार से लिपट गया। कुशल-क्षेम पूछने के बाद उसके आने का कारण पूछा। फिर दोनों ने साथ-साथ चंतु से बदला लेने की योजना बना ली। तब मामी ने अपने बेटे से कहा, "तुम भी अपने पिताजी की ही साज-सज्जा पहनकर जाओ।" दोनों ने तैयार होकर तलघर खुलवाकर चारों छुरिका और रक्त-सिक्त कुर्त्ता ले लिया और मामा को सादर प्रणाम कर तलघर के द्वार पर ताला लगाकर बाहर आ गए। मामी ने कहा एक बार छुरिका निकालकर जाने से पहले उसका नाद तो सुनाओ। मामी की बात मानकर आरोमरूण्णि ने छुरिका उठाकर हिलाया। उसकी आवाज की प्रति-ध्वनि चारों दिशाओं में फैल गई। बादल की गर्जना जैसा शब्द सुनकर कलरी में बैठे दादाजी बाहर निकल आए, और चौंककर बहू से पूछा—बेटी, अपने बेटे की मृत्यु के बाद मैंने इस प्रकार छुरिका की गर्जना नहीं सुनी। क्या कोई दुश्मन आया है?"

"नहीं पिताजी, अपना प्यारा भांजा आया है। वह चंतु से अपने मामा का बदला लेना चाहता है। साथ में आपका नाती भी जा रहा है।"

अड़ोस-पड़ोस के लोग भी छुरिका की आवाज सुनकर भागे आए। क्या कोई चेकोर लड़ने आया है? देश के राजा को भी यही शंका हुई। वह एक हजार नायर सैनिकों के साथ पत्तूरंधर के सामने आया। गृहस्वामिनी ने उसका स्वागत कर अपने भांजे का परिचय कराया और बताया कि वह चंतु से अपने मामा का बदला लेने जा रहा है साथ में उनका

भाई भी जा रहा है। राजा ने पुरस्कार में अपने हाथ का सोने का कड़ा आरोमरूण्णि को पहना दिया और कण्णप्पुण्णि को रेशमी रूमाल दिया। उनका हौसला बढ़ाते हुए कहा, "अपने देश के राजा और पिता सरीखे मामा का नाम रोशन करके ही आना। अन्यथा अपनी कलरी को शर्मिदा होना पड़ेगा।"

"आपका आशीर्वाद तथा ईश्वर की कृपा रहे तो दिवंगत मामा के अनुग्रह से हम दोनों सफल होकर आएंगे ओर चंतु का सर काटकर लाएंगे।" राजा और अन्य लोग प्रसन्न होकर लौट चले। अब तक की सारी बातें दादाजी के कान में भी पहुंच चुकी थी। उन्होंने दोनों बच्चों को समझाया, "तुम वीर हो, पर चंतु धोखेबाज है। मैंने बेटे और भांजे दोनों को सभी विद्यायें सिखाई, पर बुरी संगत में चंतु लम्पट और धूर्त हो गया। वह बड़ा अभ्यासी और अनुभवी है। तुम अपने दांव-पेंच मुझे पहले दिखाकर अभ्यास करो। दोनों ने ऐसा ही किया। दादाजी ने उनको एक नया दांव सिखाया जो चंतु को नहीं मालूम था, और आशीर्वाद देते हुए फिर उसकी ओर से सावधानी बरतने का निर्देश दिया। दोनों लड़कों ने दादाजी के चरण छूकर प्रणाम किए। मां और मामा को प्रणाम कर आशीर्वाद ले चल पड़े।

रास्ते में वे आरोमर के मित्र तथा आश्रित चेटिरयार के घर गए। उन्होंने भी बच्चों को पहचान लिया उसने भी उन्हें रोकने का बहुत प्रयत्न किया पर आरोमण्णि का एक ही उत्तर था—

जनिच्चालोरिकल मरिप्पुण्टल्लो
वीरियत्तोटे मरिक्कनल्लु।
अम्मावने चंतु चतिच्चु कोन्नु
अड़लें नेरिट्ट कोन्नु कोट्टे।

"जन्म लिया है तो मरना भी पड़ेगा। फिर वीर मृत्यु ही प्राप्त करना अच्छा है। मेरे मामाजी को चंतू ने धोखा देकर मारा। हमको भले ही सीधे युद्ध में मारे। जैसा विधि है वैसा ही हो।"

वहां से चलते-चलते दोनों कोलस्त्री देश में पहुंच गए। दोनों रास्ते के एक मंडप में बैठकर सोचने लगे, हम पहले-पहल आए हैं। चंतु का वास्तविक रूप भी हमने नहीं देखा है। यहां की परिस्थितियां भी हमें समझ लेनी चाहिए। वह इस प्रकार बातें कर ही रहे थे कि पाण जाति का एक लड़का वहां आ पहुंचा। धीरे-धीरे उसे लोगों ने आरोमर चेकोर की मृत्यु, उसका कारण अरिड्डोडर और चंतु की धोखाधड़ी, मिली-भगत, आदि बातों को बताया। यह भी बताया अब चंतु अरिड्डोडर की बेटी और भांजी दोनों का पति है। उसकी

कलरी का भी वही स्वामी और गुरु है। आराम से रहता है, दुश्मनों के डर के मारे वह अपने ही घर में सात तालों से बंद कमरे में, जिसके दरवाजे की किवाड़ में मूसल फंसा है, रहता है। पीछे एक गुप्त दरवाजे से ही आता-जाता है।

आरोमुण्णि ने मामा के रक्त-रंजित वस्त्र पहन लिया और चंतु के घर को ओर चल पड़ा। घर के बाहर बैठी कुट्टिमणि से यह पूछने पर कि चंतु कहां है? वह उनका स्वागत-सत्कार करने लगी। आरोमुण्णि ने कहा, मैं स्वागत-सत्कार के लिए नहीं आया, चंतु कहां है बताओ।" आवाज सुनकर चंतु ने दीवार से उचककर झांका और दुश्मन जानकर कलरी के अंदर जाकर द्वार बंद कर लिया।

जब किसी भी प्रकार द्वार नहीं खुला तो आरोमुण्णि ने अपने कुलदेव, मामा और पूर्वजों को याद कर सात कदम पीछे हटकर और तीन कदम आगे बढ़कर दरवाजे पर कसकर लात मारी। द्वार टूट कर जा पड़ा। सातों ताले और मूसल के भी टुकड़े-टुकड़े हो गए। चंतु उठकर पीछे के द्वार से भागने लगा। वहां कण्णप्पुण्णि तैयार था, वह उससे लड़ने के लिए भिड़ गया। कण्णप्पुण्णि हारने लगा तो उसे हटाकर आरोमुण्णि आंगन में आ गया। वह भी थकने लगा। तब कण्णप्पुण्णि ने दादा के दांव की याद दिलाई। उधर आरोमुण्णि को अचानक यह याद आया कि किस प्रकार उसने मेरे मामा को धोखे से मारा है। पूरी शक्ति और गुस्से से उसने एक वार किया जिससे पराजित होकर चंतु गिर पड़ा। उसने कहा—

"ओन्नुट केल्‌कणमारो मुण्ये। पतिनेट्टु कल्लरियिल पयट्टिञ्ञानुं
एन्नोड आरुं जयिच्चोरिल्ला, पुतूरं आरोमर चैकवरे अवनोटु पोरुतु
ञान् निन्निट्टुल्लू, निन्नोटु ञानुं मरंड़यिप्पोल।
अतुकोण्टेनिक्कोट्टुं भयवुमिल्लन ञानोरु कुटिप्पिष चे
ऐनिकु मरिप्पान विघियुंवन्नु। वेल्‌लं तन्नि······कोन्नीटेणम्

"आरोमुण्णि, एक बात सुनो—अठारह कलरियों का मैं गुरु हूं। आज तक कोई मुझे हरा नहीं सका। पुतूरं आरोमर चेकोर मेरे सामने खड़ा तो रहा, पर हरा तो नहीं पाया। तुमने आज मुझे पराजित किया है। इसमें मुझे दुःख नहीं है। क्योंकि मैंने कुटुम्ब के प्रति अपराध किया है। इसलिए अब मृत्यु अनिवार्य है। तुम मुझे थोड़ा पानी पिला दो, फिर मार देना।"

आरोमुण्णि क्रोध और मामा के दुख से कांप रहा था। उसने गरज कर सवाल किया—"क्या जब मेरे मामा थककर तेरी गोद में लेट गए थे, तब तूने उन्हें पानी पिलाया था?"

कण्णप्पुण्णि ने कहा, भैया इस जैसे हम न बनें, इसे पानी पिला दो। तब चंतु ने अपनी पत्नी कुट्टिमापी को बुलाकर पानी मांगा। उसने उसे पांच सेर वाले पानी के लोटे में अच्छा घी भर कर उसे पीने को दिया। आरोमुण्णि ने कण्णप्पुण्णि से कहा, यह धोखे-बाजों की नगरी है। पानी का बर्तन देखकर पीने को दो। उसने घी से भरा बर्तन देखकर उसे फेंक दिया। और कहा, "इसे भी प्यासा हो मरने दो।" पर आरोमुण्णि ने कहा, "क्रूरता और धोखा हमारी परम्परा नहीं है। मरते समय यदि इसे पानी नहीं पिलाया तो हमारी परम्परा, हमारा देश, हमारे राजा और हमारे दादा के नाम को कलंक लगेगा।" उसने चंतु को पानी पिलाने के लिए कहा। उसकी पत्नी ने अब की बार गंगा सागर से पानी लाकर दिया। पानी पीकर चंतु बड़ी फुर्ती से लड़ने के लिए उठा। आरोमुण्णि ने दादा के नए दांव का प्रयोग किया। चंतु का सर और एक हाथ कट कर गिर पड़ा।

कण्णप्पुण्णि ने उसे रेशम के कपड़े में लपेट लिया। वहां उन्होंने अपने इस काम की कैफियत उस देश के राजा और मुखियों को दी। सभी ने उन दोनों बाल योद्धाओं को शाबासी दी और उस देश के राजा और कुरुङ्ङनाडु के राजा ने वीर शृंखला की उपाधि देकर आरोमुण्णि को सम्मानित किया। उन दोनों को चेकोर की पदवी भी दी।

वे दोनों रास्ते में उस लुहार के पास गए। जिसने छुरिका बनाते समय चंतु की प्रेरणा से लोहे की कीलों के बदले बेंत की कीलें लगाई थी। उसे वे सारी बातें याद दिलाकर उन लोगों ने उसका सर काट लिया, लेकिन उसकी पत्नी को थैली भर कर स्वर्ण दिया और कहा कि जब कभी भी मदद की जरूरत हो, पुत्तूरघर आ जाए, उसे निराश नहीं लौटना पड़ेगा।

उसके बाद वे पुत्तूरघर में बड़े दादा के पास आकर उन्हें साष्टांग प्रणाम करने के बाद चंतु का सर दिखाया। वृद्ध की आंखों से आनंद और दुख के आंसू बह चले। दोनों बच्चों को उसने बांहों में भरकर छाती से लगा लिया।

फिर चंतु के सर को देखकर कहा, "तुम मेरे भांजे थे। बेटे से अधिक प्यार से मैंने तुमको पाला, शिक्षा दी, तो भी लालच में आकर ईर्ष्या से अंधे होकर तुमने मुझ गुरु और पिता समान मामा को धोखा दिया। काश! तुम्हारी यह दशा मुझे न देखनी पड़ती।"

काटमराजु का युद्ध

वर्तमान आंध्रप्रदेश के अन्तर्गत प्राचीन काल में एक नगर था यलमंचि। यलमंचि पर उस समय यादव राजाओं का शासन था जिन्हें परम्परा से वीरता का वरदान प्राप्त था। उनकी वीरता की यश गाथाएं दूर-दूर तक फैली हुई हैं। कदाचित ही कोई यादव राजा ऐसा रहा हो जिसने अपने जीवन काल में कोई बड़ा युद्ध नहीं लड़ा हो। ऐसे युद्धों की संख्या सात बताई जाती है। इन युद्धों में अनेक यादव राजाओं ने दूसरों के हित के लिए लड़ते हुए अपने प्राणों को होम करने में भी कोई संकोच नहीं किया।

यादव नरेशों की इस परम्परा में ही अत्यन्त प्रसिद्ध नरेश हुए हैं आवुल बलराजु। एक दिन वह अपने मंत्री तरिमृत राजू के साथ शिकार के लिए निकले। शिकार खेलते-खेलते वे घने जंगल में दूर निकल गए किन्तु हाथ कुछ नहीं लगा। उल्टे प्यास के मारे उनका बुरा हाल हो गया। अतः वे वहां एक तालाब के निकट पहुंचे। वहां वे क्या देखते हैं कि एक कमल का फूल पानी में तैरता हुआ विचित्र ढंग से हिल रहा है। ध्यान से देखने पर उन्हें फूल की पंखुड़ियों में लिपटा एक नन्हा-सा बच्चा दिखाई दिया। उसे देखकर राजा और मंत्री दोनों आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने अपनी बांहें फैलाकर बच्चे को अपने पास आने का संकेत किया। बच्चा राजा की बांहों में आ गया। राजा बलराजु उसे लेकर अपने महल को लौट आए और बच्चे के पालन-पोषण के लिए उसे अपनी पुत्री कुमरक्का को सौंप दिया। वहीं महल में रहकर बच्चे का लालन-पालन होने लगा।

बालक का नाम रखा गया पल्लिकोंडा रघुपति। बालपन से ही उसने अत्यन्त कुशाग्र-बुद्धि होने का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया। यादवों का विश्वास था कि वह विष्णुमूर्ति का अवतार है और उसे त्रिकाल का ज्ञान है। उसकी बुद्धिमत्ता के कारण आवुल बलराजु ने बड़ा होने पर उसे अपना मंत्री नियुक्त कर लिया।

आवुल बलराजु की मृत्यु के बाद उसके ज्येष्ठ पुत्र सिंहाद्रि राजु के स्थान पर उसका द्वितीय पुत्र पेद्दिराज अथवा पोलुराजु सिंहासन पर बैठा। अनेक जप-तंत्रों के बाद पोलुराजु को एक पुत्र तथा एक पुत्री की प्राप्ति हुई। पुत्र का नाम था काटमराजु और पुत्री का नाम था पापुनूका।

पोलुराजु अपने पिता आवुल बलराजु की भांति ही वीर था, किन्तु मुकंटि महाराज से युद्ध करते हुए चित्रकल दुर्ग युद्ध में वह भी वीरगति को प्राप्त हुआ। मरने से पूर्व वह अपने

पुत्र काटमराजु का हाथ पल्लिकोंडा के हाथों में सौंप गया। पल्लिकोंडा उसका मंत्री भी था और उसकी बहन कुमरक्का का पोषित पुत्र भी था।

पल्लिकोंडा काटमराजु को लेकर यलमंचि की ओर चल पड़ा जो उस समय काटमराजु की मौसी के पुत्र चल्लवारु के अधिकार में था। पल्लिकोंडा ने नीतिबल का आश्रय लेकर काटमराजु को यलमंचि के सिंहासन पर बैठा दिया। चल्लवारु को यह सहन नहीं हुआ और उसने एक बड़ी सेना के साथ यलमंचि की ओर कूच कर दिया। फलत: दोनों ओर की सेनाओं के बीच ऐरगड्डुपाटी के मैदान में भयंकर युद्ध हुआ। महाभारत युद्ध की भांति इस युद्ध में भी अनेक अन्य राजाओं तथा प्रमुख वीरों ने भाग लिया और खेत रहे। इसे काटमराजु का युद्ध कहा जाता है और इसमें यादव कुल प्राय: नष्ट-भ्रष्ट हो गया।

ऐरगड्डुपाटी का युद्ध सौर सम्वत्सर की माघ बहुल चतुर्दशी को सोमवार के दिन प्रारम्भ हुआ और लगभग एक मास तक जारी रहा। मंगलवार फाल्गुन बहुल अमावस्या को समाप्त हुआ।

काटमराजु ने भक्तरन्ना को सहायता के लिए काशी संदेश भेजा, किन्तु युद्ध प्रारम्भ हो जाने पर भी उसके रणभूमि में न पहुंच पाने से उसे चिन्ता हुई। काटमराजु ने अपने मन की चिन्ता पल्लिकोंडा से कही। पल्लिकोंडा ने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि सम्भवत: भक्तरन्ना को युद्ध का समाचार नहीं मिल पाया है, अन्यथा वह अपने कनक रथ में सवार होकर अब तक धनुमुकोंडा अवश्य पहुंच गया होता।

काटमराजु ने एक लाख रणबांकुरे योद्धाओं को साथ लेकर रणभूमि को ओर प्रस्थान किया। इन योद्धाओं के हाथों में विभिन्न प्रकार के हथियार थे। काटमराजु के पास त्रिमूर्ति से वरदान में प्राप्त मुक्कम्मि कुतम्बू नामक अस्त्र था। रणवीर और सदा पदानयत उसके साथ था। जब यह वाहिनी रणभूमि को ओर जा रही थी तो आकाश में खड़े देवगण उन्हें अपने दिव्य-चक्षुओं से निहार रहे थे और उसका जय-जयकार कर रहे थे। चलने से पूर्व काटमराजु ने हनुमान जी के चिह्न से अंकित स्वर्ण का कवच पहना। उसने गुलदाउदी के फूलों का गुच्छा अपने हाथ में लिया। कटि में स्वर्ण की पेटी धारण की। सम्पेगा का तेल केशों में लगाकर उसने अपने केशों को कसकर बांधा। वक्ष पर कस्तूरी मलकर हरे रंग के नाखून का निशान बनाया। जैसे पक्षी अपने पंखों को फैलाकर उड़ते हैं; वैसे ही वह पवनवेग से उड़ते हुए जैसे चल पड़ा। योद्धागण रुद्राक्ष को माला गले में पहनकर अपने-अपने पद के अनुसार पंक्तिबद्ध होकर चलने लगे।

कट्टिरी हनुमंत काशवु वेणा
हनुमंत काशपयि हेमंत गुंडलू
छेसंति वंतुलु चलेगुच्चु, वेसि
कनक वड्डानम्बु कटरिभिद
मेलु तुम्मेदा रक्का मीरिना वन्ने
सम्पेगा नूनछे वम्पिंचि कुरूल्
वीरजड़ालपिलरी बेड़का पडुचु
मुडिचिरी गेदगुल मुंचुकोनियुंडा
फालमुना कस्तूरी वागुगा दिद्दी
पच्चल पुलिगोरू पतकमुल दालची
रुद्राक्ष सरनु धरजचि
वनागाविमदुल वरुस धरिमनचि

दूसरी ओर नलनन्ना रंगबिरंगे छत्रों से सुसज्जित रथों में सवार अपने योद्धाओं सहित झंडा लहराते हुए और अपनी गर्जना से तीनों लोकों को व्यथित करते हुए रणभूमि में निकल पड़ा। तत्काल दोनों पक्षों के बीच घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। अपने पक्ष के वीरों को प्रोत्साहित करने के लिए काटमराजु और नल्लसिद्धि भी रणभूमि में कूद पड़े और अपनी अद्भुत वीरता का प्रदर्शन करने लगे।

देखते-ही-देखते सारी भूमि शवों और घायलों से पट गई। कटे हुए मुंडों से वह ऐसी प्रतीत होती थी जैसे उसे मटकों से ढक लिया गया हो। कटे हुए चेहरों, सिरों तथा अन्य भागों से बहते हुए रक्त से सारी धरती गीली हो गई। शवों से कट-कटकर गिरे कानों, बांहों, उंगलियों तथा घुटनों के ढेर इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

चिनिकिता डोक्कालु चिदिकिन तलल्
पोस्व रक्तानं बडनि मोंडालु
चेक्किलु चेवलुन चेतुलु मरियु
मोकाटि चिपलु मुंचेति बेलु
तरच्मा रणमुन दललु पड़ियुंडे
गुम्मरि चेशिन कुंडल कुदुरू
गूचिनट्लु तललु गुडलयुंडे

काटमराजु साक्षात काल की भांति युद्ध में बिचर रहा था। उसने अपने कुंत आयुध से सिद्धिराजु पर प्रहार किया जिससे वह हत होकर रणभूमि में गिर पड़ा। उधर नल्लसिद्धि आयुधों के प्रहार से शरीर रक्तरंजित होने पर भी अद्भुत पराक्रम दिखाते हुए नल्लनन्ना पर वार किया। उसने काटमराजु को भी अनेक घाव पहुंचाए।

सिद्धिराजु के मुख्य सेनानायक शिकर्ल भीमन्ना का काटमराजु के सेनानायक पद्यराघव के साथ तुमुल युद्ध हुआ। लड़ते-लड़ते भीमन्ना मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा और पद्यराघव भी बाण के प्रहार से मारा गया।

नल्लसिद्धि के घायल होकर युद्ध से विमुख हो जाने पर उनका स्थान खड्ग तिक्कन्ना ने लिया। खड्ग तिक्कन्ना ने ब्राह्मण होते हुए भी अद्भुत शौर्य का परिचय दिया। तिक्कवा और ब्रह्म रुद्रय्या का द्वंद्व देखने ही योग्य था। उनकी तलवारों की टकराहट से जो आवाज हुई, उससे सारी पृथ्वी कांपने लगी। तिक्कना की तलवार के प्रहार से रुद्रय्या मरणासन्न होकर भूमि पर गिर पड़ा, किन्तु रुद्रय्या ने मरते-मरते भी तलवारों के भरपूर प्रहार से तिक्कन्ना का शीश धड़ से अलग कर दिया।

अघुडु सिकन्ना अग्नि चंदमुन
गदिसेनु कोपाग्नि कन्नुल तुरल
नर्दजिचि रुद्रनि अड्डान वेचे
पदि रुद्रडंत नावाटु, दप्पुकोने
गरवालु गकोनि कदिसे रुट्ंडु
विदि पड़िरिदरु वीर युद्धमुन
धरणि पै नोंडरु दीपं चु कोतु चु
लंघिचि वेनक्कु रागडिलनु चुनु
बाकुचु दूकुचु पेकि रेगुचुनु
दायिकिय नरकुच दाकि पोडुचुन
नुरवडितो वरिच पुरुवडि सेसि
कटपेट खंगखंग घनलु घललनुचु
मेरंपुवल मीठी मेरयुचु पिडुगु
चापुलवले गोप्पसडिनि न्रेयुचुनु
निर्विरु पोरिरि दुर्वारु लगुचु
तिक्कडु दिक्तुडं तेगव्रेय रुद्र
डक्कड चक्कलै अवनि पै बड़िये
पडुचुने रुद्रडापक खड्गधार
दडयक या मंत्रि तल लुनियवैये

युद्ध के अन्त में यादवों की विजय हुई। उनकी विजय पर हर्षित होकर हरिहर ने (विष्णु और शिव ने) देवलोक से उन पर पुष्प-वर्षा की।

काटमराजु ने भक्तरन्ना को विजय का समाचार देने के लिए अपने मंत्री पल्लिकोंडा तथा मुम्पय्या और पोचेय्या नामक वीरों को काशी भेजा। उसने सिद्धिराजु का शीश काट कर उसे पालेटी गंगा को समर्पित किया। साथ ही अपने अनुचरों को निर्देश दिया कि भक्तरन्ना के काशी से आगमन तक सभी शवों की सावधानी से रक्षा की जाए जिससे विधि-पूर्वक उनका संस्कार किया जा सके।

काटमराजु को उसके अनुयायी तथा प्रशंसक कृष्ण का अवतार मानते हैं। इस युद्ध में यद्यपि उसकी विजय हुई, तथापि यादवों की शक्ति भी अत्यन्त क्षीण हो गई।

देवी नागलबा

सोलहवीं शती का दूसरा दशक धीरे-धीरे समाप्ति की ओर था। दक्षिण भारत में विजय नगर राज्य का सूर्य अपनी पूरी प्रखरता से जगमगा रहा था। उस समय वहां की गद्दी पर कृष्णराय विराजमान था। बेलगांव का दुर्ग विजय नगर राज्य का ही अंग था। कृष्णराय ने उसके शासन और रक्षा का भार सौंपा हुआ था अपने एक विश्वस्त सेना नायक सालुव तिम्मनायक पर।

बेलगांव अपनी सामरिक स्थिति के कारण विजय नगर के शत्रुओं को ललचाई दृष्टि का निशाना बना हुआ था। पश्चिम में गोवा के पुर्तगाली शासक थे, उत्तर में बीजापुर के आदिलशाही सुलतान। कभी उस पर पश्चिम की ओर से हमला होता था, कभी उत्तर की ओर से। किन्तु कर्नाटकी वीरों के आगे उन्हें हर बार धूल चाटने को विवश होना पड़ता था। फिर भी वे अपने प्रयासों से बाज नहीं आ रहे थे। बार-बार मार खाकर भी अवसर मिलते ही दल-बल के साथ फिर दुर्ग पर चढ़ आते।

बात उन्हीं दिनों की है। बेलगांव के पास ही एक छोटा-सा गांव था कुंचनूर। कुंचनूर के मुखिया का नाम था केंचगोंड। केंचगोंड के एक ही पुत्र था रायगोंड। रायगोंड अत्यन्त सुन्दर था, एकदम कामदेव जैसा। कुंचनूर ही नहीं, आस-पास के गांवों की स्त्रियों के लिए भी उसकी सुन्दरता चर्चा का विषय बन गई थी।

हे कामनाथा पुरुष इव कपिल
मूंगलि बहड़ चेलुव
नाड़िनि म्यागिच नारेरेल्ला
मोडिल नितुं मातडुतारा

(कामदेव के समान सुन्दर इस बालक के बारे में सभी स्त्रियां चकित होकर बातें करती थीं।)

किन्तु यह सुन्दरता ही रायगोंड के लिए अभिशाप बन गई। एक तो इकलौता, दूसरे रूप का धनी। स्वभावत: उसका लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से हुआ। कहीं उसे किसी की कुदृष्टि न लग जाए अथवा कहीं चोट न आ जाए, इस डर से मां लक्कवे ने उसे न तो कभी व्यायामशाला में भेजा, न घुड़सवारी सिखाई, न भाला-तलवार चलाना सिखाया। उसे कटार तक पकड़ना नहीं आता था। सोलह वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी न वह कुछ लिख-पढ़ सका, न कोई उद्योग-धंधा सीख सका। खाने-पीने की घर में कमी नहीं थी। मां

उसे बहुत कम बाहर निकलने देती। भती रायगोंड के जीवन में एक नया मोड़ आया। घर में ही उसका मन लगाने के विचार से लक्कवे ने पति से परामर्श कर अपने बड़े भाई की पुत्री नागलवा से उसका विवाह कर दिया। रायगोंड जिस तरह कामदेव जैसा सुन्दर था, वैसे ही नागलवा रति जैसी अनिंद्य सुन्दरी थी :

हदिनारु वर्षद कन्ने यौएन सुसुनद
उन्नमथ स्तन गड़ेरडु वोतुतव
कणु मूग्नि कोने प्रज्ज्वलिसुतद

(वह सोलह वर्ष की कुंवारी कन्या थी। वस्त्रों के अन्दर से उसके उन्नत उरोजों के उभार दिखाई देते थे। जिसने भी इस युगल जोड़ी को देखा, वहीं ठगा-सा रह गया।)

गौने के बाद नागलबा सुसराल आई। चार भाइयों के बीच अकेली बहन। मायका था नागनूरू हिरहोले में। कलकल-नाद करते झरने के पार्श्व में बसा एक छोटा-सा गांव। गांव छोटा अवश्य था, लेकिन वहां के निवासी बड़े वीर और योद्धा थे। छोटे-छोटे बच्चे भी कुशलता से तलवार चलाना जानते थे। इसी वातावरण में पली थी हिरनी-सी नागलबा। सुसराल आने पर जब उसे पति के गुणों का पता चला तो उसे बड़ी निराशा हुई। वह क्षत्राणी थी, कायर पति को कैसे सहन करती। उसने रायगोंड को अपने शरीर का स्पर्श तक नहीं करने दिया।

इधर रायगोंड उसके रूप का दीवाना था। पत्नी के तिरस्कार से उसके मन की ज्वाला और भड़कने लगती, किन्तु नागलबा की इच्छा के विरुद्ध वह कुछ भी करने का साहस नहीं जुटा पाता। नागलबा अपने निश्चय पर अटल थी। वह रायगोंड को बार-बार धिक्कारती :

वाके पुट्टीदिरी क्षत्रिवरगि बुमियोडु
साकाहुते शौरव

(जब आपका आचरण क्षत्रियों जैसा बिल्कुल नहीं है तब आप क्षत्रिय कुल में पैदा ही क्यों हुए ?)

फलत: जैसे-जैसे रायगोंड का प्रेम बढ़ता गया, वैसे-वैसे उसकी दिनचर्या भी बदलती गई। वह दिनभर मौन बैठा रहता। न किसी से मिलता-जुलता, न कहीं आता-जाता। चेहरे पर सदा उदासी छाई रहती।

लक्कवे से उसकी दशा छिपी न रह सकी। एक दिन एकांत पाकर उसने नागलबा से कहा—"नागा, एक बात सच-सच बताएगी ?"

नागलबा शांत स्वर में बोली—"आपसे मैं झूठ क्यों बोलूंगी मांजी ?"

"तो यह बता कि रायगोंड को क्या हो गया है ?"

"क्या हो गया है मांजी ?"

"अनजान मत बन पगली । लक्कवे ने नागलबा के सिर पर स्नेह से हाथ फेरते हुए कहा । "देखता नहीं, कितना बदल गया है वह ?"

नागलबा मौन ही रही ।

कुछ क्षणों की प्रतीक्षा के बाद लक्कवे ने फिर कहा—"सच बता बेटी । इसमें छिपाने की क्या बात है ? फिर तूने तो मुझसे झूठ न बोलने की कसम खाई है ।"

नागलबा फिर भी मौन रही । उसने दोनों हाथों से अपना मुंह ढक लिया । सास ने अत्यन्त स्नेह से दुलारते हुए कहा—"सच-सच बता नागा, तेरे मन में क्या है ?"

नागलबा की आँखों में पानी भर आया । सास के आंचल में मुंह छिपाकर वह फूट पड़ी । सास ने उसके आंसू पोंछते हुए कहा—"नागा, रायगोंड तुझे बहुत प्यार करता है न ?"

नागलबा के कपोल लाल हो उठे ।

"तू भी उसे उतना ही प्यार करती है न ?"

लक्कवे के इस प्रश्न को सुन नागलबा ने शरमा कर सिर झुका लिया, फिर कुछ क्षणों के मौन के बाद बोली—"आप इतना ही आग्रह कर रही हैं तो बता देती हूं मांजी। मैंने प्रण किया है कि जब तक वह वीरोचित गुण नहीं अपनाएंगे, रणबांकुरे नहीं बनेंगे, मैं उन्हें पति रूप में स्वीकार नहीं कर सकूंगी । मैं क्षत्राणी हूं मां, एक कायर को अपना शरीर समर्पित नहीं कर सकती ।"

नागलबा की यह बातें रायगोंड के कानों तक भी पहुंची । वह शर्म से गड़-सा गया । किन्तु शीघ्र ही उसने अपने को संयत कर लिया । अगले दिन से ही उसने नियम से व्यायाम-शाला जाना शुरू कर दिया । धीरे-धीरे वह घुड़सवारी करना, तलवार-भाला चलाना आदि सब सीख गया । नागलबा का प्रण पूरा हुआ । पति को इस नए रूप में पाकर वह फूली न समाई । जिस दिन रायगोंड ने अपनी सैनिक शिक्षा पूरी की, उसी दिन मानो नागलबा से उसका वास्तविक विवाह सम्पन्न हुआ । उसी दिन उनकी सुहागरात मनी ।

बन्न बन्नदनोगे विगिइछ उडि गंटु
इन्नु सड़िलिस बेगो तड़माड़बेड़ा
रन्नद मूंगति वोलेएड़ा नीनिट्टुकोडु कञ्जडिवड़ग मुखवानोड़िको
नादु हेड़तिनि प्राण सदाति केड़े

(रंगीन साड़ी की चुन्नटें ढीली करो। अब देर मत करो। सोने की नथ और कान की वाली पहनकर शीशे में अपना चेहरा देखो ! प्राणप्रिये, मैं तुम्हें निहार रहा हूं।

दूसरे वर्ष दिवाली के अवसर पर नागलबा जब मायके से पुन: सुसराल लौटी तो उसकी गोद में चांद-सा एक बालक भी था। रायगोंड पत्नी और पुत्र को देखकर फूला न समाया।

> मुत्तिना कुंचिगेंगे बत्ती कुसुरनु तेगेटु
> सुत्तु मणिकेंच्चि हेनेदिरुवा होदिकेयोड्डु
> बसेलेब चन्द्र कूसेनो

(जैसे आकाश को चादर के ऊपर मोतियों की कलियों से छिड़काव किया गया हो। उसके ऊपर नागलबा की गोद में चांद-जैसा वालक सुभाषित हो रहा था।)

किन्तु विधि का विधान कुछ और था। कृष्ण-पक्ष-चतुर्दशी के दिन सवेरे पालुव तिम्मनायक का दूत आ पहुंचा। बीजापुर का सुलतान असद खां एक बड़ी सेना के साथ बेलगांव दुर्ग पर चढ़ाई करने के लिए बढ़ा आ रहा था। विजय नगर को दुर्ग की रक्षा के लिए, अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए एक-एक युवक को आवश्यकता थी।

जन्मभूमि की पुकार खाली कैसे जाती ? चारों आर से उत्साही रणबांकुरे युवकों की भीड़ उमड़ पड़ी। वीरों के भुजदंड और शरीर फड़कने लगे।

> निम्न रट्ट होइ माडी कट्टी गट्टी
> निवुरणद वोड़ग मरदा मैकट्ट रिट्ट माड़ सिट्ट दिट्ट
> निम्म उग्र ऐण्टु उरदा

(युद्ध करने के लिए वीरों को बांहें फड़कने लगीं। शरीर क्रोध से कांपने लगे।)

नागलबा ने भी बड़े उत्साह से अपने पति को सजाया। उस समय उसका हृदय बल्लियों उछल रहा था। माता-पिता ने आशीर्वाद दे अपने लाल को विदा किया। नागलबा ने पति की आरती उतारी।

बेलगांव-विजय का स्वप्न मन में संजोए, अपनी विशाल वाहिनी के साथ आगे बढ़ते असद खां को विजय नगर के वीरों ने मार्ग में ही रोक लिया। तत्काल घनघोर संग्राम छिड़ गया।

> होडिसितु रणकंब जगड़ आएब
> लड़ाई आतो घूमसान
> वोदरि, कुदरि, केररि होडितो
> वेदरि बृमांड अदरि आकाश
> मथ्यु लोक दोड्डु जनिसि

(रणभेरी बजने लगी। घमासान युद्ध होने लगा। क्रोध से भरकर योद्धा तीव्र युद्ध करने लगे। लगता था जैसे धरती और आसमान हिल रहे हों।)

विजय नगर के एक-एक योद्धा ने अपने मन में मातृभूमि के लिए मर-मिटने की ठान रखी थी। उन्हें अपने प्राणों का मोह न था। वे जमकर लड़े। भला उनसे कौन जीत सकता था? स्वभावतः विजयश्री ने उनके गले में जयमाला डाली। असद खां अपनी सेना-सहित भाग खड़ा हुआ। लेकिन विजय नगर के वीरों को भी इस युद्ध में काफी क्षति उठानी पड़ी।

विजय का समाचार जंगल की आग की भांति तुरंत गांव-गांव में फैल गया। लोगों के हर्ष की सीमा न रही। समाचार कुंचनूरु भी पहुंचा। नागलबा सुनकर हर्ष-विभोर हो उठी। साथ ही उसके नारी-हृदय में अपने पति की कुशलता के बारे में एक अज्ञात चिन्ता ने घर कर लिया। वह बड़ी आतुरता से पति के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी।

सारे गांव के साथ कैंचेगोंड ने भी अपने घर को सजाया। बेटा युद्ध भूमि से विजयी होकर लौट रहा था जो!

उत्सुक पलकों ने प्रतीक्षा की घड़ियां किस प्रकार गुजारीं, पता तक न चला। तभी नवरात्र के दिन तेजी से घोड़ा दौड़ाता एक घुड़सवार कैंचेगोंड के मकान पर रुका। उसने कैंचगोंड के आशंका से कम्पित हाथों में एक पत्र थमा दिया। पत्र सालुव तिम्मनायक ने भेजा था। कैंचगोंड ने पत्र खोला, उसका हृदय बुरी तरह से धकड़ने लगा। उसकी आंखें बड़ी कठिनाई से कागज पर अंकित पंक्तियों को पढ़ पा रही थीं—

"भगवान् की असीम अनुकम्पा से कुंचनूरु के वीरों ने अपने अपूर्व शौर्य का परिचय दे, हमारी लाज रख ली। कुंचनूरु की भूमि वास्तव में धन्य है जिसने ऐसे श्रेष्ठ वीर पैदा किए। उनमें भी आपके पुत्र रायगोंड का पराक्रम अद्भुत था। उस युवक ने जिस साहस और वीरता का परिचत दिया, वह अविस्मरणीय है। पर भाग्य को सम्भवतः हमारा इतना सुख सहन न हो सका। वीर रायगोंड जिस समय प्राणों की तनिक चिन्ता न कर शत्रुओं से घिरा अकेला युद्ध कर रहा था, कायरों ने पीछे से आक्रमण कर उसे हमसे सदा के लिए अलग कर दिया……।"

कैंचेगोंड आगे न पढ़ सका। पत्र उसके हाथ से छूट गया और वह वहीं बेसुध होकर गिर पड़ा। क्षण मात्र में ही यह दुखद समाचार सारे गांव में फैल गया। विजयोत्सव का आनंद शोक के वातावरण में बदल गया। लक्कवे छाती पीट-पीटकर रोने लगी। नागलबा आघात से स्तब्ध रह गई। उसकी आँखों के आंसू भी सूख गए वह बावली-सी बैठी रही।

पर शीघ्र उसने अपने को संयत कर लिया और सास-ससुर को ढांढस बंधाने लगी। एक वीर क्षत्राणी की भांति उसने अपना कर्त्तव्य सुनिश्चित कर लिया था।

इसके ठीक पांचवें दिन नागलबा ने स्वेच्छा से मृत्यु का वरण कर अपने पति के मार्ग का अनुगमन किया। उसके पति-प्रेम की चर्चा चारों ओर फैल गई। चांदी के हाथ में उसके कंगन को पहनाकर उसकी पूजा की जाने लगी। उसे देवी का अवतार माना जाने लगा।

बदड़ो पतिव्रता हेपु सुंदरी
स्वर्ग, मन्य, पातड़
हुडुकिदरु सिगटु इन्थहिन्नो

(ऐसा लगता था जैसे मृत्युलोक में देवी ने पतिव्रता के रूप में स्वयं ही अवतार लिया हो। स्वर्ग, मृत्यु और पाताल तीनों लोकों में उसकी तुलना नहीं हो सकती।)

हेमूं कालानी

वतन जी खिजमत जी मरी वेंदा
दुनिया में अमर नालो करे वेंदा
अहो न पुच्छो त मरी केडान्ह वेंदा
हू जेडान्ह मोकली दा तेडान्ह वेंदा

(देश की सेवा करते हुए यदि वे मर भी गए तो भी वे दुनिया में अपना नाम अमर कर जाएंगे। आप यह न पूछें कि मरने के बाद वे कहां चले गए। उसने, अर्थात् ईश्वर ने, उन्हें जहां भेज दिया, वे वहीं चले गए।)

ऐसा ही एक वीर था सिन्ध का हेमूं कालानी। उसे सिन्ध का भगतसिंह भी कहते हैं।

23 मई 1923 को पुराने सक्खर में पेसूमल कालानी के घर उनकी पत्नी जेठी बाई के गर्भ से एक बालक ने जन्म लिया। बालक का नाम रखा गया हेमूं। हेमूं के नाना दीवान हरदासमल गुरसिंहानी नवाबशाह जिले के और सिन्ध के भी नामी फौजदारी के वकीलों में थे।

होनहार पूत अपने पांव पालने में ही दिखा देते हैं। हेमूं इसका अपवाद नहीं था। वह समय देश के लिए भारी उथल-पुथल का था। गांधी जी के हाथ में स्वाधीनता संग्राम की कमान आ जाने के बाद सारे देश में एक नई चेतना, एक नई जागृति आ गई थी। सन् 1922 के असहयोग आन्दोलन में हजारों छात्र अपने स्कूलों और कालेजों से बाहर निकल आए थे। सरकारी कर्मचारियों ने अपनी नौकरी छोड़ दी और वकीलों ने अदालतों में जाना बंद कर दिया। चम्पारन सत्याग्रह ने किसानों को अपनी शक्ति का नया अहसास करा दिया था। ऐसा लगता था कि अंग्रेजी सरकार के पांव उखड़ने वाले ही हैं। अंग्रेज अफसरों ने स्वदेश जाने के लिए अपने बोरिया-बिस्तर बांध लिए थे। तभी चौरी-चौरा का दुखद कांड हो गया। गांधी जी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। चौरी-चौरा थाने की आग ने भारत-वीरों के दिल में धधकती स्वाधीनता की आग को दबा दिया।

लेकिन आग दबी ही थी, बुझी नहीं थी। वह अन्दर-ही-अन्दर सुलगती रही और भड़क उठने की प्रतीक्षा करती रही। यह अवसर आया 1930 में सविनय आंदोलन के रूप में।

इस बीच बालक हेमूं मां से देश-प्रेम की लोरियां सुन-सुनकर भविष्य की अपनी भूमिका के लिए तैयार हो चुका था। मां ने लोरियों में ही उससे कह दिया था—बेटा, जब तुम बड़े होकर भारत मां को आजाद कराओगे, तभी मेरा सिर गर्व से ऊंचा होगा।

आठ वर्ष की छोटी अवस्था में ही हेमू इस लोरी के शब्दों का अर्थ अच्छी तरह समझ चुका था। मुहल्ले के अपने जैसे छोटे बच्चों को इकट्ठा कर उसने एक वानर सेना बना ली। यह वानर सेना हाथ में छोटे-छोटे तिरंगे झंडे लेकर सड़कों पर निकल पड़ती और आजादी का तराना गाती चलती—

कौमी झंडो फरके फरफर
दुस्मन जी छाती धरके थर-थर
आयो सुभ जमानो, चलो शेर जवानों।

हेमूं अपनी वानर-सेना का नेता था। उसकी प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत उसका चाचा डा० मंघाराम कालानी था। डा० मंघाराम कालानी ने हाई स्कूल और कालेज के छात्रों को जोड़कर एक स्वराज सेना का गठन किया था। उस समय इन कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों की आयु 19-20 से 25 वर्ष तक की हुआ करती थी। डा० मंघाराम की नजर अपने कुलदीपक पर भी पड़ी और 14-15 वर्ष की आयु का होते ही उन्होंने उसे स्वराज सेना में भर्ती कर लिया। हेमूं को कसरत करने का भी बहुत शौक था। वह नित्य अखाड़े में जाकर दंड-बैठक लगाता, दौड़ने में कोई साथी उसका मुकाबला नहीं कर पाता था। स्कूल की खेल-प्रतियोगिताओं में हेमं ने अनेक इनाम भी जीते।

सक्खर शहर जे विद्यार्थिन, नौजवानन
सौराज्य सेना जो रहनुमा हुयो
कसरती जवान, शरीर जो सुंदर, सुहणो, संडोल,
दिमाग जो चुस्त एं
दिल जो दिलेर हो
भारतमाता जे गुलामिए जे जंजीरन
तोड़न लाय, बेपनाह् जज्बात हुयस
सिर हथेली से रखी,
जान जी बाजी लगाएंण लाय तैयार

हेमूं का वानर सेना और स्वराज सेना का काम प्रभात फेरियां निकालना, शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करना और विलायती कपड़ों का बायकाट करने में भाग लेना था। महिलाएं जोश और खुशी से उन्हें जरी और कमरवाब के अपने कीमती विलायती कपड़े दे देतीं और सिन्धु नदी के तट पर रोज हजारों रुपए के विलायती कपड़ों की होली जलाई जाती। हेमूं इस काम में इतनी अधिक रुचि लेता कि उसे खाने तक की सुध नहीं रहती।

हेमूं इस वातावरण में जवान हो रहा था, तभी आया सन् बयालीस का भारत छोड़ो आंदोलन। अंग्रेजी हुकूमत से अन्तिम लड़ाई लड़ने के लिए देश भर में नवयुवकों ने 'करो या मरो' की शपथ ली। विदेशी हुकूमत ने दमन के द्वारा उसका जवाब दिया।

अंग्रेजन पहूजे हुकूमत कायम रखन लाय
भारतवासिन मत्था जुल्म जो छोड़ो तेज कयो
हजारें हिंदवासी जेलन में ढूंसा थला
सिन्ध में मार्शल-ला चालू हुयो

(अंग्रेजों ने अपनी हुकूमत कायम रखने के लिए भारतवासियों पर जुल्मों का घोड़ा तेज कर दिया। हजारों देशवासी जेल में ठूंस दिए गए। सिन्ध में मार्शल-ला लागू कर दिया गया।)

इन अत्याचारों ने नवयुवकों को और भी भड़का दिया। एक प्रकार से देश में क्रांति-जैसी स्थिति पैदा हो गई। हेमूं भी अंग्रेजी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए जी-जान से जुट गया। उसके साथ बड़ी संख्या में देश के दीवाने नौजवान आ जुटे। उनकी गुप्त मंत्रणाएं होती, थानों पर हमला करने, रेल की पटरियां उखाड़ने और सरकार के काम को अस्त-व्यस्त करने की योजनाएं बनाई जाती। अंग्रेजों ने उन्हें कुचलने के लिए नई कुमुक मंगाई।

एक दिन हेमूं और उसके साथियों को खबर मिली कि गोरी फौज और गोला-बारूद से लदी एक रेलगाड़ी सक्खर होकर क्वेटा की ओर जा रही है। उन्होंने रेल की पटरी उखाड़कर उस गाड़ी को गिराने का निश्चय किया।

पुराने सक्खर में श्मशान के पास जमीन के नीचे एक सुरंग में इंकलाबी जवानों की बैठक हुई। वहां सबके सामने यह निश्चय पढ़ कर सुनाया गया। यह भी कहा गया कि यह अत्यन्त जोखिम का काम है। पकड़े जाने पर उसका अंजाम मृत्यु भी हो सकती है। इस काम को वही हाथ में ले, जो पकड़ा जाने पर किसी साथी या पार्टी का नाम न बताए और सारा दोष अपने सिर पर ले ले। इस कठोर शर्त को सुनकर अधिकांश नौजवान मौन बैठे रहे। यह देख कर हेमूं को बड़ी लज्जा आई और उसने इस काम को पूरा करने का उत्तर-दायित्व अपने सिर पर ले लिया।

जिस रात रेलगाड़ी उस मार्ग से गुजरने वाली थी, उस रात हथौड़ी और पाना लेकर हेमूं फिशप्लेट उखाड़ने के लिए पटरी पर जा पहुंचा। दुर्भाग्य से वहां पहरा दे रहे एक बारहमासी की नजर उस पर पड़ गई। बस, वही हुआ जिसकी आशंका थी। हेमूं पकड़ लिया गया। उस समय भी हेमूं के माथे पर एक भी शिकन नहीं थी। वह सीना फुलाए अपने पकड़ने वालों के साथ चला गया।

हेमूं पकड़्यो
पकड़ो त छाथ्यो ?
हिणजी कदम में मस्तानी चाल रही
छाती फूकयल रही
गाटऊंचो रहयो
भारतमाता जे आजादिय लाय
हिक जान ते छाँ, हजारन जान कुरबाँ

(हेमूं पकड़ा गया। पकड़ा गया तो क्या हुआ ? उसकी चाल में मस्तानापन था। छाती फूल रही थी। सिर ऊंचा था। भारत माता की आजादी के लिए एक जान तो क्या, ऐसी हजारों जानें न्यौछावर हों।)

हेमूं ने अपनी प्रतिज्ञा निभाई। अधिकारियों ने उससे उसके साथियों के नाम उगलवाने के हर प्रकार से प्रयास किए किन्तु हेमूं टस-से-मस नहीं हुआ। वह यही कहता रहा कि सारा काम मेरा है और इसमें मेरे साथी ये हथौड़ा तथा पाना ही हैं।

फौजी अदालत में हेमूं पर मुकदमा चला। सक्खर की फौजी अदालत ने उसे दस वर्ष के कारावास की सजा सुनाई। इसे मंजूरी के लिए हैदराबाद (सिन्ध) हैड क्वार्टर के गोरे कमांडर रिचर्डसन के पास भेजा गया। वह हेमूं से पहले से ही खार खाए बैठा था। सजा कम करने के स्थान पर उसने हेमूं को फांसी की सजा सुनाई। यह फैसला 29 दिसम्बर 1942 को सुनाया गया। इससे सारे सिन्ध में रोष की लहर फैल गई। उसके विरुद्ध अपील की गई। स्वामी हरनाम दास, साधु वासवानी, जमशेद मेहता जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस सजा को रुकवाने का प्रयास किया। पीरजादा अब्दुस्सत्तार, जो बाद में पाकिस्तान के खाद्य मंत्री बने, दिल्ली जाकर वाइसराय से भी मिले, लेकिन उनके प्रयत्नों का कोई फल नहीं निकला। 29 जनवरी 1943 फांसी की तिथि निश्चित कर दी गई।

19 वर्षीय हेमूं ने इस सबको खेल के रूप में लिया। शाह अब्दुल लतीफ के शब्दों में 'सूरी जेंजी सेज मरण तिनी मुशाहिदो' (जो सूली को ही अपनी सेज समझता है, उसके लिए मृत्यु एक पर्व है।)

मृत्यु को निकट जानकर भी हेमूं की दिनचर्या में कोई अन्तर नहीं आया। वह अपनी कालकोठरी में ही नित्य दंड-बैठक लगाता। फांसी के दिन तक जेल में उसका वजन सात पौंड बढ़ गया था।

फांसी से पूर्व हेमूं से उसकी अंतिम इच्छा पूछी गई। हेमूं बोला, जब मुझे फांसी लगाई जाए तो सब मिलकर 'इंकलाब जिन्दाबाद', 'हिन्दुस्तान आजाद', 'भारत माता की जय' बोलें।

अंग्रेज हाकिमन, इन वीर खां, फांसिय वक्त
खांउस संदस आखरी मंशा पुच्छी
फांसी खांउग सब मूसा गज्जी चो
इंकलाब जिन्दाबाद !
हिन्दुस्तान आजाद
भारतमाता की जय

अफसर भी वीर था। वह हेमूं की अन्तिम इच्छा पूरी करने से इंकार न कर सका। आजादी के नारों की गूंज के साथ यह वीर हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर भूल गया और भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद की श्रेणी में अपना नाम लिखा लिया। सिन्ध उस पर गर्व कर सकता है।

अज्ज सिन्धन लाय
जिएं मोहन जोदरो
सिन्धी सभ्यता जों
आला यादगार
फख जो वायस आहे
एं हमेशा याद रहंगो
उन रीत अज्ज सिन्धिन लाय
अमर शहीद हेमूं कालानी जो नालो
पख जो वायस आहे

(आज सिन्ध के लिए जिस प्रकार मोहन जोदड़ो सिन्धु सभ्यता का शानदार स्मारक और गर्व का कारण है, उसी प्रकार सिन्धियों के लिए अमर शहीद हेमूं कालानी का नाम गर्व का कारण है।)

हेमूं कालानी की स्मृति में बम्बई में चेम्बूर में एक स्मारक का शिलान्यास किया गया है। हेमूं कालानी की माता जेठीबाई को वीरमाता और सिन्धुमाता की उपाधि से विभूषित किया गया है। सच है, शहीदों का सम्मान करके ही देश अपना सम्मान बढ़ा सकता है।

शहीदो ओहादे बार-बार पहुंचन असांझा सलाम
सूर्य ने सेज ते उहाने कयो आ विसराम

(शहीदों, आपको बार-बार हमारा सलाम पहुंचे। आपने मृत्यु की सेज को ही अपना विश्राम-स्थल बना लिया है।)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार